विष-वृक्ष

बंकिम चन्द्र

विष वृक्ष

बकिम चन्द्र

पल्लव प्रकाशन दिल्ली

नगेन्द्रदत्त नौका पर जा रहे थे। ज्येष्ठ का महीना था और तूफानी हवा चल रही थी। उनकी पत्नी सूर्यमुखी ने अपनी कसम देकर कह दिया था, 'तूफान में नाव न लेना। तूफान आए तो नौका किनारे लगा देना और नाव से उतर जाना।' पत्नी की बात स्वीकार करके नगेन्द्र नौका पर सवार हुए थे। उन्हें भय था कि कहीं वह जाने को मना न कर दे। उन्हें कलकत्ता जाना आवश्यक था, क्योंकि कई काम रुके हुए थे।

नगेन्द्रदत्त धनाढ्य व्यक्ति थे। उनकी बहुत बड़ी जमींदारी थी। वह गोविन्दपुर के रहने वाले थे। नगेन्द्र बाबू की आयु केवल तीस वर्ष थी। वह अपनी नौका पर जा रहे थे। पहिले दो दिन निर्विघ्न बीत गए। तीसरे दिन तूफान आया। नदी का पानी हवा में नाचने लगा। उसमें भंवर से बुलबुले पड़ने लगे। पानी अशान्त हो उठा। नदी के किनारे ग्वाले गौ चरा रहे थे। एक आदमी वृक्ष के नीचे बैठा गाना गा रहा था। किसान हल चला रहे थे। घाट पर कृषकों की स्त्रियाँ स्नान कर रही थीं। युवतियाँ घूंघट खींचकर डुबकी लगा रही थीं। बच्चे चिल्ला रहे थे। वे औरों पर पानी के छींटे उड़ा रहे थे। नारियल के वृक्ष पर चीलह बैठकर चारों ओर देख रही थी। पनडुब्बी डुबकी लगाती फिरती थी। अन्य बहुत से पक्षी हलके-हलके उड़ते फिरते थे। नाव खटर खटर चली जा रही थी।

आकाश में बादल उठे और आकाश ढक गया। नदी का पानी काला हो गया। वृक्षों की चोटियाँ झुक गईं। बगुले उड़े और नदी निस्पन्द हो गई। नगेन्द्र नाव वाले से बोले 'नाव किनारे ले चलो।' मल्लाह नमाज पढ़ रहा था। उसने उनकी बात का कोई उत्तर नहीं दिया। नमाज

समाप्त होने पर वह बोला, "कोई भय नहीं है हुजूर! आप बेफिक्र रहें।" किनारा निकट ही था। शीघ्र नाव किनारे लग गई। मल्लाहों ने नीचे उतरकर नाव बांध दी।

तूफान कुछ तेज हो गया। अंधड़ ने किनारे के पेड़-पौधों के साथ महायुद्ध आरम्भ किया। पानी में लहरें उठने लगीं। पानी आंधी के कंधे पर चढ़कर तूफान मचाने लगा। वृक्षों की चोटियां झुक गईं। आंधी ने लताओं को नोच डाला, फूल कुचल दिए। नदी के पानी ने उत्पात मचा डाला।

नगेन्द्र सोच रहे थे कि यदि वह नाव से नीचे उतरते हैं, तो नाविक उन्हें कापुरुष समझेगा और यदि नहीं उतरते तो सूर्यमुखी के सामने मिथ्यावादी होना पड़ेगा। रहमत मल्लाह आगे आकर बोला 'हुजूर, पुरानी लकड़ी है, क्या जाने क्या हो? आंधी बढ़ने पर नाव से नीचे उतरना ही अच्छा है। लाचार नगेन्द्र नीचे उतर पड़े।

निराश्रित नदी किनारे खड़े रहना असाध्य था। इसलिए आश्रय की खोज में वह गांव की ओर चल पड़े। वहां से गांव कुछ दूरी पर था। नगेन्द्र पैदल ही दलदली जमीन पर चले। पानी रुका, आंधी भी कम हुई परन्तु आकाश मेघों से पूर्ण था। रात को फिर आंधी-पानी आने की सम्भावना थी।

चारों ओर अंधकार छा गया। गांव, मकान, मैदान, मार्ग कुछ दिखाई नहीं देते थे। केवल जंगली वृक्ष जुगनुओं की माला से दम दमा रहे थे। धीरे धीरे नगेन्द्र को दूर पर कुछ प्रकाश दिखाई दिया। पानी बरसने लगा था। वह उसी प्रकाश की ओर बढ़े। वह बड़े कष्ट से वहां पहुंचे तो देखा ईंटों के बने एक पुराने घर से प्रकाश निकल रहा था। मकान का द्वार खुला था। नगेन्द्र ने नौकर को बाहर छोड़ स्वयं घर में प्रवेश किया। घर की दशा बहुत भयानक थी।

मकान साधारण नहीं था परन्तु अभावग्रस्त था। एक कोठरी में प्रकाश था। नगेन्द्र ने उसी में प्रवेश किया। उन्होंने देखा कि वहां दरिद्रता अपना मुंह बाए खान का खड़ी थी।

कोठरी में एक खाट बिछी थी, जिस पर एक रुग्ण व्यक्ति लेटा था

और उसके किनारे एक युवती बैठी थी।

नगेन्द्र दरवाजे पर खड़े होकर उसके मुह से निकली दुखभरी कहानी सुनने लगे। वे दोनों, वृद्ध और बालिका, एक बड़े परिवार के शेष दो प्राणी थे। एक दिन वे धनवान थे, नौकर-चाकर, दास-दासी सब कुछ था। धीरे-धीरे सब-कुछ चला गया। कोई न रहा, केवल वृद्ध और वह बालिका रह गए। वे ही एक-दूसरे के लिए एकमात्र उपाय थे। कुन्दनन्दिनी की आयु, विवाह की उम्र से आगे बढ गई थी परन्तु पिता चेष्टा करके भी जैसे किसी के हाथ समर्पण न कर सके थे। साथ ही उसके विवाह की बात आने से वृद्ध सोचते कि यदि वह चली गई तो वह किसके सहारे जिएगे। उन्हे इस बात की याद न आती थी कि जिस दिन वह इस दुनिया से उठ जाएगे उस दिन कुन्द कहा जाएगी। आज यमदूत उनकी शय्या के पास खड़े थे। कुन्द सोच रही थी कि अब उसका क्या होगा।

इस समय वृद्ध की आखो से आसू बह रहे थे। उसके सिरहाने प्रस्तर-मूर्ति की भाति तेरह वर्ष की बालिका स्थिर दृष्टि से पिता के मुह की ओर देख रही थी। धीरे धीरे वृद्ध की बातें अस्पष्ट होने लगी। सास गले मे रुक गई और आखें निस्तेज हो गई। उस कोठरी मे कुन्दनन्दिनी अकेली पिता की मृत देह के पास बैठी रही। घोर अधकार था। बाहर वर्षा हो रही थी। वायु रह रह कर झकोरे दे रही थी। टूटे मकान की किवाडिया खडखडा रही थी। उस समय हवा के तेज झोके से दीपक बुझ गया। नगेन्द्र चुपचाप, पैर पीछे हटाकर कोठरी से बाहर निकल आए।

२ •

कुन्द चिल्लाई, "पिताजी!" किसी ने कोई उत्तर न दिया। कुन्द के मन मे आया कि शायद उसके पिताजी सो गए, फिर सोचा मर गए।

कुन्द फिर बोल न सकी, सोच-समझ न सकी। दिन-रात के जगने और क्लेश से वह विक्षिप्त-सी हो गई थी। हाथ मे ताड का पखा लिए वह जमीन पर एक ओर को ढुलक पडी।

उसने एक स्वप्न देखा। स्वच्छ चादनी रात थी। आकाश स्वच्छ नीले रग का था। नीले आकाश मे बहुत बडे चन्द्रमा का विकास हुआ। कुन्द ने इतना बडा चन्द्रमा पहिले कभी नही देखा था। उसकी दीप्ति बहुत स्पष्ट थी। उसी समय चन्द्र-मण्डल मे कुन्द ने एक अपूर्व ज्योतिमयी देवी-मूर्ति देखी। वह ज्योतिमयी मूर्ति चन्द्र-मण्डल को छोडकर धीरे धीरे नीचे उतर रही थी। फिर चन्द्र मण्डल शीतल रश्मि छितराता हुआ कुन्दनन्दिनी के मस्तक पर आ गया। कुन्द ने देखा कि वह मण्डल के बीच सुशोभित थी। धीरे धीरे उस देवी ने स्त्री का रूप धारण कर लिया। उसके ओठो पर हसी खिल रही थी। कुन्द ने भय और आनन्द से देखा कि वह उसकी बहुत दिन की मरी हुई माता थी। उसने कुन्द को जमीन से उठाकर अपनी गोद मे ले लिया। कुन्द ने बहुत दिन बाद 'मा' कहकर पुकारा। उसने कुन्द का मुह चूम कर कहा, 'बेटी, तूने बहुत दुख पाया है और अभी तू बहुत दुख पाएगी। तू उस दुख को न सह सकेगी। अब तू यहा न रह। चल, मेरे साथ चल।' कुन्द ने उत्तर दिया 'कहा चलू मा ?' कुन्द की माता ने ऊपर की ओर सकेत करके चमकते तारो को दिखाकर कहा, 'उस देश मे।' कुन्द ने तारो को देखकर कहा 'मुझमे इतनी शक्ति नही है मा।' यह सुनकर मा के मुख मण्डल पर अप्रसन्नता छा गई। उसने गम्भीर स्वर मे कहा, 'बेटी! तुम्हारी जो इच्छा हो वह करो। मेरे साथ चलती तो अच्छा होता। इस समय न चलेगी तो बाद मे तू तारो की ओर देखकर वहा आने के लिए कातर होगी। मैं फिर एक बार तुझसे मिलूगी। जब तू दुखी होकर मुझे याद करके रोएगी तो मैं आऊगी। तब तू मेरे साथ चलना। देख मैं तुझे दो मनुष्य मूर्तिया दिखाती हू। ये दो मनुष्य ससार मे तुम्हारे शुभाशुभ के कारण होगे। इन्हे देखते ही विषधर के समान इनसे बचना। जिस राह से ये जाए, उस राह को त्याग देना।'

ज्योतिमयी ने आकाश की ओर सकेत किया। कुन्द ने उसके सकेत

पर एक पुरुष-आकृति देखी। वह व्यक्ति महापुरुष सा प्रतीत होता था। धीरे धीरे वह विलीन हो गया। मा बोली इनके सुन्दर रूप को देखकर भ्रम मे न आ जाना। यह तुम्हारे लिये अमगल के कारण होंगे। इन्हे सप समझना। उसके बाद कुन्द ने वहा एक उज्ज्वल श्यामागी युवती को देखा। कुन्द की माता ने कहा, यह राक्षसी है। इसके जाल मे न फसना।'

तभी आकाश अन्धकारमय हो उठा। चन्द्र मण्डल डूब गया। उसी के साथ उसके अन्दर तेजोमयी भी विलीन हो गई। कुन्द की भी नीद खुल गई।

इस गाव का नाम झुमझुमपुर था। नगेन्द्र ने ग्राम मे जाकर यह सूचना दी। उनके कहने मे गाव के आदमी मत सस्कार का आयोजन करने लगे। एक पडोसिन कुन्द के पास रही। कुन्द रो रही थी। सवेरे पडोसिन अपने घर चली गई। कुन्द को धीरज बधाने के लिए उसने अपनी कन्या चम्पा को भेज दिया। चम्पा कुन्द की ही आयु की थी और उसके साथ खेली थी।

चम्पा ने कुन्द से भाति भाति की बातें की। उसे धीरज बधाया। परन्तु उसने देखा कि कुन्द कुछ सुनती ही नही थी। वह आकाश पर देख रही थी। चम्पा ने पूछा, 'तुम आकाश पर क्या देख रही हो ?'

'आकाश से कल मा आई थी। उन्होने मुझे अपने पास बुलाया था। मेरी जाने कैसी बुद्धि हुई कि मैं नही गई। अब सोच रही हू कि चली जाती तो अच्छा होता। वह अब आए तो मैं चली जाऊ। मैं आकाश मे अपनी मा को देख रही हू।'

'मरा मनुष्य भी कही फिर आता है ?'

तब कुन्द ने स्वप्न का सब हाल सुनाया। वह सुनकर चम्पा विस्मित होकर बोली, 'तुमने जिस पुरुष और औरत को देखा, उन्हे पहिचानती हो ?'

'नही उन्हे मैंने पहिले कभी नही देखा। बहुत सुन्दर पुरुष था।'

नगेन्द्र ने सवेरे गाव के आदमियो से पूछा, 'इस कन्या का क्या होगा ? यह कहा रहेगी ? इसका कौन है ?' गाव वालो ने कहा, 'इसका

कोई ठिकाना नही है। इसका कोई नही है। नगेन्द्र बोले, 'तुम म स काइ इसका विवाह कर ता, सब मैं दूगा।'

नगन्द्र रुपए फॅक दत तो शायद कितन ही आदमी उनकी बात का मान लेते और नगन्द्र के चले जाने पर कुन्द का घर से निकाल दत या दासी बना लेते, परन्तु नगन्द्र न वैसी मूर्खता नही की।

एक आदमी बोला श्याम बाजार म इसकी एक मौसा है। विनाद घाष इसके मौसा है। आप कलकत्ता जा रह हैं, इसे अपन साथ लेजाकर उनके यहा पहुचा दें तो इसका ठिकाना हो जाएगा।'

नगन्द्र ने स्वीकार कर कुन्द को बु या। चम्पा कुन्द को अपने साथ ले आइ। नगन्द्र का दखकर कुन्द स म्भ सी खडी रह गई। वह आग पैर न बढा सकी। वह विस्मय से द्र की ओर दखती रही।

'तुम खडी क्या हो गइ ?'

'यही है वह व्यक्ति।'

वही कौन ?

जिसे मा ने कल रात दिखाया था।

यह सुनकर चम्पा भी सशकित होकर खडी हो गई। नगन्द्र उनके पास आए और उन्हान कुन्द का सब बातें समझा दी। कुन्द कोई उत्तर न द सकी केवल विस्मय से बडी-बडी आखें निकाल कर नगेन्द्र को देखती रही।

३

नगन्द्रदत्त कुन्द को अपन साथ कलकत्ता ले आए। उन्हाने उसके मौसा विनोद घोष का बहुत पता लगाया, परन्तु श्यामबाजार म विनोद घाष नाम का कोई व्यक्ति न मिला।

नगेन्द्र की एक सगी बहिन थी उनस छाटी, कमलमणि। उसकी सुसराल कलकत्ते मे थी। उसके पति का नाम श्रीशचन्द्र मिश्र था। वह

बहुत धनाढ्य व्यक्ति थे। नगेन्द्र से उन्हें बड़ी प्रीति थी। कुन्द को नगेन्द्र उन्ही के यहा ले गए। कमल को बुलाकर उन्होंने कुन्द का परिचय कराया।

कमल की आयु अठारह वष की थी। उसके चेहरे की बनावट नगेन्द्र जैसी ही थी। दोनो ही बहुत सुन्दर थे परन्तु कमल सौंदय के साथ विद्वान् भी थी। नगेन्द्र के पिता ने कमलमणि और सूयमुखी को विशेष रूप मे लिखना पढना सिखाया था। कमल के ससुर थे परन्तु वह श्रीशचन्द्र के पास कलकत्ते म नही रहते थे।

नगेन्द्र न कुन्द से कहा, इस समय कमल तुम्हारे अतिरिक्त इसे और यही सहारा नहीं ह। जब मैं लौटूगा तो इसे गोविन्दपुर ले जाऊगा।

कमल बडी पाजी थी। वह कुन्द का गोद मे लेकर दौडी और टब, जिसमे थोडा अधगम पानी था, उसे उसमे फेंक दिया। कमल फिर हसकर सौरभयुक्त साबुन से उसके बदन को धोने लगी। एक नौकरानी कमल को काम म लगी देखकर बोली मैं मलती हू मैं मलती हू। कमल न गम पानी नौकरानी के ऊपर उछाला तो वह भागी।

कमल ने अपने हाथो से कुन्द को धोकर नहलाकर साफ किया। कुन्द नहाकर शिशिर कमल की तरह सुन्दर हो उठी। कमल ने फिर उसे सफेद वस्त्र पहिनाकर सुगन्धित तेल से उसके केश सवारे। फिर कुछ जेवर पहिनकर कहा, 'जा भैया को प्रणाम करआ। इस मकान के बाबू को प्रणाम न कर बैठना। नही तो इस घर के बाबू देखते ही तुझसे विवाह कर बैठेंगे।

नगेन्द्र न कुन्द की सब बातें सूयमुखी को लिख दीं। हरदेव घोषाल नामक उनके एक प्रिय मित्र दूर देश मे रहते थे। नगेन्द्र ने उन्हे भी कुन्दनन्दिनी के विषय म लिखा बताओ, किस आयु मे स्त्रिया सुन्दर होती हैं ? तुम कहोगे, चालीस साल के बाद, क्योंकि तुम्हारी ब्राह्मणी की यही आयु है। मैंने कुन्द नाम की जिस कन्या का परिचय दिया, उसकी आयु तेरह वष है। उसे देखकर जान पडता है यही सौन्दय का समय है। प्रथम यौवन के उभार के समय जैसी माधुय और सरलता होती है, बाद म उतनी नहीं रहती। कुन्द की सरलता अवणनीय है। वह

कुछ समझती ही नही । राह मे बालको के साथ मलने दौडती है । मना करन पर डरकर लौट आती है । कमल उसे लिखना पढना सिखा रही है । कमल का कहना है कि उसकी बुद्धि बडी तीव्र है, परन्तु और कुछ वह समझती ही नही । उसका कहना है कि उसकी बडी-बडी काली आखें सदा स्वच्छ पानी म तैरती सी रहती हैं । वह मेरे मुह की तरफ ताकती है तो कुछ कहती नही । मैं उन आखो को देखकर अन्यमनस्क हो जाता हू । उन्हे मैंने दो बार एक जैसा नही पाया । इस पृथ्वी को वह मानो अच्छी तरह देखती ही नही । मैंने अपनी समझ म ऐसी सुन्दरी कभी नही देखी । जान पडता है कुन्दनन्दिनी म पृथ्वी के अतिरिक्त और कुछ भी है । चन्द्र की किरणो ने मानो उसके बदन को गढा है । उसकी तुलना भी मैं किसी चीज स नही कर सकता ।

नगेन्द्र ने सूर्यमुखी को जो पत्र लिखा था उसका उत्तर कुछ दिन पश्चात आया । उसम लिखा था, दासी यह न समझ सकी कि उसने श्रीचरणो का क्या अपराध किया है । यदि कलकत्ते मे आप अधिक दिन ठहर तो मैं भी वही आकर पद सेवा करू ? मैं आज्ञा पाते ही चली आऊगी।

कुन्द के पाने स क्या मुझ आप भूल गए ? बहुतेरी चीजो का कच्चे म ही आदर होता है । नारियल की तरह अधम स्त्री जाति भी शायद कच्ची ही मीठी होती है नही तो कुन्द को पाकर तुम मुझे क्या भूल जाते ?

क्या तुमने उस लडकी को अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया है ? मैं तुमसे उसकी भीख मागती हू । मुझे लडकी की जरूरत है । यदि तुम्हे कोई चीज मिले, तो उस पर मेरा भी अधिकार है । आजकल देखती हू कि आप पर अपनी बहिन का अधिकार अधिक हो गया है ।

आपको लडकी की आर क्या जरूरत है ? मैं ताराचरण के साथ उसका विवाह करा दूगी । तुम जानते हो, मैं ताराचरण के लिए एक अच्छी लडकी की खोज म हू । यदि विधाता ने एक अच्छी लडकी दी है तो मुझे निराश न करना । यदि कमल छोडे, तो कुन्द को अपने साथ ले आना । मैंने कमल स भी प्रार्थना की है । मैं विवाह के उद्योग म लग

गई हू । कलकत्त से शीघ्र आना । यदि कुंद से स्वयं विवाह करना हो, तो लिखो, मैं विवाह की डोली सजा रखू।

सूयमुखी के प्रस्ताव पर नगेन्द्र और कमलमणि दोनो राजी हो गए। निश्चय हुआ कि नगेन्द्र कुन्द को अपने साथ घर ले जाएगे। कमल ने भी कुन्द के लिए गहने गढवाने को दिए।

नगेन्द्र कुन्द को साथ लेकर गोविंदपुर गए। कुन्द उस स्वप्न को भूल सी गई थी। नगेन्द्र के साथ यात्रा के समय फिर उसकी याद आई।

सूयमुखी के पिता कनगर मे रहत थ। एक भल कायस्थ थ। कल-कत्ते के किसी हाउस मे कैशियर थे। सूयमुखी उनकी अकेली सतान थी। उनके बचपन मे श्रीमती नाम की एक विधवा दासी सूयमुखी का पालन करती थी। श्रीमती के एक लडका था। उसका नाम ताराचरण था। वह सूयमुखी की उम्र का ही था। सूयमुखी बचपन मे उसके साथ खेलती थी और उसे भाई जैसा स्नेह करती थी।

श्रीमती रूपवती थी इसलिए शीघ्र ही विपदा ही पड गई। गाव के एक दुश्चरित्र धनी व्यक्ति की आखो मे गड कर वह सूयमुखी के पिता के घर से भाग गई। फिर वह लौटकर नही आई।

श्रीमती ताराचरण को वही छोड गई। ताराचरण सूयमुखी के पास ही रहा। सूयमुखी के पिता न उस अनाथ बालक का अपनी सतान की तरह पालन किया। ताराचरण एक अवैतनिक मिशनरी स्कूल मे अग्रेजी पढने लगा।

सूयमुखी का विवाह हो गया। कई वष बाद उसके पिता का भी स्वगवास हो गया। उस समय तक ताराचरण कुछ-कुछ अग्रेजी सीख गया था परन्तु कोई काम-काज न लगा था। सूयमुखी के पिता के पर-लोक जाने पर निराश्रित हो वह सूयमुखी के पास आ गया। सूयमुखी ने नगेन्द्र से गाव मे एक स्कूल खुलवा दिया था। ताराचरण उसमे मास्टरी करने लग और ग्राम्य देवता बन गए। उन्होन 'सिटिजन ऑफ द वल्ड' और स्पेक्टटर' पढे थे और ज्यामिति की तीन किताबें भी रटी थी। वह दवीपुर निवासी जमीदार देवेन्द्र बाबू के ब्रह्म समाज म प्रवेश कर गए। वह बाबू के मुसाहिबो म गिने जाने लगे। समाज मे ताराचरण विधवा-

विवाह के सम्बन्ध में अनेक लेख लिखकर हर सप्ताह पढते और बडी बडी वक्तृताएँ देते थे। उनमें से कुछ तो वह तत्वबोधिनी में से नकल कर लेते थे और कुछ पण्डितो से लिखा लेते थे। वह कहा करते थे तुम इंट पत्थर की पूजा छोडो चाची और ताई का विवाह करो, लडकियों को पढना लिखना सिखाओ उन्हें पिंजरे मे बन्द क्यो किए हो? औरतो को बाहर निकलने दो।' स्त्रियों को लिबर्टी देने का कारण यह था कि उनका अपना घर स्त्री-शून्य था। उनका विवाह नहीं हुआ था। सूर्यमुखी उनके विवाह के लिए बहुत यत्न करती थी। उनकी माता के कुल-त्याग करने के कारण कोई भला कायस्थ उन्हें कन्या देने को राजी नही होता था। निम्न कायस्थो की कुरूपा कन्याएं मिलती थी, परन्तु क्योंकि सूर्यमुखी ताराचरण को भाई के समान मानती थी इसलिए वह छोटे आदमियों की कन्या को भौजाई बनाने को तैयार नही थी। वह किसी सुन्दर कन्या की खोज मे थी। इसी बीच नगेन्द्र की चिट्ठी से कुन्दनन्दिनी के रूप गुण की बात जानकर उन्होंने स्थिर किया कि ताराचरण से उसका विवाह करेंगी।

४

कुन्द नगेन्द्रदत्त के साथ गोविंदपुर आई। कुन्द नगेन्द्र का मकान देखकर चकित रह गई। इतना बडा मकान उसने नहीं देखा था। उस मकान की तीन मंजिलें बाहर और तीन मंजिलें अंदर थी।

कुन्दनन्दिनी ने विस्मयभरी दृष्टि से नगेन्द्र के अपरिमित ऐश्वर्य को देखते हुए अंतःपुर मे प्रवेश किया। सूर्यमुखी के सामने जाने पर उसने उन्हें प्रणाम किया और सूर्यमुखी ने आशीर्वाद दिया।

नगेन्द्र के साथ स्वप्न में देखे पुरुषरूप में सादृश्य का अनुभव कर कुन्दनन्दिनी के मन में सन्देह था कि उनकी पत्नी अवश्य उस पुरुष के

बाद देखी स्त्री होगी, परन्तु सूयमुखी को देखने पर वह संदेह बना रहा। कुंद ने देखा कि सूयमुखी आकाश से दिखाई देने वाली स्त्री के समान नहीं थी। सूयमुखी तपे सोने के रंग की थी। उसका चेहरा सुदर था। स्वप्न में दिखाई देने वाली श्यामांगी की आंखों में इतनी अलौकिक मनोहरता नहीं थी। सूयमुखी की बनावट भी वैसी नहीं थी। स्वप्न में दिखाई देने वाली स्त्री भी सुन्दर थी, परन्तु सूयमुखी उससे सौ गुनी सुदर थी। स्वप्न में दिखाई देने वाली स्त्री की आयु बीस से अधिक नहीं थी। सूयमुखी की आयु छब्बीस वष के लगभग थी। सूयमुखी के साथ उस मूर्ति का कोई सादृश्य न देख, कुंद के मन की चिंता जाती रही।

सूयमुखी ने कुंद से प्रेमपूवक बातचीत की। उसकी सेवा के लिए दासियो को बुलाकर आदेश दिया और उनमें जो प्रधान थी, उससे कहा 'कुंद के साथ मैं ताराचरण का विवाह करूंगी। इसलिए तुम मेरी भौजाई की तरह इसकी सेवा करना।

दासी ने स्वीकार किया। कुंद को साथ लेकर वह दूसरी कोठरी में चली गई। इस बीच कुंद ने उसकी ओर देखा। उसे देखकर कुंद का सिर से पैर तक पसीना आ गया। जिस स्त्री को कुंद ने आकाश-पट पर देखा था, यह दासी हू-ब-हू वही थी। कुंद ने पूछा, तुम कौन हो?'

'मेरा नाम हीरा है।' दासी ने कहा।

कुन्दनन्दिनी का ताराचरण के साथ विवाह हुआ। ताराचरण उसे अपने घर ले गए, परन्तु उसे पाकर वह बहुत ही विपत्ति में पड़ गए। ताराचरण की स्त्री शिक्षा और पर्दा भंग के प्रबंध देवेन्द्र बाबू की बैठक में पढ़े जाते थे। तक वितक का समय आने पर मास्टर साहब सवदा दम्भ के साथ कहा करते थे, यदि कभी मेरा समय होगा तो इस विषय में मैं पहिले रिफाम करने का दृष्टांत दिखाऊंगा। अपना विवाह होने पर मैं अपनी स्त्री को सबके सामने बाहर ले आऊंगा।' अब विवाह हो गया था। कुंदनन्दिनी के सौंदय की ख्याति मित्रों में प्रचारित हुई। सबने कहा, 'कहां रहा वह प्रण तुम्हारा?' देवेन्द्र ने पूछा, क्यों जी! क्या तुम भी ओल्ड फूल्स के दल में हो? पत्नी के साथ हम लोगों का परिचय क्यों नहीं कराते?'

ताराचरण बहुत लज्जित हुए। वह देवेंद्र बाबू के अनुरोध को सहन न कर सके। वह देवेन्द्र से कुदनन्दिनी की भेंट कराने पर विवश हो गए, परन्तु भय यह हुआ कि सूर्यमुखी यह सुनकर क्रोध करेंगी। इस प्रकार टाल मटोल करते एक मास बीत गया। अन्त में उन्होंने मकान की मरम्मत का बहाना करके कुंद को नगेन्द्र के घर भेज दिया। जब मकान की मरम्मत हो गई तो फिर वहीं ले आना पड़ा। देवेन्द्र एक दिन स्वयं अपने मित्रों के साथ ताराचरण के घर आ पहुंचे। उन्होंने ताराचरण पर मिथ्या-दम्भ का व्यंग्य-कसा। लाचार होकर ताराचरण ने कुदनन्दिनी का देवेन्द्र से परिचय करा दिया। कुदनन्दिनी ने देवेन्द्र के साथ क्या बातचीत की? कुछ देर घूंघट निकालकर खड़ी रहने के पश्चात वह रोकर भाग गई परन्तु देवेन्द्र उसके सौंदर्य पर मुग्ध हो गए। उस शोभा को वह भूल न पाए।

कुछ दिन पश्चात देवेन्द्र के घर कोई समारोह था। उनके घर से एक लड़की कुंद को निमंत्रण देने आई। सूर्यमुखी ने उस निमंत्रण को रोक दिया। इसलिए जाना स्थगित हो गया।

देवेन्द्र ताराचरण के घर आकर फिर एक बार कुंद से बातचीत भी कर गए। यह सूर्यमुखी ने भी सुना। उन्होंने ताराचरण को ऐसी डांट लगाई कि तबसे कुदनन्दिनी के साथ देवेन्द्र की भेंट असम्भव हो गई।

इस तरह तीन वर्ष बीत गए। उसके बाद कुदनन्दिनी विधवा हो गई। ताराचरण की मृत्यु हो गई। सूर्यमुखी ने कुंद को अपने घर बुला लिया। उन्होंने ताराचरण के लिए जो मकान बनवा दिया था, उसे बेचकर कुंद को रुपया दे दिया।

५

विधवा कुदनन्दिनी ने कुछ दिन नगेन्द्र के घर बिताए। एक दिन मध्याह्न के बाद घर की सब स्त्रियां मिलकर पुराने जनानखाने में बैठी

थी। सब अपने अपने काम म लगी थी। कोई सुदरी अपने बच्चे के लिए कुछ सी रही थी, कोई बालक को दूध पिला रही थी, कोई बच्चा खिला रही थी। सूर्यमुखी इस सभा मे नही थी। वह ऐसे सम्प्रदाय म नही बैठती थी और उनके रहने से अन्य सबके आमोद मे विघ्न होता था। उनसे सब डरती थी। उनके आगे मन खोलकर बातें नही कर सकती था। कुदनन्दिनी आजकल इसी सम्प्रदाय मे रहती थी। वह अब भी वही थी। वह एक बालक का उसकी माता के अनुरोध से 'क, ख' सिखा रही थी। तभी 'जय राधे!' कहती हुई एक वैष्णवी वहा आगई।

अन्त पुर म 'जय राधे' सुनकर एक स्त्री ने कहा, 'तू कौन आई है री मकान के भीतर? ठाकुरबाडी म जा!' किन्तु यह बात कहते-कहते उसने जो मुह फेरा, तो वैष्णवी को देखकर वह अपने मुह की बात समाप्त न कर सकी। वह बोली, 'यह कौन वैष्णवी है?'

सबने विस्मित होकर देखा कि वैष्णवी एक युवती थी। उसके रूप का क्या कहना। कुदनन्दिनी के अतिरिक्त उससे अधिक रूपवती और कोई नही थी, परतु उसके चलने-फिरने मे पुरुषता थी।

एक बडी उम्रवाली स्त्री बोली, 'ए जी! तुम कौन हो?'

वैष्णवी बोली 'मेरा नाम हरिदासी वैष्णवी है। तुम मेरा गाना सुनोगी।'

चारो ओर स सुनेगी-सुनेंगी की आवाजें आने लगी। खजरी हाथ म ले वैष्णवी मालकिन के पास जा पहुची। जहा वह थी, वही कुद लडको को पढा रही थी। कुद को गाना बहुत पसद था। वैष्णवी का गाना सुनने के लिए वह भी समीप जा बैठी।

वैष्णवी ने पूछा, 'क्या गाऊ?' सुनने वालियो की अनेक फरमाइशें हुइ। किसी ने कहा 'गोविन्द अधिकारी के पद' किसी ने 'गोविन्द उडिया के पद।' किसी ने गाछ की माग की, किसी लज्जाहीना युवती ने कहा, 'निधुका टप्पा गाना हो तो गाओ, नही तो मैं न सुनगी।' वैष्णवी ने सबकी आना सुनकर कुद की ओर देखकर पूछा, 'ऐ जी तुमने कोई फरमाइश नही की?' कुद लज्जा से सिर झुकाकर मुस्कुराई। उसने कोई उत्तर नही दिया। तभी एक बडी उम्र वाली स्त्री ने उसके कान म

कहा, कीतन गाने को कहो ?'

वयस्का बोली, कुद कीतन गान को कह रही हैं।' वैष्णवी ने कीतन आरम्भ किया। सबकी बाता को टालकर वैष्णवी ने उसी की बात रखी, यह देखकर कुद बहुत लज्जित हुई।

हरिदासी वैष्णवी ने पहिले खजरी पर दो एक बार मानो खेलवाड करते हुए उगली की चोट की। उसके बाद वह अपने गले म मिठास लिए, नव-वसत प्रेरित भमरी की तरह, गूजने वाले स्वर का अलाप लेने लगी। सुनने वालों के शरीर को झकझोर कर अप्सरा को भी लजाने वाली कण्ठ ध्वनि से उसन गाया। रमणी मण्डल न विमोहित चित्त से सुना। वैष्णवी का स्वर आकाश मे गूज उठा। वैष्णवी सगीत विद्या म असाधारण सुशिक्षित थी।

कुद गिलास मे पानी ले आई। वैष्णवी न कहा, तुम लोगो का बतन मैं नही छुऊगी। मरे हाथ पर पानी डाल दो। मैं निम्न जाति की वैष्णवी हू।

सब समझ गए कि वह वष्णवा पहिल किसी छोटी जाति की थी, अब वष्णवी हो गई थी। कुद उसके पीछे-पीछे कुछ दूर पानी गिराने योग्य स्थान पर गइ। कुद वष्णवी के हाथ पर पानी गिराने लगी। वैष्णवी हाथ मुह धाने लगी। धोते धोते वैष्णवी धीरे धीरे बोली, तुम्हारा ही नाम कुद है ?

क्यो ?' कुद ने पूछा।

तुमने अपनी सास को कभी देखा है।

नही मैंने नही देखा।'

कुद ने सुना था कि उसकी सास भ्रष्टा होकर चली गई थी।

'तुम्हारी सास यहा आई हैं। वह मेरे घर पर है। तुम्हे एक बार देखना चाहती हैं। टजार हो, साम ही तो है। वह तुम्हारी गृहिणी के सामने अपना काला मुह दिखा नही सकती। तुम्ही मर साथ चलकर उससे भेंट कर आओ।

कुद सरला होने पर भी समझ गई कि उम सास से सम्बध स्वीकार करना अनुचित था। उसने वष्णवी की बात को अस्वीकार कर

दिया।

वैष्णवी फिर उत्तेजित करने लगी। कुन्द बोली, 'मैं गृहिणी से बिना कहे कहीं नहीं जा सकती।'

हरिदासी बोली, 'गृहिणी से न कहना। वह जाने न देंगी। तुम्हारी सास को देश छोडना पडेगा।

वैष्णवी ने बहुत कहा परन्तु कुन्द किसी प्रकार बिना सूर्यमुखी की आज्ञा के जाने को उद्यत न हुई। लाचार हरिदासी बोली, 'अच्छा तब तुम गृहिणी से कहकर देखना। मैं फिर किसी दिन आकर ले चलूंगी, परन्तु अच्छी तरह कहना। कुछ रो भी देना, नहीं तो काम न बनेगा।'

कुन्द इस पर भी राजी नहीं हुई परन्तु उसने वैष्णवी से हां या ना नहीं किया। हरिदासी ने हाथ-मुंह धोना समाप्त कर सब लोगों के सामने आकर पुरस्कार मांगा। तब वहां सूर्यमुखी भी आ गई थी।

सूर्यमुखी ने हरिदासी का सिर से पैर तक देखकर कहा, 'तुम कौन हो?' नगेन्द्र की एक मौसी बोली, 'यह एक वैष्णवी है गाने आई थी। अच्छा गाती है। ऐसा गाना हम लोगों ने पहिले कभी नहीं सुना। तुम भी सुनोगी? गाओ तो हरिदासी, कोई गाना गाओ।'

हरिदासी के एक गाना गाने पर सूर्यमुखी ने उस पर प्रसन्न हो, पुरस्कार देकर उसे विदा किया।

वैष्णवी प्रणाम करके कुन्द की ओर फिर एक बार देखकर विदा हुई।

नगेन्द्र के पितामह ने देवेन्द्र के पितामह को एक मुकदमे में हराया था। इससे देवीपुर के बाबू लोग हीन हो गये थे। डिग्री में उनका सर्वस्व चला गया था। गोविंदपुर के बाबुओं ने उनकी सब जमीन खरीद ली थी। तब से देवीपुर का मान घटा और गोविन्दपुर का बढ़ा। वंशों में फिर मेल न हुआ। देवेन्द्र के पिता ने अपना गौरव बढ़ाने के लिए एक उपाय किया। गणेश बाबू नामक एक जमींदार हरिपुर जिले में थे। उनकी एकमात्र कन्या हेमवती थी। उन्होंने हेमवती के साथ देवेन्द्र का विवाह कर दिया। हेमवती कुरूपा जबान की तेज और अप्रिय भाषिणी थी। जब देवेन्द्र का विवाह हुआ, देवेन्द्र का चरित्र निष्कलंक था, परन्तु यह

तिग वह अधिक देर बैठने नहीं थे। सबके उठ जाने पर मुरेन्द्र ने देवेन्द्र से पूछा, 'आज तुम्हारा बदन कैसा है ? क्या आज तुम्हें ज्वर जान पडा था ?'

'नहीं तो।'

'यकृत का दर्द कैसा है ?'

'वैसा ही पहिले जैसा ही है। कोई अन्तर नहीं है।'

'क्या फिर यह शराब बन्द रखना चाहिए ?'

'शराब पीना ! कितने दिन ? यह तो मेरे जन्म की साथिन है।'

'जन्म की साथिन क्यों है ? न साथ आई न साथ जाएगी। बहुतों ने त्याग दी है, तुम न त्याग सकोगे ?'

'किस सुख के लिए उसका त्याग करूँ ? जिन्होंने त्यागा है, उन्हें कोई और सुख मिला होगा। मेरे लिए तो कोई सुख नहीं है।'

'तुम प्राण बचाने की आकांक्षा से इसका त्याग करो।'

'जिसे जीने में सुख मिले वह जीने की आशा से शराब छोड़े। मेरे जीने से क्या लाभ होगा ?'

सुरेन्द्र की आँखों में आँसू आ गए। वह बोले 'हम लोगों के अनुरोध से शराब पीना छोड़ दो।'

देवेन्द्र की आँखों में भी आँसू आ गए। देवेन्द्र बोले 'तुम्हारे अतिरिक्त अन्य कोई मुझसे ठीक राह पर लगने का अनुरोध नहीं करता। यदि कभी मैं शराब का त्याग करूँगा, तो तुम्हारे ही कारण करूँगा, और ।'

'और क्या ?'

'और यदि अपनी स्त्री की मृत्यु का समाचार इन कानों से सुनूँगा, तो शायद छोड़ भी दूँ। आज तो मेरा जीना मरना समान ही है।' देवेन्द्र भारी मन से बोला।

सूर्यमुखी ने कमलमणि को एक पत्र लिखा। 'श्रद्धेय कमलमणि !

यह तुम्हें लिखते लज्जा आती है क्योंकि मैं तुम्हें अपनी छोटी बहिन के सिवा और कुछ नहीं समझती।

आज तुम्हें अपनी दशा लिखते दुःख भी होता है और लज्जा भी आ रही है। हृदय में जो कष्ट है वह सहा नहीं जाता। किससे कहूँ? तुम मेरी बहिन हो। मुझे और कोई नहीं चाहता। तुम्हारे भाई की बात तुम्हारे अतिरिक्त और किसी से कह भी नहीं सकती।

मैंने अपनी चिता आप ही सजाली है। कुन्दनन्दिनी भूखी मर जाती तो उससे मेरी कोई हानि न थी? प्रभु इतने लोगों का प्रबन्ध करते हैं, क्या उसका न करते? मैंने व्यर्थ उसे अपने घर में बुलाया।

तुमने उसे जब देखा था वह बच्ची थी। अब वह बीस वर्ष की है। वह सुन्दर है। वही सौन्दर्य मेरा काल हो गया है।

संसार में मेरे लिए एकमात्र पति का सुख है। मुझे चिन्ता भी पति के लिए ही है। मेरी कोई सम्पत्ति है तो वह है। उसे कुन्दनन्दिनी मेरे हृदय से छीन रही है। कुन्दनन्दिनी मेरे पति के स्नेह से मुझे वंचित कर रही है।

तुम अपने भाई को बुरा न कहना। मैं उनकी निन्दा नहीं कर रही हूँ। वह धर्मात्मा हैं। शत्रु भी उनके चरित्र में कलंक नहीं लगा सकते। वह अपने चित्त को वश में किए हुए हैं। जिधर कुन्दनन्दिनी रहती है उधर जाने से बचते हैं। मैंने उन्हें यत्न से उसे डाँटते-बनाते देखा है।

तब मैं क्यों इतनी घबरा रही हूँ? तुम स्त्री हो, इसे समझती हो। यदि कुन्दनन्दिनी उनकी आँखों में साधारण होती तो क्या वह उसकी ओर न देखते? उसका नाम उच्चारण करने में यत्नशील होते? कुन्दनन्दिनी के सामने वह अपराधी से लगते हैं। मैं उनकी छाया मात्र देखकर उनके मन की बात कह सकती हूँ, वह मुझसे क्या छिपाएँगे? कभी-कभी लापरवाही से उनकी आँखें इधर-उधर घूम जाती हैं। वह किसकी खोज में होते हैं क्या मैं नहीं जानती? देखते ही व्यथित होकर

निगाहें फेर लेते हैं। क्यो, क्या मैं नही समझती ? किसकी आवाज सुनने के लिए वह भोजन करते-करते ग्रास हाथ में लिए कान खड़े करते हैं, क्या मैं नही समझती ? हाथ का ग्रास हाथ मे रहता है मुँह मे क्या डालते, क्या डाल लेते हैं, यह सब क्यो ? कुन्द की आवाज कान मे आते ही कभी जल्दी जल्दी भोजन करने लगते हैं, यह सब क्यो ? मेरे प्रसन्नवदन इस समय इतने अन्यमनस्क क्यो रहते हैं ? कुछ कहने पर उसे न सुनकर उत्तर दे बैठते हैं 'हू' । यदि मैं क्रोध मे आकर कहती हू, 'मैं मरजाऊ,' तो वह बिना सुने ही कह बैठते हैं हू' । एक दिन मुहल्ले की बुढिया कुन्द की चर्चा कर रही थी । मैंने आड से देखा कि तुम्हारे भाई की आखो मे आसू आ गए थे ।

इधर एक नई दासी रखी है । उसका नाम कुमुद है । वह उसे कुमुद के नाम से बुलाने के बजाय कुन्द कह बैठते हैं और फिर लज्जित होते हैं ।

मैं नही कह सकती कि वह मेरा अनादर करते हैं, बल्कि पहिले से अधिक यत्न से आदर करते हैं । इसका कारण भी मैं समझती हू । वह अपने मन मे अपराधी हैं परन्तु मेरे लिए अब उनके मन मे स्थान नही है । यत्न और चीज है और प्रेम और चीज है ।

एक मजाक की बात और लो । ईश्वरचन्द्र विद्यासागर नाम के एक कलकत्ते मे बड़े पण्डित हैं । वह विधवा विवाह कराते हैं । यदि वह पण्डित हैं, तो मूर्ख कौन है ? आजकल भट्टाचार्य के आने पर इसी पर तर्क वितर्क चलता है । उस दिन वह न्याय शास्त्री विधवा विवाह पर तर्क करके बाबू से पाठशाला की मरम्मत के लिए दस रुपए ले गए ।

अपने दुःख की चर्चा छेड़कर मैंने तुम्हे बहुत देर परेशान किया । तुम रुष्ट होगी, परन्तु क्या करू बहिन ! तुमसे अपने मन का दुःख न कहकर और किससे कहू ? मेरी बातें अब भी खत्म नही हुईं, परन्तु तुम्हारा मुह देखकर आज मैं शान्त हुई । ये बातें किसी से न कहना, मेरे माथे की कसम । अपने पति को यह पत्र न दिखाना ।

क्या तुम यहा न आओगी ? एक बार आओ, तुम्हें पाने पर मेरा बहुत क्लेश दूर होगा ।

सब समाचार शीघ्र लिखना।

एक बात और, पाप को विदा करने से ही जान बचेगी। कहा विदा करू ? क्या तुम ले सकती हो उसे ? या डरती हो तुम भी ?'

कमल ने उत्तर दिया, तुम पागल हो गई हो नही तो तुम पति के हृदय पर अविश्वास क्यो करती ? स्वामी के प्रति अपने विश्वास को गवाओ नही और यदि विश्वास नही रख सकती तो तालाब मे डूबकर मर जाओ। स्वामी पर जिसका विश्वास न रहा उसके मरने म ही मगल है।'

धीरे धीरे नगेन्द्र का चरित्र बदलने लगा। सूयमुखी ने छिपकर अपने आचल से आसू पोंछे। सूयमुखी न सोचा वह कमल की बात मानेगी। वह स्वामी पर अविश्वासिनी क्या हो ? उनका चित्त अचल पवत है। मैं अपने को भ्रात समझती हू ?'

मकान म एक आगन था। सूयमुखी ओट से ही सब बातें करती थी। वह चिक के पीछे बैठती थी। उसम से सूयमुखी बात कहलाती थी। सूयमुखी ने डाक्टर से कहा, 'बाबू बीमार है, तुम दवा क्यो नहीं देते ?'

'मुझे मालूम नही, उनको क्या बीमारी है। मैंने तो बीमारी की कोई बात सुनी नही।

बाबू ने कुछ कहा नही ?'

'नहीं। क्या बीमारी है ?'

क्या बीमारी है, इसे तुम जानोगे या मैं ? डाक्टर तुम हो, मैं नही।'

डाक्टर बोले 'मैं जाकर पूछता हू।' इतना कहकर डाक्टर जाने लगा तो सूयमुखी ने रोक कर कहा, 'बाबू से कुछ न पूछना। स्वय देखकर दवा देना।'

'जो आज्ञा, दवा की कोई कमी नहीं। कहकर डाक्टर चला गया। उसने दवाखाने म जाकर थोडा सोडा थोडी पोटवाइन थोडा शबत फेरिम्यूरेटिस कुछ अण्ड-बण्ड मिलाकर शीशी भर, लेबुल लगाकर दवा भेज दी। सूयमुखी दवा लेकर गई। नगेन्द्र न हाथ म शीशी लेकर दूर फेंक दी।

सूर्यमुखी बोली 'न्वा न खाओ, तो अपनी बीमारी का हाल मुझसे कहो।'

'कैसी बीमारी ?' नगेन्द्र बोले।

'अपने शरीर को देखो, क्या दशा हो गई है ?'

यह कहकर सूर्यमुखी ने एक शीशा लाकर उनके सामने रख दिया। नगेन्द्र ने शीशा भी दूर फेंक दिया। वह चूर चूर हो गया।

सूर्यमुखी की आखों से आसू बह चले। नगेन्द्र की आखें लाल होने लगी। उन्होने एक नौकर को व्यर्थ मारा। मानो वह सूर्यमुखी को मार रहे थे। शीतल स्वभाव के नगेन्द्र अब बात-बात में गर्म हो जाते थे।

एक दिन रात्रि को नगेन्द्र अन्तःपुर में नही आए। सूर्यमुखी बैठी रही। बहुत रात बीत गई। नगेन्द्र बहुत रात गए आए। सूर्यमुखी ने देखा नगेन्द्र का चेहरा और आखें लाल थी। उन्होने शराब पी थी। यह देखकर सूर्यमुखी आश्चर्यचकित रह गई।

फिर नित्य यही होने लगा। एक दिन सूर्यमुखी ने नगेन्द्र के पैर पकडकर कहा, 'मेरे अनुरोध से आप इसे पीना छोड दें।'

नगेन्द्र बोले, 'इसमे क्या दोष है ?'

सूर्यमुखी बोली 'यह तो मैं नही जानती कि क्या दोष है। जिसे तुम नहीं जानते उसे मैं भी नही जानती। मेरा अनुरोध मात्र है।'

'सूर्यमुखी ! शराबी की श्रद्धा होती हो तो मेरी भी श्रद्धा करो, नही तो न करो।'

सूर्यमुखी ने अब नगेन्द्र के सामने आसू न गिराने की प्रतिज्ञा की। उसने दीवानजी से कहला भेजा, 'माता जी से कहो, अब सब कुछ गया। कुछ भी शेष न बचेगा।'

'क्यो ?'

'बाबू कुछ देखते नही। कारिन्दे की जो इच्छा होती है, करता है। कारिन्दा मेरी बात भी नही सुनता। जिसका धन है, वही रखेंगे तो रहेगा।'

एक दिन तीन चार हजार लोग नगेन्द्र की कचहरी मे आकर बोले 'दुहाई है हजूर ! कारिन्दे के अत्याचार से हम लोग न बचेंगे। उसने

हमारा सर्वस्व ले लिया। आप न रखेंगे तो कोई रह न सकेगा।'

नगेन्द्र बाल, सबको भगा दो।

हेमचन्द्र पाण्डेय ने नगेन्द्र को लिखा, 'तुम्हें क्या हो गया है? कुछ क्या कर रहे हो मेरी समझ में नहीं आ रहा। तुम्हारी चिट्ठी नहीं मिलती। मिलती है तो जाने क्या अण्ड-बण्ड लिखते हो। तुम मुझसे नाराज हो गए हो तो लिखते क्यों नहीं? मुकदमा हार गए हो। और कुछ न लिखो तब भी यह तो सूचना दो कि तुम स्वस्थ हो।'

मेरे ऊपर पर क्रोध न करना। मैं अधःपतन की ओर जा रहा हूँ। नगेन्द्र ने लिखा।

७.

कमलमणि को सूर्यमुखी का एक और पत्र मिला। उसमें लिखा था, 'एक बार आओ! कमलमणि मेरी बहिन! तुम्हारे अतिरिक्त मेरा सुहृद और कोई नहीं है। एक बार अवश्य आओ।'

कमल पत्र पढ़कर अपने पति के पास गई। वह अन्तःपुर में बड़े आय-व्यय का हिसाब देख रहे थे।

कमलमणि पति के पास जाकर प्रणाम करके बोली, 'मेरा भी प्रणाम लो महाराज!'

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मारा। श्रीशचन्द्र जिस कागज क' लिख रहे थे, उसे फाडकर हसते हुए बोले, तब लडन क्या आती ह। ?'

मरी खुशी मैं लड़ गी।'

'मेरी खुशी, मैं भी कहूगा।'

कमलमणि न श्रीश को बाहा म कम लिया। अगल दातो स अधर क' दबाकर छोट से हाथ से थप्पड दिखाया।

उसे देखकर श्रीशचन्द्र न कमलमणि के सिर का जूडा खाल दिया। कमलमणि न श्रीशचन्द्र की दवात पीकदान म उडल दी।

श्रीशचन्द्र न कदम बढाकर कमलमणि के मुख का चुम्बन लिया। कमलमणि न भी श्रीशचन्द्र का मुह चूमा। यह देखकर सतीश को बडी प्रसन्नता हुई। वह जानता था कि मुख चुम्बन पर कवल उसका ही अधिकार था। उन लोगो की लपटा झपटी देख वह खडा हो गया और दोनो के मुह की ओर देखकर हस पडा। यह हसी कमलमणि क कानो को बहुत मधुर लगी। कमलमणि ने सतीश को गोद मे लेकर चूमा। फिर श्रीशचन्द्र न उसे कमल की गोद से छीनकर चूमा।

तो क्या सचमुच तुम्हे गोविंदपुर जाना पडेगा ? मैं अकेला कस रहूगा श्रीशचन्द्र बोल।

तुम्हे अकेले रहने का मुझे शौक नही है ? मैं भी चलूगी और तुम भी चलोगे।

मैं किस तरह जाऊ ? हम लोगो क तीसी खरीदन का यही समय है। तुम अकेली ही हो आओ।

आओ सतीश, हम दोनो रो बैठ।'

तुम जाओ मैं मना नही करता, परन्तु तीसी का मौसम छोडकर मैं कसे चलू ?

कमलमणि मुह फेरकर बुरा मान गई। फिर उसन कोई बात नही की।'

श्रीशचन्द्र क कलम म कुछ स्याही थी। उन्होने कलम से कमल के माथे पर एक टीका लगा दिया। कमल हसकर बोली मैं तुम्हे कितना चाहती हू।' यह कह कमल न श्रीशचन्द्र के गले म बाहे डालकर उनका

सूयमुखी न कहा, 'मेरा क्या काम करोगी ?'

तुम्हारा कण्ठोद्धार।

कुन्दनन्दिनी कमल के जान की बात सुन अपनी कोठरी म छिपकर रोई। कमलमणि पीछे-पीछे गई। कुन्दनन्दिनी तकिए पर सिर रखकर रो रही थी। कमलमणि उसकी चोटी करने बैठ गई।

चोटी करना कमल का रोग था। कमल न उसके सिर को गोद म रख लिया। अपने आचल से उसका मुह पोछ दिया। यह सब काम समाप्त करके उसन पूछा, कुन्द, रोती क्या है ?'

तुम जाती क्यो हो ?'

इससे रोती क्यो है ?' कमलमणि हसकर बोली।

'तुम मुझसे बहुत प्रेम करती हो न !

क्या और कोई तुम्हे नहीं चाहता ?'

कुन्द चुप रह गई।

'कौन नही चाहता ? गृहिणी नही चाहती ? मुझसे न छिपाना।

कुन्द चुप रही।

'भय्या नही चाहते ?

कुन्द फिर भी चुप रही।

यदि मैं तुम्हे चाहती हू और तुम भी मुझे चाहती हो तो मेरे साथ क्यो नही चलतीं ?'

कुन्द फिर भी कुछ न बोली। कमल बोली चलोगी ?'

कुन्द न सिर हिलाकर कहा, चलूगी नहीं।

कमल का मुख गम्भीर हो गया। उसन स्नेह के साथ कुन्दनन्दिनी का सिर अपनी गोद म रखकर कहा कुन्द सच कहेगी ?

क्या ?

कमल ने कहा जो मैं पूछूगी ? मैं तेरी बहिन हू। मुझस छिपाना नही बात बात। मैं किसी से कहूगी नही। कमल न मन म कहा, 'यदि कहूगी तो श्रीशबाबू के कान म।

क्या बताऊ ?

तुम भय्या से प्रेम करती हो न ?

कुंद ने कोई उत्तर न दिया। वह कमलमणि के हृदय पर मुंह रख कर रोने लगी।

'मैं समझ गई, तू मर चुकी। मर कोई हानि नहीं। तेरे साथ बहुतेरे और भी मरेंगे।'

कुंदनंदिनी ने सिर उठाकर कमल के मुंह की ओर देखा। कमलमणि उसके प्रश्न को समझ गई। वह बोली, मुंहजली तूने आखें फोड़ ली हैं, परन्तु फाड़नी नहीं आईं। मुंह की बात मुंह में रही तब तक कुन्द का सिर फिर कमलमणि की गोद में आ पड़ा। कुंदनंदिनी के आंसुओं से कमलमणि की गोद भर गई। कुंदनंदिनी बहुत देर तक रोती रही।

कमल जानती थी कि प्रेम किसे कहते हैं। वह कुंदनंदिनी के दुख से दुखी और सुख में सुखी हुई। कुंदनंदिनी के आंसुओं को पोंछकर उसने कहा, 'कुन्द।'

कुंद ने फिर सिर उठाकर कमल की ओर देखा।

'मेरे साथ चलो।'

कुंद की आंखों से फिर आंसू गिरने लगे।

कमल ने कहा नहीं तो न सही। सोने का संसार खाक हो गया।

कुन्द रोने लगी। कमल, चलेगी? खूब सोच समझ के देख ले।

कुंदनंदिनी आंखें पोंछकर बोली, चलूंगी।'

कमल समझ गई कि कुंदनन्दिनी दूसरे के मंगल-मंदिर में अपने प्राणों की बलि देगी। नगेन्द्र के मंगल के लिए, सूर्यमुखी के मंगल के लिए उसने उन्हें भूलना स्वीकार किया। इसीलिए इतनी देर लगी। कमल समझ गई कि कुंदनन्दिनी समझ न सकी थी कि उसका मंगल क्या है।

तभी हरिदासी वैष्णवी ने आकर गाना गाया।

उस दिन सूर्यमुखी उपस्थित थी। उन्होंने कमल को गाना सुनने के लिए बुला भेजा। कमल कुन्द को साथ लेकर गाना सुनने आई।

कमलमणि बोली, 'इसने प्रेम राग गाया।'

कमल ने पूछा, क्या तुम और कोई गाना नहीं जानती?

हीरा बाल विधवा थी। हीरा के चरित्र [illegible]
नहीं सुना था। हीरा जुवान की बहुत तेज थी। वह सधवा की तरह
रहती थी, शृगारप्रिय थी।

हीरा श्यामागी और पद्म लोचना थी। कद मे नाटी, मुख मानो मेघा से ढका चाद और बाल मानो साप लटक रहे थे।

सूयमुखी ने हीरा को बुलाकर कहा, 'यह वैष्णवी कौन है पहिचानती हो ?'

'नही। मैं तो कभी गाव के बाहर नही जाती। मैं वैष्णवी भिखारिन को क्या जानू ? ठाकुरबाडी की औरतो को बुलाकर पूछो न! करुणा या शीतला जानती होगी।'

'यह ठाकुरबाडी की वैष्णवी नही है। तुझे जानना होगा कि यह वैष्णवी कौन है। यह वैष्णवी कौन है इसका मकान कहा है और कुन्द के साथ इसका इतना प्रेम क्यो है? सब बातें यदि ठीक तरह से जानकर बता सकेगी तो तुझे नई बनारसी साडी पहिनने को दूगी।'

नई बनारसी साडी की बात सुनकर उसकी छाती चौडी हो गई। उसने पूछा, 'कब पता लगाने जाना होगा ?'

'जब तेरी खुशी हो, किन्तु उसके पीछे-पीछे न जाने से फिर पता न पाएगी।'

'अच्छा।'

वैष्णवी कुछ समझ न सकी। और कोई भी कुछ जानने न पाया।

तब तक कमल लौट आई। सूयमुखी ने अपनी सलाह की सब बातें उससे कही। यह सुनकर कमल खुश हुई। उसने हीरा से कहा, अगर हो सके तो पाजी को बबूल के काटे चुभा दे।'

सब करूगी, किन्तु केवल बनारसी साडी ही न लूगी।'

और क्या लेगी ? सूर्यमुखी ने पूछा।

यह सब दूल्हा चाहती है। इसका विवाह करा दो।

अच्छा यही होगा। चाहे तो कमल से सम्बन्ध कर ले।'

'यह फिर देखा जाएगा । किन्तु मेरे मन के मुताबिक घराने में एक घर है ।'

'वह कौन सा ?

यम का घर ।'

८

उसी दिन रात्रि म कुदनन्दिनी बगीचे की बावली के किनारे बैठी थी । बावली के पीछे एक बाग था ।

कुदनन्दिनी अंधेरे मे अकेली बैठी सरोवर म प्रतिबिम्बित तारा स आच्छादित आकाश का प्रतिबिम्ब देख रही थी । मौलश्री के पत्तो में फुर फुर शब्द हो रहा था । खिले हुए मौलिश्री के फूलो की सुगंधि चारों ओर फैल रही थी । मौलियी के फूल चुपचाप कुदनंदिनी क बदन पर चारो ओर झड रह थे । पीछे से चमेली, जूही और कामिनी की झाडियों से सुगंधि आ रही थी । चारो ओर अधकार मे जुगनुओ के झुण्ड साफ पानी के ऊपर चमकते और बुझते फिर रह थे । मेघ के टुकडे आकाश मे रास्ता भूलकर भटक रहे थ । कुन्दनंदनी सोच रही थी 'सभी मर आये मरे । मा मरी भया मरे बाबा मरे, मैं क्यो नही मरी ? नही मरी तो यहा क्यो आई ? क्या भले आदमी मरकर तारे बनते है ? पिता की परलोक-यात्रा की रात को कुद ने जो स्वप्न देखा था उसकी कुन्द को याद न रही थी । अब उसका आभास-मात्र मन म आया । उसे याद आया कि उसने अपनी माता को स्वप्न मे देखा था । उसकी मा उसे तारो म ले जाने को कह रही थी । कुद सोचने लगी, 'अच्छा क्या मनुष्य मरकर तारा बनता है ? तब तो माता पिता सभी नक्षत्र है ? वे लोग कौन से तारे हैं यह मैं कसे जानू ? चाहे जो हो, मुझे तो वे देख रहे होंगे परन्तु रोने से क्या होगा ? मेरे भाग्य मे तो रोना ही है । कसे मरु ? पानी मे डूबकर ! यहा तो कोई नही है कोई सुन भी न सकेगा । जरा

उनका नाम जवान पर ले आऊ ? न नगेन्द्र, नगेन्द्र, नगेन्द्र, नगेन्द्र, नगेन्द्र, नगेन्द्र ! नगेन्द्र मेरे नगेन्द्र ! 'अजी ओ मेरे नगेन्द्र !' ! मैं कौन होती हू तुम्हारी ? सूर्यमुखी के नगेन्द्र । किनका नाम लेती हू, किन्तु क्या हुआ ? यदि सूर्यमुखी के साथ उनका विवाह न होकर मेरे साथ होता ! दूर हो ! डूब के ही मरूगी । अच्छा मानो अभी डूबी तब सभी लोग सुनेंगे सुनकर नगेन्द्र, नगेन्द्र नगेन्द्र ! फिर कहती हू नगेन्द्र, नगेन्द्र, नगेन्द्र ! नगेन्द्र सुनकर क्या कहेगे ? डूब के मर न सकूगी । विष खाके तो मर सकती हू । कौन सा विष खाऊ ? विष कहा पाऊगी ? कौन मुझे विष लाकर देगा ? मर सकती हू परन्तु आज नही । शायद वह भी मुझे चाहते हो । कमल यह कहते कहते चुप हो गई । 'अच्छा, क्या यह बात सच है ? किन्तु कमल को कैसे मालूम हुआ ? मैं पूछ न सकी । वह मुझे चाहते है ? क्या चाहते है ? क्या देखकर चाहते हैं, रूप या गुण ? रूप देखू ? यह कहकर वह स्वच्छ सरोवर में अपना प्रतिबिम्ब देखने गई । फिर वही जाकर बैठ गई । मुझसे सूर्यमुखी सुन्दर है । मुझसे तो हरमणि भी सुन्दर है !' वह रो पडी ।

मुझसे हीरा भी सुन्दर है । क्या वह सचमुच सुन्दरी है ? सावली होने से क्या होता है ? उसका चेहरा मुझसे सुन्दर है । कलकत्ता जाना न हो सकेगा । वहा जा न सकूगी । देखने भी न पाऊगी, मैं जा न सकूगी, जा न सकूगी, कदापि न जा सकूगी । तब, न जाकर ही क्या करूगी ? यदि कमल की बात सत्य है तो जिसने मेरे लिए इतना किया है, उसका मैं सर्वनाश करूगी । मैं समझती हू सूर्यमुखी के मन में कुछ आया है । मुझे जाना ही पडेगा । इसी से डूब मरती हू । मरूगी और अवश्य मरूगी ।'

कुन्द आखो पर हाथ रखकर रोने लगी । तभी उसे स्वप्न का वृत्तान्त स्पष्ट दिखाई देने लगा । कुन्द उठकर खडी हो गई । मैं सब भूल गई । क्या भूल गई ? मा ने मुझे बताया था । उन्होने मुझे अपने साथ चलने को कहा था । मैंने उनकी बात क्यो नही मानी ? मैं क्या नही गई ? मैं क्या न मरी ? मैं देर क्या कर रही हू ? मैं मरती क्यो नही हू ? मैं अभी मरूगी ।' यह सोचकर कुन्द धीरे धीरे सरोवर की सीढ़िया उतरने लगी । उसका शरीर काप रहा था । फिर भी वह माता

की आज्ञा का पालन करने के लिए धीरे धीरे आगे बढ रही थी। तभी पीछे से किसी न उसकी पीठ पर उगली छुआकर कहा, 'कुन्द !' कुन्द न अधकार म देखकर पहिचान लिया, नगेन्द्र थे। वह बाले 'कुन्द ! तू उसी दिन क्यो न मरी ?'

कुन्द मन म सोच रही थी नगेन्द्र ! क्या यही तुम्हारा सुचरित्र है ? यही तुम्हारी शिक्षा है ? यही सूर्यमुखी के प्रणय का प्रतिफल है ? छि-छि ! तुम चोर हो ! चार से भी हीन ! चोर सूर्यमुखी के गहने चुराता परन्तु तुम उनका प्राण लेने बठे हो ? सूर्यमुखी ने तुम्हे अपना सर्वस्व दिया है। तुम चोर बनकर क्या चुराने आए हो ? नगेन्द्र ! तुम्हारा मरना ही अच्छा है। यदि साहस हो तो तुम स्वय जाकर डूब मरो।

परन्तु कुन्दनन्दिनी ! तुम चार के स्पर्श से कापी क्यो ? चार की बात सुनकर तुम्हारे बदन म रोमाच क्या हो उठा ? पुष्करिणी का पानी स्वच्छ है। उसमें तारे काप रहे ह। डूबेगी तो डूब क्या नहीं मरती ? शायद तू मरना नही चाहती !

तुम कुन्द ! कलकत्ता जाओगी ?

कुन्द ने कुछ न कहा। उसने आखें पोछीं बाली नहीं।

'कुन्द, क्या तुम इच्छापूर्वक जा रही हो ?'

'इच्छापूर्वक ! हरि ! हरि ! कुन्द ने फिर आख पोछी। कहा फिर भी कुछ नही।

'कुन्द ! रोती क्या हो ?' कुन्द अब रो पडी। नगेन्द्र कहने लगे सुनो कुन्द ! मैंने इतने दिनो तक बहुत कष्ट सहे परन्तु अब सहा नहीं जाता। नही कह सकता कि किस कष्ट से जी रहा हू। अपने कष्ट को भुलाने के लिए मैं शराब पीता हू। अब नही सहा जाता। मैं तुम्हे छोड नहीं सकता कुन्द ! विधवा विवाह चल रहा है। मैं तुमसे विवाह करूगा, परन्तु तुम्हारे कहने पर ही विवाह होगा।

'नहीं, यह नही होगा।

क्या कुन्द ? क्या विधवा विवाह शास्त्रसम्मत नही है ?

कुन्द बोली, 'नहा।'

'नही क्यो ? बोलो, बोलो बोलो ! गृहिणी बनोगी या नही ? मुझसे प्रेम करोगी या नही ?'

'नही ।'

'नगेन्द्र ने सहस्त्र मुख से अपरिमित प्रेमपूर्ण बातें की, परन्तु कुन्द ने 'नही' ही कहा ।

कुन्द आकाश मे देखकर बोली, 'नही । विधवा विवाह शास्त्रो मे हो, तब भी नही । कुन्द डूब कर मरी क्यों नही ?'

× × ×

हरिदासी उपवन-गृह म जाकर एकाएक देवेन्द्र बाबू बन गई ।

देवेन्द्र ने हुक्का पीना प्रारम्भ किया । उसके मुह से धुआ उडने लगा । शराब को पट मे डाला । वह माथ पर चढने लगी । दो चार गिलास के बाद बोलना आरम्भ किया नौकर लोग गुरु महाशय, गुरु महाशय !' कहकर उधर आए ।

तभी सुरेन्द्र आकर देवेन्द्र के पास बैठे और उनकी कुशल पूछकर बोले, आज तुम फिर वहा गए थे ?

तुम्हारे कान मे खबर पहुच गई ?

'यही तुम्हारा भ्रम है देवेन्द्र ! तुम समझते हो कि तुम सब कुछ छिपाकर करते हो और कोई जान नही सकता, परन्तु मुहल्ले के सभी लोग इसे जानते हैं ।'

मैं किसी से छिपाना नही चाहता । किससे छिपाऊ ?'

'इसे तुम अपनी बहादुरी समझते हो ? तुम्हे यदि कुछ लज्जा होती तो हम कुछ भरोसा होता । तुम्हे शर्म होती तो वैष्णवी बनकर गाव-गाव ठोकरें न खाते ।'

'कैसी वैष्णवी भाई साहब ! माथा चक्कर तो नही खा गया है आपका ?'

मैंने वह काला मुह नही देखा । देखता तो चाबुक से सब वैष्णवी-पन भुला देता । फिर देवेन्द्र के हाथ से गिलास लेकर सुरेन्द्र बोले, 'अभी जरा होश-हवास रहने दो । मेरी बातें सुनकर तब पीना ।

'आज बहुत क्रुद्ध हो । हेमवती की हवा तो नही लग गई ?'

सुरेंद्र बाबू बोले 'तुम और भी सर्वनाश करने के लिए अब वैष्णवी बने हो।'

'क्या तुम नहीं जानते, तुमने सुना था कि तारा मास्टर का विवाह एक देव-कन्या से हुआ था? इस समय वह विधवा होकर उस दत्तबाड़ी में रहती है। उसे देखने गया था।'

'क्या इतनी दुर्वृत्ति से तृप्ति नहीं हुई जो उस अनाथ लड़की का विनाश करने गए थे? देवेन्द्र, तुम इतने बड़े पापिष्ठ इतने नृशंस, इतने अत्याचारी हो कि अब हम तुम्हारा सहवास न कर सकेंगे।'

सुरेंद्र ने इतनी जलन से बातें कहीं कि देवेन्द्र चुप हो गए। वह गम्भीरतापूर्वक बोले 'तुम मुझपर क्रोध न करो। मेरा चित्त मेरे वश में नहीं है। मैं सब कुछ त्याग कर सकता हूं, परन्तु उसकी आशा नहीं त्याग सकता। मैंने जिस दिन उसे देखा था उसी दिन से मैं उसके सौंदर्य पर लट्टू हो गया था। मेरी आंखों ने इतना सौंदर्य और कहीं नहीं देखा। तभी से मैं उसे देखने के लिए कितने प्रयत्न करता रहा हूं, कह नहीं सकता। जब कुछ कर नहीं सका, तो मैंने वैष्णवी का रूप धारण किया। तुम कोई आशंका न करो वह स्त्री बहुत साध्वी है।

तब जाते क्या हो वहां?'

'केवल उसे देखने के लिए। उसे देख, उससे बातें कर उसे गाना सुनाकर मुझे जैसी शान्ति मिलती है उसे कह नहीं सकता।

'मैं तुमसे सच कहता हूं कि यदि तुम इस दुष्प्रवृत्ति का त्याग न करोगे तो तुम्हारे साथ मेरी बातचीत आज से बंद। मैं तुम्हारा शत्रु हो जाऊंगा।

तुम ही मेरे एकमात्र प्रिय हो। मैं अपना सब कुछ छोड़कर भी तुम्हें नहीं छोड़ सकता परन्तु यदि तुम मुझे छोड़ना चाहो, तो वह भी स्वीकार है। मैं कुन्दनन्दिनी की आशा नहीं छोड़ सकता।

'तब ऐसा ही हो। तुमसे मेरी यही अन्तिम भेंट है। यह कहकर सुरेंद्र चले गए। देवेन्द्र एकमात्र बंधु के विच्छेद से बहुत दुःखी हो कुछ देर उदास बैठे रहे। फिर बोले 'दूर हो। संसार में कौन किसका है? मैं ही अपना हूं। यह कहकर उन्होंने गिलास में भरकर शराब पी। उनका

चित्त प्रसन्न हो उठा। वह मस्त होकर गा उठे।

सब लोग चले गए। देवेन्द्र नौका-शून्य नदी के बीच अकेले बठे तरगो म डुबकिया लगा रहे थे। आकाश म चाद की चादनी थी। तभी खिडकी के पास कुछ खडखडाहट हुई। देवेन्द्र बाले, 'कौन झिलमिली उठा रहा ह ?' उन्होने खिडकी से देखा, एक स्त्री भागी जा रही थी। स्त्री को भागती देख देवेन्द्र खिडकी खोलकर उधर कूदकर उसके पीछे लडखडाते हुए चले।

स्त्री भागना चाहती तो भाग जाती, परन्तु इच्छापूवक नही भागी। देवेन्द्र ने उसे पकडा, परन्तु अधकार मे पहिचान नही सके। शराब की झोंक मे बोले, 'वाह वा !' वह उसे कमरे के अन्दर खींचकर ले आए और बाले, 'तुम किसकी औरत हो ? आज तुम लौट जाओ। अमावस्या को पूडी-हलवा से पूजा करूगा। आज थोडी ब्राण्डी पिए जाओ।' यह कहकर उन्होंने उस औरत को कमरे मे बैठाकर उसके हाथ मे शराब का गिलास दे दिया।

वह स्त्री उसे हाथ मे लिए बैठी रही।

तब वह रोशनी उठाकर स्त्री के मुह के पास ले गया। बोला, 'तुम कौन हा जी ? तुम तो पहिचानी-पहिचानी-सी जान पडती हो। कही देखा ह तुम्ह।'

मैं हीरा हू।'

'हीरा !' कहकर वह उछल पडे। फिर हीरा को प्रणाम कर हाथ म गिलास लिए उसकी स्तुति करके पूछा, 'तुम्हारा कसे आना हुआ, क्या मैं जान सकता हू ?'

हीरा समझ गई थी कि हरिदासी वैष्णवी और देवेन्द्र बाबू एक ही है, किन्तु देवेन्द्र वैष्णवो के वेश म दत्त घराने म क्यो आते-जाते हैं यह जानना सहज नही था। हीरा बडा दु साहस करके इस समय देवेन्द्र के घर आई थी। वह चुपचाप बाग मे प्रवेश कर खिडकी के किनारे खडी देवेन्द्र की बात-चीत सुन रही थी। सुरेन्द्र के साथ देवेन्द्र की बातें सुन हीरा अपना काय सिद्ध कर लौट रही थी। जाते समय असावधानी से झिलमिली टूट गई। इसी मे बखेडा खडा हो गया।

हीरा भागने के लिए व्यस्त थी। देवेन्द्र ने उसके हाथ में फिर शराब का गिलास दिया। हीरा बोली, 'आप पीजिए।' कहते ही देवेन्द्र ने उसे गले के नीचे उतार लिया। उस गिलास से देवेन्द्र की शराब की मात्रा पूरी हो गई। दो-एक बार लुढ़ककर देवेन्द्र सो गए तो वह उठकर भागी।

उस रात हीरा दत्त घराने में नहीं गई। वह अपने घर जाकर सो गई। दूसरे दिन सवेरे जाकर सूर्यमुखी को देवेन्द्र का समाचार दिया। 'देवेन्द्र कुन्द के लिए वैष्णवी बनकर आता है' हीरा ने यह न कहा कि कुन्द निर्दोष है। सूर्यमुखी भी यह नहीं समझी। सूर्यमुखी ने देखा था कि कुन्द वैष्णवी के साथ चुपके चुपके बातें करती थी। इसलिए सूर्यमुखी ने उसे दोषी माना। हीरा की बातें सुन सूर्यमुखी के नेत्र लाल हो गए। कमल ने भी सब सुना। कुन्द को सूर्यमुखी ने बुलाया। उसके आने पर बोली, 'कुन्द, हम लोग पहिचान गए हैं कि हरिदासी वैष्णवी कौन है। हम लोग यह भी जान गए हैं कि वह तेरा कौन है। मैं तुझे भी पहिचान गई हूं। हम लोग ऐसी स्त्रियों को घर में स्थान नहीं देते। तू, अभी घर से निकल जा नहीं तो हीरा तुझे झाड़ू मारकर निकाल देगी।

कुन्द का शरीर कांपने लगा। कमल ने देखा कि वह गिरना चाहती थी। कमल उसे पकड़कर सोने की कोठरी में ले गई। उसने धीरज से कहा हीरा जो कहती है कहने दे। मुझे उसकी बात पर विश्वास नहीं है।'

६ :

आधी रात को घर के सब लोगों के सो जाने पर कुन्दनन्दिनी बाहर निकली। एक ही वस्त्र से उसने सूर्यमुखी का घर त्याग दिया। रात बहुत अंधेरी थी। कुछ-कुछ बादल भी थे। रास्ता अज्ञात था।

कुन्दनन्दिनी की इच्छा था कि वह एक बार नगेन्द्रदत्त को देखा

कोठरी मे खिडकी की राह से देखले । एक बार उन्हे देखने से उसकी छाती ठण्डी हो जाएगी । वह उनका शयन-गृह जानती थी ।

कुन्दनन्दिनी मुग्ध नेत्रों से उस खिडकी से आते हुए प्रकाश को देखने लगी । वह वहा जा न सकी । उनके शयनागार के सामने कुछ आम के पेड थे । कुन्दनन्दिनी उन्ही के नीचे खिडकी की ओर मुह करके बैठ गई । रात अंधेरी थी । चारो ओर अन्धकार था । वृक्ष-वृक्ष पर जुगनुओ की चमक होती और बुझती थी । आकाश मे काले बादल दौड रहे थे । केवल दो-एक तारे कभी मेघ मे छिपते और कभी चमकने लगते थे । वायु के सचार से खिडकिया दरवाजे दीवार मे टकराकर आवाज कर रह थे । उल्लू मकान की चोटी पर बैठकर बोल रहा था । कही कही कुत्ते बहुत तेजी से दौडते थे ।

धीरे-धीरे एक खिडकी का शीशा खुला । एक मनुष्य उस प्रकाश मे दिखाई दिया । वह नगेन्द्र ही था । यदि तुम उस झाड के नीचे बैठे छोटे कुन्द-कुसुम को देखते ! यदि तुम खिडकी से उसके हृदय के शब्द को सुन पाते नगेन्द्र ! तुम प्रदीप की ओर पीठ किए खडे हो, एक बार प्रदीप के सामने खडे हो, कुन्द बडी दुखियारी है । खडे रहो ऐसा होने से उसे उस सरोवर के स्वच्छ शीतल जल मे तारो की झिलमिलाहट याद न आएगी ।'

उल्लू बोला 'तुम हट जाओ, कुन्दनन्दिनी डरेगी । देखो बिजली ! तुम भी हटो, कुन्दनन्दिनी डरेगी । वह देखो, फिर काले बादल पवन पर सवारी कर दौड रहे हैं । आधी-पानी आएगा । कुन्द को अब कौन आश्रय देगा ?

तुमने खिडकी खोल रखी है । झुण्ड-के झुण्ड पतगें आकर तुम्हारे कमरे में प्रवेश करेंगे । कुन्द ! पतग जल मरता है । कुन्द यही चाहती है । सोचती है, वह क्यो न जली, मरी क्यों नहीं ?'

नगेन्द्र शीशा बद करके हट गए । निदयी ! इसमे तुम्हारी क्या हानि थी ? नहीं, तुम्हें जगने की आवश्यकता नहीं, सोओ । कुन्दनदिनी यही चाहती है ।'

सहसा खिडकी मे अधेरा हुआ । आंखों के आसू पोंछकर कुन्दनदिनी

उठी। उसे जो राह मिली, उसी पर चली। कहा चली ? ताड़-वृक्ष ने पूछा कहा जाती हो ? आम्रवृक्ष ने पूछा 'कहा जाती हो ?' उल्लू ने कहा कहा जाती हो ? खिड़किया कहने लगी जाती हो तो जाओ, मैं अब नगेन्द्र का न दिखाऊगी। फिर भी कुन्दनन्दिनी फिर फिर कर देखती चली गई।

कुन्द चलती रही। आकाश में बादल दौड़ रहे थे। बिजली हसी, फिर हसी ! हवा चली मेघ गर्जा, कुन्द कहा जा रही थी ?

आधी उठी। पहिले शब्द हुआ। फिर धूल उड़ी। वृक्षो के पत्ते तोड़ती हुई हवा आई। फिर वृष्टि आई। कुन्द कहा जाएगी ?

कुन्द ने बिजली के प्रकाश म राह के किनारे एक मामूली घर देखा। मकान के चारो किनारे मिट्टी की चहारदीवारी थी। कुन्दनन्दिनी उसी के आश्रय म ओसारे के पास जा बैठी। वह दरवाजे से पीठ लगाकर बैठी। गृहस्थ जग रहा था। उसे भय हुआ। आशका से वह दरवाजा खोलकर देखने आया। उसने देखा, आश्रयहीन एक स्त्री थी। उसने पूछा 'तुम कौन हो ?

कुन्द कुछ न बोली।

कौन हो री तुम ?

कुन्द ने कहा, 'वर्षा के कारण यहा ठहर गई हू।

गृहस्थ ने घबराकर के पूछा क्या, फिर कहो ?

वृष्टि के कारण ठहर गई हू।

इस आवाज को तो मैं पहिचानती हू। ठीक है घर के अन्दर आ जाओ।

गृहस्थ कुन्द को घर के भीतर ले गया। उसने आग से रोशनी जलाई। कुन्द ने देखा वह हीरा थी।

समझ गई, तिरस्कार से भागी हो। कोई भय नहीं। मैं किसी से न कहूगी। एक दो दिन मेरे यहा रहो।'

हीरा का मकान प्राचीर से घिरा था। कुल दो कोठरिया थीं। उन्हे लीप-पोत कर साफ किया हुआ था। हीरा के मकान मे हीरा और उसकी धाय रहती थी। एक कोठरी मे धाय और एक कोठरी म हीरा सोती

थी। हीरा ने कुद को अपने पास बिछौना बिछाकर रात को सुलाया। कद लटी, किन्तु माई नहीं। दूसरे दिन भी उसने उसे नहीं रखा। उसने कहा 'आज और कल दो दिन यहीं रहो। देखो बुरा न मानना। बाद में जहाँ इच्छा हो, चली जाना। कुद वहीं रही। उसने कुद को इच्छानुसार छिपा रखा। घर में ताला लगा दिया, जिससे धाय भी न देखे। बाद में बाबू के घर काम पर गई। दोपहर में आकर उसने कुद को न्हाया और आहार कराया। फिर ताला लगाकर चली गई। रात में दोनों सो गई।

रात में किसी ने दरवाजे की खिडकी खटखटाई। एक आदमी कभी-कभी रात में खिडकी खडखडाता था। बाबू के घर का दरबान रात को बुलाने आया करता था।

परन्तु उसके हाथ की इतनी धीमी आवाज नहीं होती थी। हीरा उठकर देखने गई। बाहर का दरवाजा खोलकर देखा, एक स्त्री थी। पहिले पहिचान न सकी, बाद में उसने पहिचाना 'कौन गंगाजली! बडा भाग्य। गंगाजली अहीरन का मकान दवीपुर में था देवेन्द्र बाबू के मकान के पास। उसकी आयु तीस-पैंतीस वर्ष की थी साडी पहिने थी हाथ में चूडी मुँह में पान था। गंगाजली को देखकर हीरा ने कहा गंगा जल! अभिनन्दन में तुम्हें अवश्य पाऊँ किन्तु इस समय क्या है?

गंगाजली बोली तुझे देवेन्द्र बाबू ने बुलाया है।'

हीरा ने हँसकर कहा, 'मुझे कुछ मिलेगा?'

मालती बोली 'तेरा मन है। अपने मन की बात तू जानती है। अब चल। गंगाजली का नाम मालती था।

हीरा ने कुन्द से कहा मुझे बाबू के घर जाना है। कहकर उसने दिया बुझा दिया और सज-धजकर मालती के साथ चली गई।

देवेन्द्र की बैठक में हीरा अकेली गई। देवेन्द्र देवी आराधना कर रहे थे। होश हवास ठीक थे। हीरा से उन्होंने कहा, 'हीरा! उस दिन मैं अधिक शराब पीने के कारण तुम्हारी बातों का अर्थ न समझ सका। मैंने यहाँ जानने के लिए तुम्हें बुलाया है कि तुम उस दिन यहाँ क्या आई थी?'

'आपके दर्शन करने।'

देवेन्द्र हंसकर बोले, 'तुम बहुत बुद्धिमती हो। भाग्य से नगेन्द्र बाबू ने तुम्हारी जैसी दासी पाई है। तुम हरिदासी वैष्णवी का भेद जानने आई थी। मेरे मन की बात जानने आई थी। तुम जान भी गई हो। मैं भी तुम्हारे सामने उस बात को छिपाऊंगा नहीं। इसमें सन्देह नहीं कि तुमने अपने मालिक का काम कर मालिक से इनाम पाया होगा। अब मेरा एक काम करो, मैं भी पुरस्कार दूंगा।'

देवेन्द्र ने हीरा को रुपयों का लाभ देकर कुन्द को बचने को कहा। यह सुनकर हीरा क्रोध से लाल हो गई। हीरा ने उठकर कहा 'महाशय, मुझे दासी समझकर आपने ऐसी बात की। इसका उत्तर मैं दे नहीं सकती। मैं अपने मालिक से कहूंगी। वही इसका उपयुक्त उत्तर देंगे।'

यह कह हीरा वेग से चली गई। देवेन्द्र हतोत्साहित हो चुपचाप बैठ रहे। फिर उन्होंने जी भरकर शराब पी।

: १०

हीरा सवेरे उठकर अपने काम पर गई। दत्त घराने में बड़ा झमेला था। कुन्द मिल नहीं रही थी। सब समझ गए कि वह क्रोध करके चली गई। नगेन्द्र ने सुना कि कुन्द घर छोड़ गई। यह किसी ने नहीं बताया कि क्यों गई। नगेन्द्र ने सोचा, मैंने जो उससे कहा था उसे सुनकर कुन्द मेरे घर रहना अनुचित समझकर चली गई। यदि यही है तो कमल के साथ क्यों नहीं गई? नगेन्द्र का मुख मलिन हो गया। किसी ने उनके पास जाने का साहस नहीं किया। उन्हें यह भी मालूम हो गया कि सूर्यमुखी का क्या दोष था? उन्होंने सूर्यमुखी से बोलना बन्द कर दिया। गांव गांव में उन्होंने कुन्दनन्दिनी का पता लगाने के लिए स्त्रियां छोड़ीं।

सूर्यमुखी ने क्रोध से जो कुछ भी कहा परन्तु वह कुन्द का जाना सुनकर बहुत अधीर हुई। कमलमणि ने उन्हें समझा दिया था कि देवेन्द्र

न जा कहलाया था, वह विश्वास के योग्य नही था, क्योकि देवेन्द्र मे गुप्त प्रेम कभी छिपा न रहता। कुन्द के स्वभाव से यह कभी सम्भव भी नही था। सूर्यमुखी ने ये सब बातें समझी तो उसे अधिक पछतावा हुआ। उस पर पति के अनुराग से उन्हें और भी व्यथा हुई। उन्होंने सैकड़ों बार कुन्द को और अपने को गालियां दी। उन्होंने भी कुन्द की खोज मे आदमी भेजे।

कमल का कलकत्ते जाना रुक गया। कमल ने किसी को गाली नही दी। सूर्यमुखी का भी कुछ तिरस्कार नही किया। कमल ने अपने गले से हार उतारकर सब पडोसिनो को दिखाकर कहा 'जो कुन्द को लाएगा उस मैं यह हार दूगी।'

हीरा यह सब देख सुन रही थी, परन्तु कुछ बोली नही। कमल के हार को देखकर उसे लालच आया, परन्तु उसने लोभ को दबा लिया।

दूसरे दिन कुन्द और हीरा बिछौना बिछाकर सोईं। कुन्द और हीरा दोनो को नीद न आई। कुन्द अपने दुखी मन से जगती रही। हीरा अपने मन के सुख दुख से जगती रही। वह भी कुन्द की तरह बिछौने पर लेटकर चिंता करती रही। वह जिस चिंता म थी, वह मुह से कहने योग्य नही थी बहुत गुप्त थी।

'हीरा ! छि छि ! तेरा मुह देखने म इतना खराब नही, फिर हृदय म इतना छल-कपट क्या ? क्या ? विधाता ने उसे धोखा क्यो दिया ? विधाता ने उसे धोखा दिया है तो वह भी सबको धोखा देना चाहती है। यदि हीरा सूर्यमुखी के आसन पर बठा दी जाती, तो क्या यह छल-कपट होता ? हीरा कहेगी, नही।' हीरा को हीरा के आसन पर बठाया, इसीलिए हीरा हीरा है। लोग कहते हैं 'यह सब दुष्टता का दोष है।' दुष्ट कहता है, 'मैं भला आदमी होता परन्तु लोगो के दोष से दुष्ट हो गया हू।' लोग कहते हैं, 'पाच क्या नही सात हुआ ?' पाच कहता है, 'म सात होता यदि मुझ और दो मिल जाते।' हीरा यही सोच रही थी।

हीरा सोच रही थी अब क्या करू ? यदि कुन्द को दत्त के घर न लाऊ तो कमल हार देगी, गृहिणी भी कुछ देंगी। बाबू का क्या छोड़

दूगी ? और यदि कुन्द को देवेन्द्र को दू, तो नकद रुपए मिलेंगे परन्तु यह तो मैं प्राण रहते कर न सकूगी। कुन्द को वही पहुचा दू-ा ठीक है। किंतु कुन्द न जाएगी। अब वह उस घर की ओर मुह करने योग्य नही है, परन्तु सब लोग बाबू भया कहकर ले जाए, तो जा भी सकती है और एक बात मेरे मन मे है। ईश्वर जो करें ! सूयमुखी का भला नही लगेगा, परन्तु सूयमुखी से मुझे इतनी चिढ क्या है ? उसने कभी मेरा बुराई नही की बल्कि प्रेम करती है और मेरा भला ही करती है। तब चिढ क्यो ? क्या इसे हीरा नही जानती ? हीरा क्या नही जानती ? वह क्या बताए ? सूयमुखी सुखी है, मैं दुखी हू इसी से मुझे चिढ है। वह बडी है मैं छोटी हू, वह मालकिन है मैं दासी हू इसीलिए मुझे उससे बहुत चिढ है। यदि कहा कि ईश्वर ने उसे बडा बनाया है उसका क्या दोष ? मैं उससे द्वेष क्यो करू ? मैं कहूगी ईश्वर ने मुझे द्वषी बनाया है, इसमे मेरा क्या दोष है ? मैं कुछ भी उनका अहित नही चाहती किन्तु यदि उनका अहित करने मे मेरी भलाइ हो तो क्यो करू ? अपना भला कौन नहीं करता ? जरा हिसाब लगाकर देखू क्स क्या होना है। इस समय मुझे कुछ रुपए की आवश्यकता है। अब मैं दासी का काम करना नही चाहती। रुपए कहा से मिलेंगे ? दत्त घराने के सिवाए और रुपए कहा है ? दत्त घराने से रुपए लेने का यही तरीका है। सभी जानते हैं कि कुन्द पर नगेन्द्र बाबू की दृष्टि लगी है। बाबू इस समय कुन्द के उपासक हैं। बडे आदमी मन मे आते ही सब कुछ कर सकते है। नही करते केवल सूयमुखी के लिए। यदि दोनो में कुछ झगडा हो जाए तो वह सूयमुखी की इतनी खातिर भी न करेंगे। इस समय मुझे वही करना होगा जिससे दोनो मे झगडा हो जाए।

ऐसा होने से ही बाबू कुन्द की पूजा करेंगे। कुन्द मूर्ख है। मैं उसे अपने वश मे ला सकूगी। मैंने उसका बहुत कुछ उपाय कर रखा है। मैं चाहू तो कुन्द से सब कुछ करा सकती हू। यदि बाबू कुन्द की पूजा आरम्भ करें तो वह कुन्द के आज्ञाकारी हो जाएगे। मैं कुन्द को अपनी आज्ञाकारिणी बना लूगी। पूजा का प्रसाद मैं भी पाऊगी। यदि दासी का काम न करना पडे तो बहुत ही अच्छा हो। दस दुगा क्या करती

हैं। नगेन्द्र का कुदनन्दिनी दूगी, किंतु एकाएक नही। पहिले कुछ दिन छिपाए रहकर देखू। विच्छेद मे बाबू का प्रेम पक जाएगा। उसी समय कुन्द को सामने कर दूगी। तब भी यदि सूयमुखी का भाग्य न फूटे तो उसका भाग्य ही बडा ह। तब तक मैं बैठी-बैठी कुन्द को उठना-बैठना सिखाऊगी।

ऐसी कल्पना कर हीरा वैसे ही आचरण म लग गइ। उसन छल करके धायी को अन्यत्र भेज दिया और कुन्द को खूब छिपाकर रखा। कुन्द उसको सहृदय देखकर सोचने लगी 'हीरा जैसी औरत और नहीं है। कमल भी मुझे इतना नही चाहती, जितना यह चाहती है।

हीरा ने सोचा कि नगेन्द्र की आखो मे सूयमुखी का विष बना देना चाहिए। वास्तविक काम यही है। हीरा उनके अभिन्न हृदया को पथक पृथक करने की चेष्टा करने लगी।

एक दिन सवेर ही हीरा मालिक के घर आकर काम-काज पर लगी। कौशल्या परिचारिका भी दत्त घराने मे काम करती थी। हीरा न उसस कहा, कुशि बहिन! आज मेरा बदन टूट रहा है। तू मेरा काम कर दे।'

कौशल्या हीरा से डरती थी। उसने स्वीकार कर लिया। वह बोली 'करूगी क्या नही? शरीर का भला बुरा होना सबके लिए है।

हीरा कौशल्या चाहे जो उत्तर देती उसी पर कलह करती थी। वह बोली, 'कुशी! तेरा दिमाग चढा है? गाली देती है।'

कौशल्या चौंककर बोली, 'मैंने गाली कब दी?'

'आह मर! कहती है, कब गाली दी? शरीर अच्छा बुरा ही ता है री? क्या मैं मर रही हू?'

'मरे, तो मर। इस पर व्यर्थ नाराज क्यो होती हो? एक दिन तो मरना होगा ही। यमराज न तुझे भूलेंगे और न मुझे।'

तुझे ही न भूलें। तू मुझसे बुढ्ढे के मर। मर मर मर। भरी खोपडी न खा।'

अब कौशल्या रह न सकी। वह बोली तू मेरी खोपडी न खा! तू मर। तुझे यम न भूले। मुह जली!' झगडे मे हीरा से कौशल्या

तज थी। इसलिए हीरा न मात खाई।

हीरा प्रभु-पत्नी के पास शिकायत करने गई। जाते समय हीरा के होठों पर मुस्कुराहट थी। हीरा जब सूर्यमुखी के सामने पहुंची तो उसने रो रोकर घर भर दिया।

सूर्यमुखी ने विचार किया कि दोष हीरा का ही था फिर भी उन्होंने हीरा के अनुरोध स कौशल्या को डपट दिया। उससे सन्तुष्ट न होकर हीरा बोली, 'इसे छुड़ा दो। नही तो मैं न रहूंगी।

यह सुनकर सूर्यमुखी हीरा पर क्रुद्ध हुई। वह बोली, हीरा, तेरा बड़ा दिमाग चढ गया है। तूने पहिली गाली दी और तेरी ही बात पर इसे छुड़ा दूं? मैं यह अन्याय नहीं कर सकती। तेरी जाने की इच्छा हो तो तू जा सकती है।

हीरा यही चाहती थी। अच्छा जाती हूं' कहकर हीरा रोती हुई बाहरी महल में बाबू के पास पहुंची।

हीरा को रोती देखकर नगेन्द्र ने पूछा, 'हीरा रोती क्यों है?'

मेरा हिसाब करने की आज्ञा दीजिए बाबू जी।

'यह क्या? क्या हुआ?

'मुझे जवाब मिला है। मा जी ने मुझे जवाब दिया है।

तूने क्या किया था?

'कुशी ने मुझे गाली दी थी। मैंने शिकायत की। उन्होंने उसकी बात पर विश्वास कर मुझे जवाब दे दिया।

नगेन्द्र ने हसते हुए कहा 'यह तो मतलब की बात नहीं हुई हीरा? असल बात कह।

'असल बात है कि मैं यहां न रहूंगी।

'क्यो?'

'मा जी का मुह बहुत खुल गया है। किसे क्या कह दें कुछ ठीक नही रहा?'

'क्या?'

'उस दिन कुन्द को उन्होंने क्या नहीं कहा? वह सुनकर ही कुन्द ने घर त्याग दिया। हम लोगों को भय है कि किसी दिन हम लोगों को

क्या कह डालें। तो मैं वह सुनकर जी न सकूगी। इसी से पहिले ही हटी जाती हू।'

वे क्या बातें थी ?'

'मैं आपके सामने लज्जा के मारे कह नही सकती।'

नगेन्द्र की आखो के समक्ष अधकार छा गया। वह हीरा से बोले, 'आज तू घर जा। कल मैं तुझे बुलाऊगा।'

हीरा की कामना सिद्ध हुई। उसने इसीलिए कौशल्या से झगडा किया था।

सूर्यमुखी को एकान्त म ले जाकर नगेन्द्र ने कहा, 'क्या तुमने हीरा का विदा कर दिया है ?' सूर्यमुखी बोली, 'हा।' फिर उन्होने हीरा और कौशल्या का हाल विस्तार से कह सुनाया। सुनकर नगेन्द्र न कहा, 'तुमने कुन्दनन्दिनी को क्या कहा था ?'

नगेन्द्र ने देखा, सूर्यमुखी का मुह सूख गया था ?

'कोई दुर्वाक्य कहा था क्या ?

सूर्यमुखी कुछ देर चुप रही। बाद म उन्होने कहा, 'तुम मेरे सर्वस्व हो। तुम्हारे आगे मैं क्यो छिपाऊ ? आज तक कभी कोई बात तुमसे छिपाई नही। फिर आज क्यो एक पराई बात तुमसे छिपाऊ ? मैंने कुन्द को दुर्वाक्य कहा था। बाद म तुम क्रुद्ध होगे, इसलिए तुम्हारे सामने नही कहा। अपराध क्षमा करो। मैं सब बातें कहती हू।

तब सूर्यमुखी ने हरिदासी वैष्णवी के परिचय से कुन्दनन्दिनी के तिरस्कार तक बिना कपट सब हाल कह दिया। कहकर उन्होने अत म कहा, मैं कुन्दनन्दिनी से नाराज हो अपने मन-ही मन मर रही हू। देश-देश म उसकी खोज करा रही हू। यदि मैं पता पाती तो लौटा लाती। मुझे अपराध न देना।

तुम्हारा विशेष अपराध नही है। तुमने कुन्द के बारे म जैसा कलक सुना था, उस पर कौन भली स्त्री उसे मीठी बात कहती, या घर म स्थान देती ? किन्तु एक बार तुम्हे विचार कर देखना था कि बात सच्ची है या नही ?'

'उस समय यह बात नही सोची। अब पछता रही हू।

'सोचा क्यों नहीं ?

'मेरे मन में भ्रान्ति उत्पन्न हो गई थी।' यह कहते कहते सूर्यमुखी ने नगेन्द्र के चरणों के पास जमीन पर बैठकर नगेन्द्र के दोनों चरणों को आखों के आंसुओं से भिगो दिया। फिर बोली, 'तुम मेरे प्राणाधार हो। इस पापी मन के अन्दर कोई बात होगी तो तुमसे न छिपाऊंगी। मेरा अपराध क्षमा करना।'

'तुम्हें कहना न पड़ेगा। मैं जानता हूं कि तुमने सन्देह किया था कि मैं कुन्दनन्दिनी पर अनुरक्त हूं।'

सूर्यमुखी नगेन्द्र के चरणों में मुंह छिपाकर रोने लगी। वह बोली मैं तुमसे क्या कहूं ? मैंने जो दुःख पाया है, उसे क्या तुमसे कह सकती हूं ? मरने के बाद भी दुःख होगा, इसलिए मैं मरी नहीं। नहीं तो जब मैंने सुना था, मैं तभी मरना चाहती थी। जबानी मरना नहीं, मैं यथार्थ में मरना चाहती थी। मेरा अपराध क्षमा करना।'

नगेन्द्र ने बहुत देर चुप रहने के बाद अंत में कहा 'सूर्यमुखी ! यह सब अपराध मेरा है। तुम्हारा कुछ भी अपराध नहीं है। मैं सचमुच तुम्हारे सामने अपराधी हूं। मैं यथार्थ में तुम्हें भूलकर कुन्दनन्दिनी में रम गया था। मैंने जो यन्त्रणा पाई है और जैसी यन्त्रणा पा रहा हूं, उसे तुमसे क्या कहूं ? तुम समझती होगी कि मैंने चित्त के दमन की चेष्टा नहीं की ऐसा न समझना। मैं आप ही अपना जैसा तिरस्कार करता हूं उतना तिरस्कार तुम न करोगी। मैं पापात्मा हूं मेरा चित्त वश में न आ सका।

सूर्यमुखी अब सहन न कर सकी। वह हाथ जोड़कर कातर स्वर में बोली, जो तुम्हारे मन में आए उसे रहने दो मेरे सामने कुछ न कहो। तुम्हारी हर बात से मेरी छाती में भाला सा चुभ रहा है। मेरे भाग्य में जो था वह हुआ। और सुनना नहीं चाहती। यह सब मुझे न सुनना चाहिए।

नहीं ऐसा नहीं है सूर्यमुखी ! तुम्हें और भी सुनना होगा। जब बात उठी ही है तब मन की बातें खोलकर कहता हूं। मैं बहुत दिन से कहना चाहता था। मैं इस संसार का त्याग करूंगा, मरूंगा नहीं। मैं

विश चला आऊंगा। घर मकान और ससार म अब सुख नही रहा। अब तुमसे मुझे कोई मोह नही, मैं तुम्हारे अयोग्य हू। अत मैं तुम्हार पास रहकर तुम्ह क्लेश न दूगा। मैं कुदनदिनी को ढूढता हुआ देश देशान्तर म फिरूगा। तुम इस घर की गृहिणी रहो। मन म समझना कि तुम विधवा हो। जिसका पति एसा नीच है वह विधवा नही तो और क्या है? परन्तु मैं पामर होऊ या जो होऊ, तुम्ह धोखा न दूगा। मेरा प्राण दूसरे पर लग गया है। यह बात तुमसे स्पष्ट कहे देता हू। यदि कुदनदिनी को भूल गया तो फिर आऊगा नही तो तुम्हार साथ यही अतिम भेंट है।'

यह बात सुनकर सूयमुखी कई मुहूर्त तक पत्थर की मूर्ति की तरह पथ्वी की ओर देखती रही। फिर जमीन मे मुह छिपाकर रोई। व्याध जसे मरे हुए जीव की यत्रणा देखता है वसे ही नगेन्द्र सूयमुखी का दुख देखते रहे। वह मन ही मन कह रहे थे ठीक है, जब मरना ही है तो आज कल क्या? प्रभु की इच्छा मैं क्या करू? क्या मैं इसका प्रतिकार कर सकता हू? मैं मर सकता हू, परन्तु क्या उससे सूयमुखी बचेगी?

नही नगेन्द्र! तुम्हारे मरने स सूयमुखी न बचेगी। किन्तु अब तुम्हारा मरना ही अच्छा था।'

थोडी देर म सूयमुखी उठ बैठी। उसने स्वामी के पर पकडकर कहा, एक भिक्षा मागती हू।

वह क्या?'

केवल एक महीना घर म रहो। इस बीच अगर कुदनदिनी न मिले तो तुम देश त्याग करना। मैं मना न करूगी।'

नगेन्द्र चुपचाप बाहर चले गए। उन्होंने एक महीना रहना स्वीकार किया। सूयमुखी भी समझ गई। वह नगेन्द्र का जाते हुए देख रही थी। सूयमुखी ने मन म कहा, मेरे सवस्व धन! मैं तुम्हारे पर का काटा निकालने के लिए अपने प्राण दे सकती हू। तुम पापिनी सूयमुखी के लिए देशत्याग करोगे? तुम बडे हो या मैं?'

हीरा की नौकरी गई, परन्तु दत्त घराने से उसका सम्बन्ध बना रहा। उस घराने के समाचारों के लिए वह व्यस्त रहती थी। वहां के लोगों के मिलने पर वह उनसे गप शप करती थी। वह जान लेती थी कि सूर्यमुखी के प्रति नगेन्द्र का अब कैसा भाव है।

एक दिन एक झगड़ा खड़ा होने की सम्भावना हुई। देवेन्द्र का हीरा का परिचय देने के समय से मालती हीरा के घर अधिक आने लगी थी। एक दिन अकस्मात् मालती ने आकर एकाएक खिड़की खोलकर किवाड़ ढकेल दिए। उसने देखा घर भीतर से बन्द था। वह समझ गई कि उसके अन्दर कोई आदमी रहता है।

मालती ने हीरा से कुछ नहीं कहा परन्तु मन में सोचने लगी कि वह आदमी कौन है? सोचा शायद कोई पुरुष हो। इस बात को उसने मन में स्थान नहीं दिया। उसके मन में सन्देह हुआ कि शायद कुन्द वहां हो। कुन्द के गायब होने की बात मालती ने सुनी थी। अब उसने सन्देह दूर करने के लिए शीघ्र ही उपाय किया। हीरा बाबू के घर से हिरन का एक बच्चा लाई थी। वह वहां बंधा रहता था। एक दिन मालती उसे खिला रही थी। उसने हीरा के अनजान में उसका बन्धन खोल दिया। हिरन का बच्चा छूटते ही भागा। हीरा उसे पकड़ने बाहर गई।

हीरा दौड़ गई तो मालती व्यग्र भाव से उसे बुलाने लगी हीरा, अरी हीरा। हीरा के दूर जाने पर मालती सिर पकड़कर रो उठी। 'ए मा, मेरी हीरा को क्या हो गया?' यह कहकर रोती हुई वह कुन्द के दरवाजे पर आ गई, ए कुन्द-कुन्द! शीघ्र बाहर आ। देख हीरा को क्या हो गया! तब कुन्द ने घबराकर दरवाजा खोल दिया। मालती उसे देखकर हंसी और भाग गई।

कुन्द ने दरवाजा बन्द कर लिया। कहीं हीरा क्रुद्ध न हो इसलिए कुन्द ने हीरा से कुछ नहीं कहा।

मालती ने देवेन्द्र को यह समाचार दिया। देवेन्द्र ने स्थिर किया कि वह स्वयं हीरा के घर जाकर निर्णय करेंगे इस पार या उस पार, परन्तु

उस दिन रात कुछ अधिक हो गई थी। इसलिए कुछ कर न सके। दूसरे दिन जाने का विचार किया।

कुन्द अब पिंजरे की चिडिया थी। सूयमुखी ने तो उसे घर निकाल ही दिया था, किन्तु उस लज्जा के स्रोत के साथ प्रेम का स्रोत भी आकर मिल गया था। परस्पर की चोट से प्रेम प्रवाह बढ गया था। बडी नदी मे छोटी नदी डूब गई थी। सूर्यमुखी का किया अपमान धीरे-धीरे समाप्त होकर नगेन्द्र ही अब उसके मन मे था। धीरे धीरे कुद पश्चाताप करने लगी, "मैं क्यो घर छोडकर चली आई ? दो बाते सुनने से मेरी क्या हानि थी ? मैं नगेन्द्र को देखती तो थी। अब तो एक बार भी नही देख पाती। तब क्या मैं फिर लौटकर उस घर मे जाऊ ? यदि वह मुझे निकाल न दें तो जाऊ, किन्तु बाद म यदि फिर निकाल दें तो ?" कुदनदिनी अपने मन म यही सोचा करती थी। दत्त के घर लौट जाना ठीक है या नही किन्तु यह विचार अधिक करना न पडा। दो-चार दिन म ही उसने स्थिर किया कि जाना ही उचित ह, नही तो अब प्राण न बचेगा। अब विचार यही रह गया कि जाने से सूयमुखी फिर निकाल देगी या नही। अन्त म कुद न यही विचार किया कि सूर्यमुखी निकाल दे या ज. करे, जाना ही ठीक है।

परन्तु क्या वह फिर उस आगन मे जाकर खडी होगी ? अकेली वहा जाते बडी लज्जा जान पटती थी। यदि हीरा अपने साथ लेजाए तो हो सकता था, परन्तु हीरा से कहते बहुत लज्जा जान पडी। उससे वह कह न सकी।

कुद का हृदय नगेन्द्र का न देखना सह न पाया। एक दिन कुद शय्या से उठी। उस समय हीरा सोई हुई थी। वह चुपचाप दरवाजा खोलकर बाहर निकली। बहुत ही शीतल मद वायु बह रही थी। स्पष्ट दिखाई देने वाली वृक्षो की चोटियों पर नीला आकाश छा रहा था। कुन्द रात का अनुमान कर दत्त के घर की ओर चली। जाने का यही अभिप्राय था कि वह एक बार नगेन्द्र को देख पाए। सोचा छिपकर उन्हे देख जाने म क्या हानि है, परन्तु छिपकर देखगी कैसे ? कुद ने सोच विचार कर यही स्थिर किया कि रात रहते दत्त के घर के पास इधर-उधर घूमेगी।

किसी प्रकार नगेन्द्र को खिडकी मे या मकान मे या राह के किनारे मे देख पाएगी। वह सबरे उठते हैं कुन्द उन्हे देख सकेगी। उन्हे देखकर वह फिर लौट आएगी।

कुन्द रात्रि के अन्त म नगेन्द्र के घर की ओर चली। महल के पास पहुचकर उसने देखा कि अभी सबेरा होने मे कुछ देर थी। कुन्द ने राह पर देखा नगेन्द्र नही थे छत पर देखा नगेन्द्र नही थे। उसने सोचा वह झाड के नीचे बैठ जाए। झाड छितराया हुआ था। झाड के नीचे अधकार था। दो एक झाड के फल और पत्ते पानी म टपक पडे। उसके सिर के ऊपर वृक्ष पत्ती झाड रहे थे। महल के रखवाले दरवाजा द्वारा दरवाजे खोलने और बद करने की आवाज सुनाई दी। अत म उषा के आगमन की हवा चलने लगी। कुन्द का भरोसा छूटने लगा। अब वह झाऊ के नीचे बैठी नही रह सकती थी। सवेरा हुआ तो कोई देख लेगा। वह लौट जाने को उठी। महल से सटा बाग था। नगेन्द्र सबेरे उठकर वहा घूमा करते थे। शायद वह इस समय वहा टहल रहे हो। उस स्थान को बिना देखे कुन्द लौट नही सकी। वह बाग चहारदीवारी से घिरा था। दरवाजे की खिडकी खुली थी या बद यह देखने के लिए कुन्द उस ओर गई। उसने देखा, दरवाजा खुला था। कुन्द ने उसमे प्रवेश किया। वह बाग के किनारे किनारे धीरे धीरे आकर एक मौलश्री के पेड के नीचे खडी हो गई।

बाग के बीच म संगमरमर का बना एक चबूतरा था। उस पर चढी हुई तरह तरह की लताए थीं। उसके किनारे किनारे मिट्टी मे लगी लताओं की डालिया थीं।

कुन्दनन्दिनी ने मौलश्री की ओर से बाग की ओर दृष्टि फेरी परतु नगेन्द्र दिखाई नही दिए। उसने लता-मण्डप की ओर देखा। वहा पत्थर से बनी चिकनी चौकी पर कोई सोया हुआ था। कुन्दनन्दिनी ने समझा वह नगेन्द्र है। देखने के लिए वह धीरे धीरे वृक्ष की आड लेकर आगे बढी। उसी समय लता मण्डप के भीतर का मनुष्य उठकर बाहर निकला। कुन्द ने देखा वह नगेन्द्र नहीं, सूर्यमुखी थी।

कुन्द डरकर एक खिला हुई कामिनी की आड म खडी हो गई। भय

से आगे न बढ सकी। पीछे भी पैर न रख सकी। उसने देखा कि सूयमुखी बाग मे फूल चुनती हुई टहलने लगी। जिधर कुन्द छिपी थी, उसी ओर सूयमुखी धीरे-धीरे बढने लगी। कुद ने देखा कि अब तो पकड ली गई। अन्त म सूयमुखी न कुद को देख लिया। दूर से न पहिचान कर उन्होन पूछा 'कौन है ?'

कुन्द भय से चुप रह गई। पैर हिले नही। सूयमुखी समीप आ गई। उन्होन विस्मय के साथ कहा, कौन, कुन्द है क्या ?'

कुन्द न तब भी उत्तर न दिया। सूयमुखी ने कुन्द का हाथ पकडकर कहा, 'कुन्द आओ बहिन आओ। अब मैं तुम्ह कुछ न कहूगी।'

यह कहकर सूयमुखी कुद को अत पुर ले गई।

× × ×

उधर रात्रि मे देवेन्द्र अकेले वेश बदलकर शराब पीकर कुदनदिनी की खोज म हीरा के घर पहुचे। उन्होने वहा खोजकर देखा, परन्तु कुन्द वहा नहीं थी। हीरा मुह पर कपडा रखकर हसन लगी। देवेन्द्र ने क्रुद्ध होकर पूछा, हसती क्यो है तू ?'

हीरा बोली, 'तुम्हारा दुख देखकर। पिंजरे का पछी उड गया। अब आप उसे नही पाएगे। अत म हीरा ने कहा 'सवेरे उसे न देखकर मैंने बहुत खोजा। खोजते-खोजते बाबू के मकान पर गई। अब वहा उसका बडा आदर है।'

देवेन्द्र हताश होकर लौट रहे थे, परन्तु उनके मन का सन्देह न मिटा। इच्छा थी कि और कुछ देर ठहरकर सब बातें समझकर जाए। आकाश म एक बादल देखकर बोले, 'शायद पानी आयेगा।' फिर इधर-उधर फिरन लगे। हीरा की इच्छा थी कि देवेन्द्र तनिक बठें, परन्तु वह स्त्री थी, अकेली रहती थी। फिर रात का समय था, इसलिए बैठने को कह न सकी। देवेन्द्र बोला, तुम्हारे घर म छाता है ?'

हीरा के घर छाता नही था। देवेन्द्र बोला, 'तुम्हारे यहा कुछ देर बठकर पानी की हालत देख सकता हू ? कोई दोष तो नही है ?'

हीरा बोली 'जो दोष था, वह तो आपके मेरे घर मे आने से ही पूरा हो गया।

'तब मैं बैठ सकता हू ?'

हीरा ने कोई उत्तर न दिया। देवेन्द्र वही बैठ गए।

तब हीरा न चौकी पर साफ-सा बिस्तर बिछाकर देवन्द्र को बठाया और सन्दूक से एक छोटा चादी का हुक्का निकाला। उसने अपन हाथ से हुक्के म ठडा पानी डाला, मीठा, कड़ुवा तम्बाकू भरकर पत्ते की नलकी बना दी।

देवन्द्र जेब से शराब की बोतल निकालकर बिना पानी मिलाए ही पी गए और तब रगीन होकर देखा हीरा की आखें बहुत सुदर थी। वास्तव म उसकी आखें बहुत सुदर थी।

देवेन्द्र बोल, 'तुम्हारी आखें बहुत अच्छी हैं। हीरा मुस्कराई।

देवेन्द्र न देखा एक किनारे एक तानपूरा पड़ा था। देवेन्द्र गुनगुनाकर गाना गाते हुए उस तानपूरे को लेकर बैठ गए। देवेन्द्र बोल, 'यह तानपूरा कहा से पाया ?'

एक सिपाही से लिया था। देवेन्द्र ने उसका तार ठीक करके उस बजाया। उससे गला मिलाकर मधुर स्वर से मधुर पद गाया। हीरा अपने को भूल सी गई। वह यह भूल गई कि वह हीरा थी और वह देवेन्द्र। वह मन मे सोच रही थी कि वह स्वामी और वह उनकी पत्नी थी। वह मन म सोच रही थी कि विधाता ने दोनो का एक दूसर क लिए बनाया है। हीरा के मन की बात मुह से प्रकट हो गइ। देवन्द्र ने हीरा क मुह स सुना कि हीरा ने देवन्द्र का मन-ही मन आत्मसमपण कर दिया था।

बात प्रकट हो जाने पर हीरा को चतन्य हुआ। उसका सिर चकरा गया। तब उसने पागल की तरह घबराकर कहा आप शीघ्र मेरे घर स चले जाए।

'यह क्या हीरा ?

आप शीघ्र जाइए नही तो मैं चली जाती हू।

मुझे घर स निकालती क्यो हो ?

'आप जाइए, नही तो मै लोगो का बुलाती हू। आप मरा सत्यानाश करन को क्यो आए है ?'

हीरा पागल हो गई।

'इसी को कहते हैं स्त्री चरित्र।'

'स्त्री चरित्र ? स्त्री चरित्र बुरा नही। तुम जैसे पुरुषो का चरित्र घृणित है। तुम लोगो म धमज्ञान नही, किसी की भलाई-बुराई की समझ नही, तुम केवल अपना ही सुख ढूढते हो। तुम इसी चेष्टा म रहत हो कि कसे किसी स्त्री का सवनाश कर सको। नही तो तुम मरे घर म क्यो बैठते ? क्या तुम मेरा सवनाश करन आए थे ? क्या तुमने मुझे कुल्टा समझा है ? तुम किस साहस से यहा बैठे ? मैं कुल्टा नही हू। हम दुखी लोग है, मेहनत करके खाती हैं। हम लोगो को कुल्टा होने का अवसर नही है। किसी वडे आदमी की वहू होने पर, मैं कह नहो सकती कि मैं क्या होती ?

देवेन्द्र की भौंहे तन गइ। यह देखकर हीरा प्रसन्न हुई। वह सिर झुकाकर देवेन्द्र की ओर देखकर कोमल स्वर मे बोली, 'प्रभु ! मैं आपके रूप-गुण को देखकर पागल हो गई थी, परन्तु मुझ कुल्टा न समझिए। मैं आपको देखन स ही सुखी हू। आपने मरे घर म बैठना चाहा और मैंन मना नही किया, परन्तु मैं अबला स्त्री हू। मेरे मना न कर सकन पर भी क्या आपका बैठना उचित था ? आप सपापिष्ठ हैं। आपन इसी वहान घर म प्रवेश कर सवनाश की चेष्टा की। अब आप यहा से जा सकत हैं।

देवेन्द्र न और एक घूट शराब पीकर कहा, 'अच्छा, अच्छा हीरा ! तुमन अच्छा व्याख्यान दिया। तुम एक दिन मेरे ब्रह्मसमाज मे व्याख्यान दोगी क्या ?

हीरा क्रोध से कातर होकर बोली, 'मैं आपके उपहास के योग्य नही हू। यदि कोई अधम आपस प्रेम करे, तो उसके प्रेम का तमाशा करना अच्छा नहो। मैं धार्मिक नही, धम नही समझती, धम म मेरा मन भी नही है। फिर भी कुल्टा न होन की जो बात मैंन कही, उसका कारण यह था कि अपन मन म मेरी प्रतिज्ञा है कि आपके प्रेम के लोभ म पड कर मैं कलक न लूगी। यदि आप मुझसे जरा भी प्रेम करते तो मैं यह प्रतिज्ञा न करती। मुझमे धमज्ञान नही है। मैं आपके प्रेम की तुलना म

मलय को तृणवत् समझती, परन्तु जब आप प्रेम नहीं करते तो मैं व्यय के लिए यह सब मलय क्या खरीदूं ? किस लोभ से मैं अपना गौरव छोडूं ? आप युवती को अपने हाथ में पाकर कभी नहीं छोड़ते। आप मेरी पूजा ग्रहण करना चाहें, तो कर सकते हैं, परन्तु शायद कल ही आप मुझे भूल जाएंगे। यदि याद नहीं रखें और मेरी बात का आप उपहास करें तो ऐसी दशा में मैं क्या आपकी दासी बनूं ? जिस दिन आप मुझे प्रेम करेंगे, उस दिन मैं आपकी दासी होकर चरण-सेवा करूंगी।'

देवेन्द्र ने हीरा के मुंह से तीन प्रकार की बातें सुनीं। उन्होंने उसके मन की अवस्था समझ ली। उन्होंने मन में सोचा, 'मैं तुम्हें पहिचान गया। अब मैं तुम्हें उंगली पर नचा सकता हूं। जिस दिन चाहूंगा उसी दिन तुम्हारे द्वारा काम सिद्ध कर लूंगा।' यही समझकर वह चले गए।

उन्होंने हीरा का सम्पूर्ण परिचय नहीं पाया।

१२

दोपहर का समय था। श्रीश बाबू आफिस से निकले। सब लोग भोजन के बाद सो रहे थे। कमलमणि सूई लेकर कार्पेट सी रही थी। उसके सिर के बाल कुछ छितराए हुए थे।

उसी समय एक दासी ने एक पत्र लाकर कमल के हाथ में दिया। कमल ने देखा, सूर्यमुखी का पत्र था। खोलकर पत्र पढ़ा फिर पढ़ा। फिर पढ़कर दुःखी हो चुप रह गई। पत्र में लिखा था 'बहिन ! तुम कलकत्ता जाने के बाद हम लोगों को भूल गईं ? क्या तुम नहीं जानतीं कि तुम्हारे समाचार के लिए मैं सदा व्यग्र रहती हूं ?

तुमने कुन्दनन्दिनी के विषय में पूछा था वह मिल गई है। यह सुनकर तुम सुखी होगी। इसके अतिरिक्त और भी एक प्रसन्नता की बात है। कुन्द के साथ मेरे पति देवता का विवाह होगा। यह विवाह मैं

स्वय कराऊगी। विधवा विवाह जब शास्त्र-सगत है तो हानि क्या है ? दो एक दिन मे विवाह होगा। तुम सम्मिलित न होगी। होती तो निमत्रण देती। यदि हा सके, तो फूल शय्या के समय आना, क्योकि तुम्हे देखने की बडी इच्छा है।

कमलमणि पत्र का कुछ अथ न समझ सकी। उसने सतीश बाबू से सलाह ली। कमलमणि ने उन्हे चिट्ठी पढकर सुनाई। पूछा, 'बताओ सत्तू, इसका अथ क्या है ?' सत्तू बाबू माता के हाथ का सहारा ले उठ खडे हुए और कमलमणि की नाक चबाने लगे। कमलमणि सूयमुखी को भूल गई। कमलमणि फिर सूयमुखी का पत्र पढने लगी, सोचा, यह सत्तू बाबू का काम नही, अब मेरे उन मत्री के होने से काम चलेगा। क्या उनका ऑफिस समाप्त नही हुआ ?

यथासमय श्रीशचन्द्रजी ने ऑफिस से आकर कपडे बदले। कमलमणि उन्हे जलपान कराकर सतीश को ले क्रोध करके चारपाई पर सोई। श्रीशचन्द्र हसते हुए हक्का लेकर कोच पर जा बैठे।

वह हुक्के से बोले, 'हुक्के ! तुम पेट म गगाजल धारण किए हो। तुम्हारे सिर पर अग्नि है। तुम कहो कि जिसने मुझपर क्रोध किया है, वह अभी मुझसे बातचीत करे। नही तो मैं तुम्हारे माथे पर आग रख-कर दस चिलम तम्बाकू फूक डालूगा। यह सुनकर कमलमणि उठी और उनके मुख पर आखें घुमाकर कहा और दस चिलम तम्बाकू न फूका, एक चिलम फूकने मे ही मैं एक बात नहीं कर पाती।' यह कहकर उसने हुक्के म चिलम उतारकर एक ओर रख दी।

कमलमणि ने पत्र पढकर कहा, 'इसका अथ करो, नही तो आज मन्त्रिवर का महीना कट जाएगा।'

अग्रिम महीना दो तो अथ करू।'

कमलमणि श्रीशचन्द्र के मुह के पास मुह ले गई। श्रीशचन्द्र ने महीना चुकता कर लिया। तब उन्होने पत्र पढकर कहा, 'यह सब एक तमाशा है।

क्या तमाशा है ? तुम्हारी बात या पत्र ?'

यह पत्र।

'आज मैं मन्त्री महाशय का डिस्चार्ज करूंगी। उनकी खोपड़ी में इतनी बुद्धि नहीं ? स्त्री क्या ऐसे तमाशे को जबान पर ला सकती है ?

'जो तमाशा नहीं करते, वे तमाशा किया करते हैं।'

मुझे तो जान पड़ता है कि यह सत्य है।

'यह क्या सत्य हो सकता है ?

झूठ कहूं तो कमलमणि के माथे की कसम।

श्रीशचन्द्र ने कमल का गाल दबाया। कमल बोली, 'अच्छा ! झूठ कहूं तो कमलमणि की सौतिन के माथे की कसम।'

तब तो केवल उपहास समझना चाहिए।'

इस समय विधाता सूर्यमुखी का माथा खा रहे हैं। भैया ने शायद जबरदस्ती विवाह किया है।'

श्रीशचन्द्र कुछ सोचने लगे। फिर बोले, मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा। नगेन्द्र को पत्र लिखूं ? क्या कहती हो ?'

कमलमणि राजी हुई। श्रीशचन्द्र ने व्यंग के साथ पत्र लिखा। नगेन्द्र ने जो पत्र का उत्तर दिया वह इस प्रकार था—

भाई ! मुझ से घृणा करना। घृणास्पद से अवश्य घृणा करनी चाहिए। मैं यह विवाह करूंगा। यदि सारा संसार मेरा त्याग करे, तब भी मैं यह विवाह करूंगा। नहीं तो मैं पागल हो जाऊंगा। पागल होने में अधिक शेष कुछ नहीं है।

यह बात कहने पर शायद और किसी बात के कहने की आवश्यकता नहीं। शायद तुम लोग भी मुझे विवाह न करने की बात न कहोगे।

यदि कहो तो मैं तर्क करने को तैयार हूं।

कोई कहे कि विधवा विवाह हिंदू धर्म के विरुद्ध है, तो मैं उसे विद्यासागर का प्रबंध पढ़ने को देता हूं। जब उनके जैसे शास्त्र विशारद महा-महोपाध्याय कहते हैं कि विधवा विवाह शास्त्रोचित है तब कौन इसे अशास्त्रीय कहेगा ? यदि कहो कि यह शास्त्रोचित होने पर भी समाज-सम्मत नहीं है तो मैं इस विवाह को करके समाज से च्युत होऊंगा। तब इसका जवाब है कि इस गोविंदपुर में मुझे कौन समाजच्युत करेगा, किसमें इतनी सामर्थ है ? यहां मैं ही समाज हूं। फिर भी मैं तुम लोगों

का मान रखन के लिए यह विवाह छिपकर करूगा। कोई जान न पाएगा।

तुम इसम आपत्ति न करना। तुम कहोगे कि दो विवाह नीति-विरुद्ध हैं। तुमने कैसे जाना कि यह नीति विरुद्ध है। भारतवष म यह बात पहिले से होती आई है।

तुम कहोगे कि यदि एक पुरुष की दो स्त्रिया हो सकती है, तब एक स्त्री के दो स्वामी क्यो न हो? इसका उत्तर यह है कि एक स्त्री के दो स्वामी होने की सम्भावना है, एक पुरुष के दो विवाह से इसकी सम्भावना नही है। एक स्त्री के दो स्वामी हो तो सतान का पितृ-निरूपण नही होता पिता सतान का पालनकर्त्ता है।

अतिम सूयमयी है। अपनी स्नेहमयी पत्नी के लिए मैं सौत का काटा क्या बोऊ? इसका उत्तर यह है कि सूयमुखी इस विवाह मे दुखी नही। उन्होने स्वय विवाह का प्रसग उठाया है। उन्होने मुझ इसम प्रवत्त किया है। वही इसका उद्योग कर रही हैं। तब और किसको आपत्ति ह?

फिर किसलिए मेरा यह विवाह निदनीय है?'

कमलमणि पत्र पढकर बोली, किस कारण से निदनीय है यह परमात्मा जानें परन्तु यह कैसा भ्रम ह? पुरुष शायद कुछ नही समझते। जो हो, आप तयारी करें। हम लोगो को गोविंदपुर जाना ही होगा।

क्या तुम विवाह को रोक सकोगी?

'रोक सकूगी तो भैया के सामने मरूगी।'

यह तुम कर न सकोगी। अपनी नई भौजाई की नाक काटकर ला सकती हो। चलो, इसी उद्देश्य से चलें।

दोनो गोविंदपुर जान की तयारी करन लगे। दूसरे दिन सवेर नाव की सवारी स गोविंदपुर की यात्रा की और यथासमय वहा पहुच गए।

मकान मे जान से पूव ही दासियो से भेंट हुई। कितनी ही स्त्रिया कमलमणि को नाव म उतारने आई थीं। उन्ह और उनके पति को व्यग्रता थी कि विवाह हो गया या नही। परन्तु दोनो म से किसी न भी किसी स यह बात नहा पूछी। यह लज्जा की बात थी। व कैसे लोगो स यह बात पूछत?

बहुत घबराहट के साथ कमलमणि ने अंतःपुर में प्रवेश किया। घर में प्रवेश कर उन्होंने पूछा, सूर्यमुखी कहाँ है?

दासियों ने बता दिया कि सूर्यमुखी शयनागृह में है। कमलमणि दौड़कर उधर गई।

उसने पहिले किसी को न देखा। क्षण भर इधर उधर देखा। अंत में देखा कि घर के कोने में एक बन्द खिड़की के पास सिर झुकाकर एक स्त्री बैठी थी। कमलमणि को उसका मुहँ दिखाई न दिया परन्तु पहिचान गई कि वह सूर्यमुखी ही थी। सूर्यमुखी उसके पैरों की आवाज सुनकर उठकर उसके पास आई। सूर्यमुखी को देखकर कमलमणि यह पूछ न सकी कि विवाह हो गया या नहीं। सूर्यमुखी के कन्धे की हड्डी निकल आई थी। देवदारु की तरह सूर्यमुखी का शरीर धनुष समान झुक गया था। सूर्यमुखी की खिले कमल जैसी आँखें धस गई थी। सूर्यमुखी का चाँद जैसा मुहँ लम्बा पड़ गया था। कमलमणि समझ गई कि विवाह हो गया। उसने पूछा, कब हुआ?

सूर्यमुखी ने कहा, कल।

उस समय वहाँ दोनों आकर बैठी चुपचाप रोने लगी। किसी ने कुछ नहीं कहा। सूर्यमुखी कमल की गोद में मुहँ छिपाकर रोने लगी। कमलमणि के आँसू उसकी छाती और बालों पर गिरने लगे।

तब तीसरे प्रहर दोनों आपस में स्पष्ट बातें करने में समर्थ हुईं तो सूर्यमुखी ने कमलमणि को कुन्दनन्दिनी से विवाह का आमूल वृत्तान्त परिचय दिया। उसे सुनकर कमलमणि ने आश्चर्य से कहा, तो यह विवाह तुम्हारे ही प्रयत्न से हुआ है। तुमने अपनी मृत्यु का उद्योग आप ही क्यों किया?'

सूर्यमुखी बोली, मैं कौन हूँ? मेरा अपना भाई का तो प्रेम आता। उन आत्माराम चन्द्र को देख आना, तब समझना कि वह कैसे सुखी है। मैंने अपना जिसमें जो उनके सुख का ... तो क्या उसमें मेरा जीवन सार्थक नहीं हुआ? मैं किस मुहँ ... उनको दुःखी रखती? जिनके एक क्षण के दुःख में मैं मरने की इच्छा करती थी, उन्हें मर्मान्तक दुःख देकर मैं क्या करती? वह त्यागी होने का उद्योग कर रहे थे।

उससे मुझे क्या सुख था ? मैंने कहा मुझे तुम्हारे सुख मे ही सुख है। तुम कुन्द से विवाह कर लो।'

और तुम सुखी हुई ?

'अब मेरी बात क्या पूछती हो ? मैं कौन हू ? यदि कभी पति के पैर में कंकड़ धसा देखा है तो मेरे मन में यही आया है कि मैंने वहां अपनी छाती क्यों नहीं रख दी ? पति मेरी छाती पर पैर रखकर जाते।'

सूर्यमुखी चुप रह गई। उसकी आंखों के आंसुओं से कपड़ा भीग गया। उसने पूछा 'किस देश में लड़कियां होने से लोग उन्हें मार डालते हैं ?'

कमल बोली, क्या लड़की होने से यह होता है ? यह सब तो भाग्य मे होता है।

'मेरे भाग्य से बढ़कर किसका भाग्य था ? ऐसी भाग्यवती और कौन है ? किसे ऐसा स्वामी मिला है ? रूप, ऐश्वर्य सम्पदा तो तुच्छ बातें है, इतने गुण किसके पति में हैं ? मेरा भाग्य बुरा नहीं है फिर ऐसा क्यों हुआ ?'

'यह भी भाग्य ही है।'

तब इस ज्वाला से मन क्या जलता है ?'

'तुम आज अपने पति का मुंह आह्लादपूर्ण देखकर सुखी हो। फिर भी कहती हो कि इस ज्वाला से मन जलता है ? ये दोनों ही बातें सच हैं।'

'दोनों ही सच हैं। मैं उनके सुख से सुखी हूं परन्तु उन्होंने मुझे घर से ठुकरा दिया है। मुझे ठुकराने से ही उन्हें इतना सुख है। आगे सूर्यमुखी कुछ न कह सकी। उसका कण्ठ रुद्ध हो गया और आंखें भर आई।' सूर्यमुखी की बातों का अर्थ कमलमणि समझ गई। उसने कहा 'तुम्हें घर से ठुकराया है इसलिए तुम्हें जलन हो रही है। तब क्या कहती हो कि मैं मरी हूं ? तुम्हारे हृदय का आधा भाग आज भी मैं से भरा है, नहीं तो आत्मविसर्जन करके इस अनुताप क्या ?'

'अनुताप नहीं करती, अच्छा ही किया, इसमें कोई सन्देह नहीं। परन्तु मरने की यन्त्रणा तो होती ही है। अपना मरना ही अच्छा समझ

कर मैं अपने हाथो आप मरी हू। इसस क्या मरत समय तुम्हार आग रोऊ भी नही ?

सूयमुखी रो दी। कमल उसके सिर को अपनी गोद मे लेकर हाथ स पकड रही। बातो स सारी बातें प्रकट नही हो रही थी। हृदय-ही-हृदय म बातें चल रही थी। कमलमणि समझ रही थी कि सूयमुखी कितनी दुखी है। सूयमुखी समझ रही थी कि कमलमणि उसके दुख को समझ रही थी।

दोनो ने रोना छोडकर आखें पोंछी। सूयमुखी न अपनी बात को छोडकर अय बातें चलाइ। सतीश को प्यार किया और उसस बातचीत की। कमल के साथ सूयमुखी की बातें हुईं। अधिक रात तक दोनो न बातचीत की। अत म सूयमुखी न स्नेह क साथ कमल का आलिगन कर सतीश को गोद मे ले उसका मुख चूमा। विदा होत समय सूयमुखी की आखा स फिर आसू बह चल। उन्होन सतीश को आशीर्वाद दिया, 'तुम अपन मामा की तरह गुणवान हो। इससे बडा आशीर्वाद मैं और नही जानती।

सूयमुखी न स्वाभाविक स्वर म बातें की थी परन्तु फिर भी उसके कण्ठ-स्वर स कमलमणि चौंक पडी। वह बोली, 'भाभी ! तुम्हे क्या हो रहा है ?'

'कुछ भी तो नही कमल !

'मुझसे न छिपाओ सूयमुखी ! मैं तुम्हारे ही लिए इस समय चल कर आई हू।

तुमसे छिपाने लायक मेरी कोइ बात नही कमल !'

कमलमणि विश्राम करन चली गइ। सूयमुखी की एक ही बात छिपाने की थी। वह कमल सवेरे ही जान सकी। उसने सवेर सूयमुखी क शयनागार म जाकर देखा कि सूयमुखी वहा नही थी। शय्या पर एक पत्र पडा था। पत्र देखत ही कमलमणि का सिर चकरा गया। पत्र बिना पढे ही वह सब समझ गई कि सूयमुखी चली गई। वह अपन सिर पर हाथ रखकर शय्या पर बठ गई। उसन कहा, म कल यहा स जान

के समय क्या न समझी ? सतीश भी अपनी मा को रोती देखकर रो पड़ा।

१३

कमलमणि ने पत्र खोलकर पढ़ा। पत्र कमल के ही नाम लिखा गया था।

'जिस दिन मैंने पति देवता स्वामी के मुह से सुना कि उन्हें मुझसे अब कोई सुख नहीं है, वह कुन्दनन्दिनी के लिए पागल हो जाएंगे, प्राण त्यागेंगे, उसी दिन मैंने मन मे सकल्प किया कि यदि कुन्दनन्दिनी को पाऊंगी तो उसे स्वय से स्वामी का समर्पित कर, उन्हें सुखी करूंगी। कुन्दनन्दिनी को उन्हें देकर यह घर छोडने का निश्चय भी उसी दिन कर लिया था। अब कुन्दनन्दिनी को पति देवता के सुपुर्द करके स्वय घर छोडकर जा रही हूं।

कल विवाह होने के पश्चात रात्रि मे ही घर छोड जाती, पर पति की जिस सुख-कामना के लिए मैंने अपना वध किया था उसे दो एक दिन अपनी आखो से देखकर जाने की इच्छा थी और तुम्हें भी देखकर जाना चाहती थी। इसीलिए तुम्हें आने को लिखा था। मैं जानती थी कि तुम अवश्य आओगी। मेरी दोनो इच्छाए पूर्ण हुई। मेरे प्राण पति सुखी हैं, तुमसे विदा ले चुकी, अब मैं जाती हूं।

तुम्हें यह पत्र मिलने तक मैं बहुत दूर चली जाऊंगी। तुमसे कहा नही इसलिए कि तुम मुझे जाने न देती। अब तुमसे यही भिक्षा मागती हूं कि मेरी खोज न करना।

भरोसा नहीं कि फिर तुमसे भेंट होगी। कुन्दनन्दिनी के रहते मैं अब भिखारिनी बनकर देश विदेश फिरूंगी भिक्षा मागकर जीवन व्यतीत करूंगी। मेरा सब गहना तिजोरी मे रखा है ताली तकिए के नीचे रखी है। गहने पति-देवता को देकर कहना कि उन्हें कुन्द को दे दें।

सूयमुखी की खोज के लिए आदमी भेजने की हलचल मच गई। नगेन्द्र ने चारा ओर आदमी दौडाये। दासिया पानी के घडे फेंककर दौडी। आत्मीय लोग गाडी लेकर इधर उधर दौडे। गाव के लोग खेत और घाट पर खोजने-देखने लगे। ज्योतिषी के घर, शिव-मन्दिर के दालान मे, अन्यान्य ऐसे ही स्थानो पर लोग-बाग विचार करने लगे।

श्रीशचन्द्र कमल को भरोसा देन लगे, 'वह कहा जाएगी ? पाव आध कोस चलकर कहीं बैठ गई होंगी। अभी पता लग जाएगा।' परन्तु जब तीन घण्ट बीत गए और सूर्यमुखी का कोई पता न चला तो नगेन्द्र स्वय उनकी खोज मे निकले। कुछ देर धूप मे चलने पर उन्होंने मन मे कहा, 'मैं यहा ढूढता हु, परन्तु हो सकता है सूयमुखी घर पहुच गई हो।' यह सोचकर वह लौट पडे। घर आकर देखा तो सूयमुखी का कोई पता नहीं था। वह फिर बाहर निकले, परन्तु फिर लौट आए। इसी तरह दिन बीत गया।

श्रीशचन्द्र ने जो कहा था, वही सही निकला। सूर्यमुखी कभी पैदल घर से बाहर नहीं गई थी। मकान से आधा कोस दूर एक पुष्करिणी के किनारे जाकर वह थककर लेट गइ। एक रसोईदार ने पता लगाते-लगात वहा जाकर उन्हें देखा। वह उन्ह पहिचानकर बोला, 'जी, आप घर चलिए।

सूयमुखी ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने फिर कहा, 'चलिए, सब लोग बहुत घबराए हुए हैं।' तब सूयमुखी बोली 'मुझे लौटाने वाला तू कौन है ?' वह डरा परन्तु खडा रहा। सूयमुखी बोली, 'यदि तू यहां खडा रहेगा, तो मैं पोखर मे डूब मरूगी।'

रसोईदार चल पडा और उसने नगेन्द्र का समाचार दिया। नगेन्द्र पालकी लेकर स्वय वहा आए परन्तु सूयमुखी वहा न मिलीं। समीप में खोज की, परन्तु कही कोई पता न चला।

सूयमुखी वहा से उठकर एक वन मे चली गई थीं। वहा एक बूढी से उनकी भेंट हुई। वह लकडी बटोरने आई थी। सने सुना था कि सूयमुखी का पता लगाने पर पुरस्कार मिलेगा, इसलिए वह भी खाज मे थी। उसने सूयमुखी को देखकर पूछा, 'तुम कौन हो ? मालकिन हो

क्या ?'

'नहीं।'

'हा तुम्ही मालकिन ही हो।'

'तुम्हारी मालकिन कौन है ?'

'बाबू घराने की बहूजी।'

'मेरे शरीर पर क्या सोना लदा है, जो मैं बाबुओ के घर की बहू हू ?'

बूढी ने सोचा कि बात सही थी। वह लकडी चुनती हुई दूसरे वन म निकल गई।

पूरा दिन व्यथ गया। रात का भी कोई पता न चला। दूसरे दिन, तीसरे दिन भी कोई पता न चला। फिर भी खोज म कोई कमी न हुई। ढूढने वाले सूयमुखी को पहिचानते नही थ।

श्रीशचन्द्र ने कलकत्ते मे जाकर ढूढना आरम्भ किया। कमलमणि गोविन्दपुर मे ही रहकर खोज कराने लगी।

१४

कुन्दनन्दिनी ने जिस सुख की अभिलाषा भी नहीं की थी उसे वह सुख मिला। वह नगेन्द्र की स्त्री हो गई। सूयमुखी चली गई तो उसके मन म पछतावा हुआ। उसने अपने मन मे कहा, कसे कुसमय मे सूय मुखी ने मेरी रक्षा की थी। वह रक्षा न करती तो पता नहीं मैं कहा जाती ? आज वह मेरे लिए गह त्यागकर चली गई। मैं सुखी न होकर मर जाती तो अच्छा था।'

तीसरे प्रहर नगेन्द्र शय्या पर लेटे थे। कुन्दनन्दिनी उनके सिरहाने बैठकर पखा झल रही थी। दोनो चुप थ। सम्पूण सुख होने पर ऐसा नही होता।

सूयमुखी के जाने के बाद इन लोगा को सम्पूण सुख नही रहा। कुन्दनन्दिनी अपने मन म सोचती, 'क्या करू, जिससे मैं जैसी थी, वैसो ही हो जाऊ ?' कुन्दनन्दिनी न पूछा, 'क्या करने से हम जसे थे फिर वसे ही हो सकते ह ?'

नगेन्द्र चिढकर बोले, जैसी थी, वैसी ही हो जाओ। क्या मुझस विवाह करके तुम पछता र ी हा ?'

कुन्दनन्दिनी न दुखित होकर कहा, 'तुमन विवाह करके मुझे सुखी किया ह। इसकी मुझे आशा भी नही थी। मैं यह नही कह रही हू। मैं कह रही थी कि सूयमुखी कसे आएगी ?'

'इस बात को जबान पर न लाओ। तुम्हारे मुह से सूयमुखी का नाम सुनकर मेरे हृदय मे जलन होती है। तुम्हारे ही कारण तो सूयमुखी मुझे त्यागकर गई है।'

कुन्दनन्दिनी यह जानती थी, परन्तु नगन्द्र के ऐसा कहने पर कुन्द नन्दिनी व्यथित हुई। उसन सोचा कि यह उसका तिरस्कार है। उसका भाग्य खराब है परन्तु उसने कोई दोप नही किया। सूयमुखी न ही तो यह विवाह कराया था। कुन्द और कोई बात न कहकर पखा झलती रही। कुन्दनन्दिनी का चुप देखकर नगेन्द्र बोले, बोलती क्यो नहीं ' क्या नाराज हो गइ ?'

नही।

'केवल नही कहकर फिर चुप हो गईं। क्या तुम अब मुझसे प्रेम नही करती ?'

करती क्या नहीं ?'

करती क्या नहीं यह तो बच्चा का बहलाने जसी बात है कुन्द! शायद तुम मुझस कभी प्रेम नही करती थी।'

मैं आपको हमेशा से प्रेम करती आई हू।'

नगन्द्र समझकर भी न समझे कि वह क्या कह रही थी। सूयमुखी के प्रेम म कुन्दनन्दिनी के प्रेम मे कोई कमी नही थी, परन्तु कुन्द बातें करना नहीं जानती थी। तब फिर क्या बोल ? नगेन्द्र उसे नहा समझे। वह बात सूयमुखी मुझसे प्रम करती थी।

अब कुन्दनन्दिनी रोना न रोक सकी। वह उठकर बाहर चली गई। वहा ऐसा कोई नही था, जिसके सामने रोए। कमलमणि के पास कुन्द नहीं गई। वह अपने को इस विवाह की अपराधिनी समझकर लज्जा से उसके सामने मुह नहीं दिखा सकी, परन्तु आज पीड़ा बहुत थी। वह कमलमणि के सामने कुछ कहने की इच्छा कर उसके पास गई। कमलमणि पहिले देखकर अप्रसन्न हुई, परन्तु पास आती देखकर विस्मित हुई। कुछ कहा नहीं। कुन्द उसके पास बैठकर रोने लगी। कमलमणि ने फिर भी कुछ नही कहा। पूछा भी नहीं कुछ। कुन्दनन्दिनी स्वय ही चुप हो गई। कमलमणि, 'मुझे कुछ काम है' कहकर वहा से उठकर चली गई।

कुन्दनन्दिनी ने देखा कि सब सुखो की कोई-न कोई सीमा है।

नगेन्द्र ने इस घटना के विषय मे अपने मित्र हरदेव घोषाल को सविस्तार पत्र लिखा। उसके उत्तर म उनका पत्र आया, तुमने लिखा है कि तुमने जितने काम किए है उनमे कुन्दनन्दिनी स विवाह सबसे भ्रातिमूलक रहा। इसे मैं स्वीकार करता हू। तुमन यह काम करके सूर्यमुखी को खा दिया। सूर्यमुखी को पत्नी के रूप में पाना तुम्हारे सौभाग्य की बात थी। कुन्दनन्दिनी अपने किसी गुण से भी सूर्यमुखी क स्थान की पूर्ति नही कर सकती।

फिर तुमने कुन्दनन्दिनी को उनके स्थान पर क्यो बिठाया? एक भ्राति को लेकर अब चेतना लौटी है। कुम्भकर्ण की नींद मरने के लिए खुली थी। क्या अब सूर्यमुखी का योग?

तुमने क्या कुन्दनन्दिनी से विवाह किया? क्या तुम उसे प्रेम करते थ? प्रेम तो करते ही थे। उसके लिए तुम पागल हो रहे थ। तुम्हारे प्राण निकल रहे थे। किन्तु अब समझ कि वह केवल आखो का प्रेम था। तुमन कोई पन्द्रह दिन हुए उससे विवाह किया है। क्या तुम अब भी सच कहो कि उससे प्रेम करते हो? सूर्यमुखी कहा गई? सोचा था कि बहुत-सी बातें लिखूगा किन्तु आज आगे लिख न सका। बड़ा कष्ट हो रहा है।

मैं तुम्हारे मन की दशा समझ रहा हू। तुम कुन्दनन्दिनी का प्रेम

करते थे, आज भी करते हो, परन्तु यह ठीक है कि वह आखो का प्रेम था। सूयमुखी के साथ तुम्हारा हृदय का प्रेम था। वह कुन्दनन्दिनी की छाया से ढक गया था। सूयमुखी को खोकर तुम उसे समझे। जब तक सूय प्रकाशित रहता है, हम उसकी किरण से सतापित रहते हैं, बादल भले लगते हैं। परन्तु सूय के अस्त होने पर सूय का महत्व ज्ञात होता है। बिना सूय के ससार अधकारपूर्ण है। तुमने भयानक भूल की है, परन्तु मैं इसके लिए तुम्हारा तिरस्कार न करूगा। तुम जिस भ्रम मे थे, उसका दूर होना बहुत कठिन था। मन के दो भावो को लोभ और प्रेम कहते है। जिस अवस्था मे दूसरे के सुख के लिए हम अपने सुख को त्यागने को उद्यत हो जाते है, उसे प्रेम कहते है। अन्यथा सब लोभ है। रूपवती से रूपवती की लालसा प्रेम नही है। भूखे का अन्न के प्रति आकषण प्रेम नही है। कामातुर का रूपवती के प्रति आकषण भी उसी तरह प्रेम नही है। सूयमुखी के प्रति तुम्हारा पति प्रेम तुम्हारी आखो से अदृश्य हो गया था। यही तुम्हारी भ्राति थी। यह भ्राति मनुष्य के अन्दर स्वभावसिद्ध है। इसलिए भी मैं तुम्हारा तिरस्कार न करूगा। मैं तुम्हे राय दूगा कि जो कुछ दोष है उसी पर सतोष करो।

तुम निराश न होना। सूयमुखी अवश्य आएगी। तुम्हें देखे बिना वह रह न सकेगी? जब तक नही आती तब तक तुम कुन्दनन्दिनी से स्नेह करो। तुम्हारे पत्र से मैं जहा तक समझा हू वह भी गुणी है। मोह दूर होने पर स्थाई प्रेम का सचार होगा।

यह होने पर तुम उसे लेकर सुखी हो सकोगे। यदि सूयमुखी से फिर भेंट न हो, तो उसे भूल भी सकोगे। प्रेम का कभी अनादर न करना क्योकि प्रेम ही मनुष्य का एकमात्र सुख है।'

नगेन्द्र ने हरदेव घोषाल के पत्र का उत्तर दिया।

तुम्हारा पत्र पाया। मानसिक क्लेश के कारण उत्तर देने मे विलम्ब हुआ। तुम्हारी ही सलाह सत्य है परन्तु मैं घर मे मन को स्थिर नहीं कर सकता। सूयमुखी मुझे छोडकर चली गई। उसका कोई समाचार नहीं मिला। वह जिस ओर गई है, मैंने भी उसी ओर जाने का निश्चय किया है। मैं भी गृह-त्याग करूगा, देश-देश मे उसे खोजता फिरूगा।

उसको पाऊंगा तो लेकर घर आऊंगा, नहीं तो अब न आऊंगा। कुंदनंदिनी को लेकर घर मे नहीं रह सकता। वह आशा का काटा बन गई है। उसका दोष नहीं दोष मेरा ही है, परन्तु मैं उसका मुह नहीं देख सकता। वह रोती है, मैं क्या करू? मैं चला। शीघ्र ही तुमसे भेंट होगी। तुमसे मिलकर ही कहीं जाऊंगा।

नगेंद्र ने जो लिखा वही किया। सम्पत्ति की देख रेख दीवान पर छोडकर पर्यटन के लिए निकल पडे। कमलमणि कलकत्ते चली गई थी। कुंदनन्दिनी अकेली दत्त भवन में रह गई। हीरा दासी उसकी सेवा में नियुक्त हुई।

दत्त घराने में अन्धकार छा गया। यह महापुरी सूर्यमुखी और नगेंद्र के चले जाने पर अन्धकारपूर्ण हो गई। कुंदनंदिनी नगेंद्र के न आने पर अकेली उस विस्तृत पुरी मे बिना आश्रय के पडी रह गई और नगेंद्र सूर्यमुखी की खोज में देश-देश घूमने लगे।

हीरा के हृदय में देवेंद्र के प्रति प्रेम की ज्वाला सुलग रही थी। उसकी ज्वाला धीरे धीरे अति तीव्र हुई और उसने धर्म तथा लोक लज्जा का भस्म करना चाहा परन्तु देवेन्द्र के स्नेहहीन इन्द्रिय-काम चरित्र की स्मृति से वह रुक गई। हीरा चित्त संयम में विशेष दक्षता रखती थी। इसीलिए वह अब तक सती बनी हुई थी। इसी के प्रभाव मे वह देवेंद्र के प्रति प्रबल अनुराग को दबाए हुए थी। इसीलिए हीरा ने दुबारा दासी का काम करना स्वीकार किया था। उसने सोचा था कि वह काम में लगी रहकर अनुराग के डक की ज्वाला को भुला सकेगी। नगेंद्र जब कुन्दनन्दिनी को गोविन्दपुर में छोडकर पर्यटन के लिए चले तो हीरा ने नौकरी की याचना की। कुन्द की इच्छा समझकर नगेंद्र हीरा को कुंदनन्दिनी की दासी नियुक्त कर गए थे।

हीरा के फिर से दासी बनने का एक और भी कारण था। हीरा ने अर्थ की कामना से कुंद को नगेंद्र की प्रियतमा समझ अपने वश में करने का यत्न किया था। उसने सोचा था नगेंद्र का धन कुंद का होगा और कुन्द के हाथ से अर्थ हीरा का हाथ होगा। अब वही कुन्द नगेंद्र की गृहणी थी परन्तु अर्थ पर उसका विशेष अधिकार नहीं था।

अब हीरा को अय की विशेष इच्छा भी नहीं थी। वह कुंद मे मिले धन का विप के समान समझने लगी थी।

हीरा अपने निष्फल प्रणय का सहन कर सकती थी परन्तु कुंदनंदिनी के प्रति देवेंद्र के अनुराग को वह न सह सकी। जब हीरा ने सुना कि नगेंद्र देश घूमने जाएंगे और कुंदनन्दिनी घर म गृहिणी होकर रहेगी, तो वह हरिदासी वष्णवी के आने जाने की राह म पहरेदारिन बन गई।

हीरा न कुंदनंदिनी के मगल के लिए यह सब नहीं किया। ईर्ष्या वश हीरा कुंदनंदिनी की मंगल कामना तो दूर रही, उसका मरना सुनकर भी प्रसन्न होती। कुंद के साथ देवेंद्र की भेंट न हो, इसी ईर्ष्या से हीरा न कुंद को अपने पहरे म रखा।

हीरा कुंद के लिए यन्त्रणा की मूल बन गई। कुंद ने देखा कि हीरा के आदर ममता नहीं थी। उसने देखा कि हीरा दासी होकर भी उसके प्रति अश्रद्धा रखती थी। वह उसे अपमानित भी करती थी। कुंद बहुत ही शान्त स्वभाव की थी। हीरा के व्यवहार से दुखी होकर भी कभी उससे कुछ न कहती थी। कुंद शीतल और हीरा उग्र प्रकृति की थी। कुंद मालकिन होकर भी हीरा के आगे दासी की तरह रहने लगी। स्त्री गृह की अन्य दासी कभी कभी कुंद की यन्त्रणा देखकर हीरा का तिरस्कार करती, परंतु हीरा के आगे किसी की न चलती। दीवान जी ने यह सब सुनकर हीरा से कहा 'तू निकल जा यहां से। मैंने तुझे जवाब दिया।

हीरा बोली, तुम जवाब देने वाले कौन हो? मुझे मालिक रख गए हैं। मालिक का जवाब न मिलने से मैं न जाऊंगी।' यह सुनकर दीवान जी न अपमान के भय से फिर कुछ न कहा। हीरा बलात बनी रही। केवल सूर्यमुखी ही हीरा को शासन म रख सकती थी।

एक दिन हीरा अकेली लता मण्डप म सोई हुई थी। नगेंद्र और सूर्यमुखी के जाने के बाद लता मण्डप हीरा के अधिकार म आ गया था। सन्ध्या का आकाश म पूर्ण चन्द्र शोभा दे रहे थे। उद्यान के वृक्ष और पत्तों पर उसकी चांदनी फैल रही थी। पत्तियों के बीच से छनकर चंद्रिका पत्थरों पर पड रही थी। बाग के फूलों का सौरभ आकाश म भरा था।

तभी हीरा को लता-मण्डप म एक पुरुष-आकृति ि्खाई दी । उसने देखा, वह देवेन्द्र था, नकली वेश में नहीं, अपने असली वेश मे ।

'आप हैं ! बहुत बडा दु साहस किया है । कोई देख लेगा तो आप मारे जाएगे ।'

'जहा हीरा है, वहा मुझे कोई भय नही ।' यह कहकर वह हीरा के पास बैठ गए । हीरा बोली 'यहा क्यो आए ? जिसकी आशा से आए हो, उससे भेंट न होगी ।

'उसे तो पा चुका हू । मैं तुम्हारी ही आशा मे यहा आया हू ।'

हीरा अप्रतारित हसकर बोली, मैं नही जानती थी कि मेरा भाग्य इतना प्रसन्न हुआ है । यदि मेरा ही भाग्य पलटा है, तो ऐसे स्थान पर चलिए जहा निष्कण्टक बठकर आपसे बातें कर सकू । यहा बहुत से विघ्न हैं ।'

'कहा चलू ?

जहा कोई भय न हो । अपने निकुज म चलिए ।

'तुम मेरे लिए कोई भय न मानना ।

आपके लिए भय नही । मुझे अपने लिए भय है । मुझे कोई आपके पास देख लेगा, तो मेरी क्या गति होगी ?'

'तो चलो । क्या तुम्हारी नई गृहिणी से कुछ बात चीत न हो सकेगी ?'

यह सुनकर हीरा का तन-बदन जल उठा परन्तु शात भाव स बोली, 'उनम कस भेंट होगी ?

देवेन्द्र विनीत भाव से बोले तुम्हारी कृपा स क्या नहीं हो सकता ?'

'तब आप यही बठें मैं उन्हे बुला लाती हू ।'

यह कहकर हीरा लता मण्डप से बाहर निकली । कुछ दूर जाकर वह एक वृक्ष क नीचे बठ गई । उसका कण्ठ रुद्ध हो गया और आखो से आसू बहने लग । फिर वह उठकर मकान म गई परन्तु कुन्दनन्दिनी के पास नही गई । वह दरबानों स बोली, तुम लोग उधर जाओ । बाग म कोई चोर आया है ।

चौकीदार लोग अन्त पुर की राह स बाग की ओर दौड । देवेन्द्र दूर

से ही उन्हें अपना ओर आते देखकर वहाँ से निकलकर भागे। चौकीदार कुछ दूर उनके पीछे भागे। उन लोगों ने देवेन्द्र को देखकर भी पकड़ा नहीं, परन्तु देवेन्द्र निरुत्तर हो गए। दरबानों द्वारा 'ससुरा', 'साला' आदि शब्द उन्होंने सुने।

उस दिन देवेन्द्र ने घर आकर दो संकल्प किए। प्रथम यह कि हीरा के रहते वह उसके घर न जाएगा। दूसरे, हीरा का इसका आनन्द चखाएगा।

१५ •

बरसात के दिन थे। सारा दिन वृष्टि हुई थी। आकाश पर मेघ छाए हुए थे। जिधर मार्ग था, उधर फिसलन बहुत थी। मार्ग में कोई आदमी नहीं था। एक व्यक्ति पथ पर चल रहा था। गेरुए कपड़े, गले में रुद्राक्ष, कपाल में चन्दन की रेखा, जटा का आडम्बर नहीं छोटे-छोटे बाल थे। एक तो बादलों का अन्धकार और उस पर फिर रात हो गई थी। रात में कहाँ राह-कुराह थी, कुछ पता न था। फिर भी पथिक चला जा रहा था।

बहुत रात हो गई। वृक्षों का ऊपरी सिरा केवल स्तूप-सा दिखाई देता था। पानी बरस रहा था। बीच-बीच में कभी-कभी बिजली चमक जाती थी।

'माता!' अन्धकार में ब्रह्मचारी ने यह शब्द सुना। शब्द मनुष्य के मुँह से निकला जान पड़ा। शब्द बहुत ही व्यथापूर्ण था। ब्रह्मचारी राह में चुपचाप खड़ा हो गया। कुछ देर में फिर बिजली चमकी। बिजली चमकने पर पथिक ने देखा कि राह के किनारे कुछ पड़ा था। 'तुम कौन हो, जो राह में पड़े हो?'

कोई उत्तर नहीं आया। फिर पूछा। इस बार अस्फुट स्वर सुना।

ब्रह्मचारी छाता और छडी एक ओर रखकर उधर बढा । शीघ्र ही उसके हाथ से मनुष्य-बदन का स्पर्श हुआ । 'तुम कौन हो ?' यह कहकर उसने जूडो का स्पर्श किया । मुह से निकला, 'दुर्गे ! यह तो स्त्री है ।'

ब्रह्मचारी ने उस स्त्री को गोद म उठा लिया । छाता और छडी वही छोडे । ब्रह्मचारी राह छोडकर मदान पार करता हुआ बस्ती की ओर चला । वह प्रदेश की राह, घर और बस्ती से परिचित था ।

ब्रह्मचारी एक कुटी म पहुचे । अचेत स्त्री को लिए कुटी पर आवाज दी, बच्चा हर ! तुम घर म हो ? कुटी के अन्दर से एक स्त्री न कहा यह तो महराज जी की आवाज है । महाराज आई ।'

ब्रह्मचारी बोल शीघ्र दरवाजा खोलो ।

हरमणि न कुटी का द्वार खोला । ब्रह्मचारी न उसस दीपक जलाने को कहा । स्त्री को जमीन पर लिटा दिया । हरमणि न दीपक जलाया और स्त्री को देखा ।

देखा स्त्री बूढी नही थी, परन्तु उसके शरीर की अवस्था से आयु का ज्ञान नही होता था । उसका बदन बहुत दुबल था । उसका गीला कपडा बहुत मैला था और उसम सैकडो छेद थ । आखें अ दर को धस गई थी । उसकी सास चल रही है, परन्तु चेतना नही थी । जान पडता था मृत्यु समीप थी ।

हरमणि न पूछा 'यह कौन है कहा थी ?

ब्रह्मचारी न परिचय देकर कहा, इसकी मत्यु समीप दिखाई देती है । सेंक करने से बच तो बच । म जसा कहता हू वसा करो ।'

हरमणि न ब्रह्मचारी की आज्ञानुसार उसके गीले कपडे बदले । अपना सूखा वस्त्र पहिनाया । सूखे कपडे स उसका सिर पोछा । आग जलाकर सेंका । ब्रह्मचारी बोले, जान पडता है भूखी है । घर म दूध हो तो थोडा सा पिलान की चेष्टा करो ।

हरमणि न दूध गरम करके थोडा उस स्त्री को पिलाया । स्त्री ने पिया । पर तु दूध पीते पर उसने आखें खोली । हरमणि न देखकर पूछा मा तुम कहा स आ रही थी ?

म कहा हू ? उसन कहा ।

ब्रह्मचारी ने कहा, 'मैं तुम्हे राह मे पडी देखकर यहा ले आया था। तुम कहा जाओगी ?'

'बहुत दूर।'

'तुम्हारे हाथ मे चूडिया हैं। क्या तुम सधवा हो ? तुम्हे क्या कहकर बुलाऊ ? तुम्हारा क्या नाम है ?'

'मेरा नाम सूयमुखी है।'

ब्रह्मचारी ने दूसरे दिन गाव के वद्य को बुलाया। वैद्यजी ने बीमारी का लक्षण देखकर कहा, 'इसे वात रोग है। उसपर बुखार आ रहा है। बीमारी मघातिक है, फिर भी वच सकती है।'

ये बातें सूयमुखी के सामने नही हुईं। वद्यजी ने दवा की व्यवस्था की। वद्य के विदा होने हर ब्रह्मचारी ने हरमणि को दूसरे काम से भेज दिया और विशेष बातचीत के लिए वह सूयमुखी के पास आकर बठ गए। सूयमुखी बोली, 'महाराज आप मेरे लिए इतनी चेष्टा क्यो कर रहे है ? मेरे लिए कष्ट न करें।'

'मुझे कष्ट काहे का ? यह तो मेरा धम है। मैं ब्रह्मचारी हू। परोपकार ही मेरा धम है। आज यदि तुम्हारे काम म नियुक्त न रहता तो तुम्हारा जसी और किसी के काम म होता।'

'तब मुझे छोडकर आप किसी अन्य के उपकार म नियुक्त हो। आप दूसरो का उपकार कर सकेंगे। मेरा उपकार कर न सकेंगे।'

'क्यों ?'

'बचने म उपकार नही है मरने म ही मेरा मगल है। कल रात जब राह म पडी थी तो बहुत आशा थी कि मैं मर जाऊगी। आपने मुझे क्या बचाया ?'

'मैं नही जानता कि तुम्हे क्या दुख है परन्तु दुख कितना भी हो आत्महत्या महा पाप है। आत्महत्या कभी न करना। आत्महत्या म पर हत्या जसा पाप है।'

'मैंने आत्महत्या करने की चेष्टा नही की। मेरी मत्यु स्वय आकर उपस्थित हुई थी। इसीलिए भरोसा कर रही थी, परन्तु मरने म भी मुझे आनन्द नही है।'

'मरने मे भी आनन्द नही है ।' कहते-कहते सूर्यमुखी का कण्ठ रुद्ध हो गया । उसकी आखो से आसू गिरने लगे ।

ब्रह्मचारी बोला, मैंने देखा कि तुमने जितनी बार मरने की बात कही उतनी बार तुम्हारी आखो से आसू गिरे । फिर भी तुम मरना चाहती हो । मुझे तुम अपनी सन्तान के समान समझो । मुझे पुत्र समझकर मन की बातें कहो । तुम्हारे दु ख निवारण का कोई उपाय होगा तो मैं उसे करूगा । यही कहने के लिए मैंने हरमणि को विदा किया था । ज्ञात होता है कि तुम किसी अच्छे घराने की लडकी हो । तुम्हारे मन मे जो पीडा है उसे मैं समझता हू ।'

सूर्यमुखी ने आंखों में आसू भरकर कहा, 'जब मरने बैठी हू तो ऐसे समय लज्जा क्यो करू ? मुझे यही कष्ट है कि मरते समय पति का मुह न देख सकी । मुझे मरने मे ही सुख हैं, परन्तु उन्हें देखे बिना मरी, तो मरने मे दु ख होगा । यदि उन्हें देख सकू तो मुझे मरने मे ही सुख है ।

ब्रह्मचारी बोले, 'तुम्हारे पति कहां है ? इस समय तुम्हें उनके पास ले जाने का उपाय नही परन्तु यदि समाचार देने से वह यहां आ सकें, तो मैं उन्हें पत्र द्वारा समाचार दू ।'

सूर्यमुखी के चेहरे पर हर्ष का विकास हुआ । वह बोली, 'वह आना चाहें तो आ सकते हैं, परन्तु नहीं जानती कि आएगे या नही । मैं उनके आगे बहुत बडे अपराध की अपराधिनी हू । फिर भी वह दयावान हैं । वह क्षमा करना चाहें तो कर सकते हैं परन्तु वह बहुत दूर हैं । क्या मैं तब तक बचूगी ?'

'कितनी दूर है ?'

'हरिपुर जिले मे ।'

'बचोगी क्यों नहीं ?'

ब्रह्मचारी कागज-कलम ले आए और सूर्यमुखी के कहने के अनुसार निम्नलिखित पत्र लिखा ।

'मैं आपका परिचित नहीं हू । मैं एक ब्रह्मचारी हू । मैं नही जानता कि आप कौन हैं । केवल यही जानता हू कि श्रीमती सूर्यमुखी आपकी

भार्या हैं। वह मधुपुर गांव मे, रोग ग्रस्त, हरमणि दत्ती के मकान पर हैं। उनकी दवा हो रही है, परन्तु बचने की आशा नही है। यही समाचार देने के लिए आपको यह पत्र लिखा है। उनकी इच्छा मरने से पूर्व एक बार आपका दर्शन करने की है। यदि आप उनका अपराध क्षमा कर दें तो यहां आए। मैं उन्हें माता कहता हू। पुत्र के रूप मे उनकी आज्ञा से मैंने यह पत्र लिखा है। उनमे स्वयं लिखने की शक्ति नही है।

यदि आ र्ह तो रानीगंज की राह से आए। रानीगंज से श्रीमान माधवचन्द्र गोस्वामी, मेरा नाम लेने पर, आपके साथ आदमी की व्यवस्था कर देंगे। आपको भटकना न पड़ेगा।

आना हो तो शीघ्र आए। देर होने से काय सिद्ध न होगा।

शिवप्रसाद।

'पता क्या लिखू ?'

'हरमणि के आन पर कहूगी।'

हरमणि के आने पर नगेन्द्र दत्त का नाम पता लिखकर ब्रह्मचारी समीप के डाकखाने मे पत्र छोड़ने गए।

ब्रह्मचारी जब पत्र लेकर डाकखाने की ओर गए तो सूयमुखी ने हाथ जोड़कर परमात्मा से भिक्षा मागी, 'हे प्रभु ! यदि तुम सत्य हो और मुझमे पति भक्ति है, तो यह पत्र सफल हो। मैं स्वामी के चरणो के अतिरिक्त कुछ नही चाहती। इसमे पुण्य हो तो उस पुण्य से स्वर्ग नही चाहती। केवल यही चाहती हू कि मरते समय उनका मुह देखकर मरू।

पत्र नगेन्द्र के पास नही पहुचा। जब पत्र गोविन्दपुर पहुचा तो नगेन्द्र देशाटन के लिए प्रस्थान कर चुके थे। डाकिया दीवन जी को पत्र द गया।

दीवानजी से नगेन्द्र कह गए थ कि वह जब वहा पहुचेंगे वहा से पत्र लिखेंगे। उनके पत्र पाने पर उनके नाम का पत्र वहीं भेजना। नगेन्द्र ने पटना से पत्र लिखा था, 'मैं नाव से काशी पहुचन पर पत्र लिखूगा। मेरा पत्र पान पर वहा मेरे नाम के सब पत्र भेज देना।' दीवानजी ने उसी समाचार की प्रतीक्षा मे ब्रह्मचारी का पत्र सन्दूक मे रख दिया।

नगेन्द्र काशी पहुंचे। उन्होंने दीवानजी को पत्र लिखा। दीवानजी ने अपने पत्र के साथ ब्रह्मचारी का पत्र उन्हें भेज दिया। नगेन्द्र ने पत्र पाकर वृत्तान्त समझा और दोनों हाथों से सिर दबाकर कातर स्वर में बोले, 'प्रभु! उसके दर्शन के लिए मुझे जीवित रखो।'

नगेन्द्र में चेतना रही। वह उसी रात्रि को रानीगंज जाने को तैयार हो गए।

१६

नगेन्द्र बनारस से मधुपुर पहुंचकर रामकृष्ण वैद्य के मकान पर पहुंचे तो उन्होंने उन्हें आदरपूर्वक कुर्सी पर बिठाया।

कुर्सी पर बैठकर नगेन्द्र ने पूछा। 'ब्रह्मचारीजी कहां हैं?'

'ब्रह्मचारी जी महाराज यहां नहीं हैं।' सुनकर नगेन्द्र बहुत दुखी हुए। उन्होंने पूछा, 'वह कहां गए हैं?'

'वह नहीं गए हैं। हम लोग नहीं जानते कि वह कहां गए हैं। वह एक स्थान पर नहीं रहते। इधर-उधर पर्यटन किया करते हैं।'

'यह भी कोई नहीं जानता कि वह कब आएंगे?'

'उनसे हम लोगों की कुछ अपनी भी आवश्यकताएं हैं। कोई नहीं कह सकता कि वह कब कहां होंगे।'

नगेन्द्र बहुत दुखी हुए। फिर बोले, 'यहां से गए कितने दिन हो गए?'

'श्रावण मास में यहां थे। भादों में गए थे।'

'इस गांव में हरमणि वैष्णवी का कौनसा मकान है? क्या मुझे कोई दिखा सकता है?'

'हरिमणि का घर रास्ते के किनारे पर ही है, परन्तु इस समय वह वहां नहीं है। आग लगने से वह मकान जल गया था।

'यह भी कोई नही कह सकता। जिस रात उसकी झोपड़ा मे आग लगी, उसी रात से वह गायब है। कोई-कोई कहता है कि वह अपने घर मे स्वय आग लगाकर भाग गई थी।'

क्या उसके घर मे कोई स्त्री रहती थी ?'

'सावन के महीने मे एक स्त्री बीमार होकर उसके घर पर आई थी। उसे ब्रह्मचारी ने उसके घर मे रखा था। उसका नाम सूयमुखी था। मैंने ही उसकी चिकित्सा की थी। मैंने उसे निरोग कर दिया था, परन्तु उसी समय हरमणि वैष्णवी के घर मे आग लगने से वह स्त्री जलकर मर गई।'

यह सुनकर नगेन्द्र कुर्सी से गिर पड़े। उनके माथे में भयानक चोट आई। वह मूर्छित हो गए।

वैद्यजी उनकी सेवा मे लग गए।

सन्ध्या-समय जब नगेन्द्रदत्त मधुपुर से पालकी पर सवार हुए तो उन्होंने मन मे कहा, 'इतने दिन मे मेरा सब कुछ समाप्त हो गया।'

क्या समाप्त हुआ ? सुख ? वह तो जब सूयमुखी ने गृह-त्याग किया था, उसी दिन समाप्त हो गया था। तब अब क्या समाप्त हुआ ? आशा ? जब तक मनुष्य को आशा रहती है, तब तक उसका कुछ समाप्त नही होता। आशा समाप्त होने पर सब कुछ समाप्त हो जाता है।

नगेन्द्र का आज सब कुछ समाप्त हो गया। इसीलिए वह अब गोविन्दपुर जाएगे, परन्तु वह गोविन्दपुर के घर मे रहना न चाहेंगे। उन्होंने जन्म भर के लिए गृहस्थ धर्म को त्याग दिया। वहा उन्हें बहुत से काम थे। धन-सम्पत्ति की व्यवस्था करनी थी। उन्होने जमींदारी, मकान और अन्य सम्पत्ति अपने भाजे सतीशचन्द्र के नाम करने का विचार किया। यह काम बिना वकील के नहीं हो सकता था। अस्थावर सम्पत्ति कमलमणि को लिख देंगे। कुछ अपने पास भी रखेंगे। इसलिए कि अभी जितने दिन जियेंगे उनके खर्च का काम चले। कुन्दनन्दिनी को कमलमणि के पास भेज देंगे। धन-सम्पत्ति और आय-व्यय के कागज श्रीशचन्द्र को समझा देने पड़ेंगे। सूयमुखी जिस चारपाई पर सोती थीं, उसी पर एक रात

सोयेंगे। सूयमुखी के जेवर स्वय लेंगे, उन्हे कमलमणि को न देंगे। उन्हे अपने साथ रखेंगे। जहा जाएगे उन्हे साथ ले जायगे। जब समय आएगा तो उन्हे देखते हुए मरेंगे। यह सब आवश्यक काम करके नगेन्द्र जन्म भर के लिए गृहस्थाश्रम छोडकर फिर देश-पर्यटन करेंगे। जब तक जिएगे तब तक पृथ्वी के किसी कोने मे छिपकर समय बिताएगे।

यह सोचते हुए पालकी पर सवार होकर नगेन्द्र चल पडे। पालकी का दरवाजा खुला था। चादनी रात थी। चादनी बहुत कवश जान पडने लगी। दिखाई देन वाले पदाथ आखो म शून्य म लगे।

नगेन्द्र ने सोचकर देखा कि सब दोष उनका अपना ही था। उनकी कुल तैंतीस वर्ष की आयु थी। इसी म उन्होने अपना सब कुछ, जिन चीजो से मनुष्य सुखी होता है खो दिया। विधाता ने जिस परिमाण म यह सब उन्हे दिया था उतने परिमाण म शायद और किसी को नही दिया। धन ऐश्वय, सम्पत्ति और मान यह सब उनके पास था। बुद्धि न होने से उससे सुख नही मिला। उसम भी विधाता ने कृपणता नही की थी। शिक्षा भी माता पिता ने दी थी। रूप बल स्वास्थ्य प्रणयशीलता सभी कुछ उन्हे प्राप्त हुआ। इन्द्रिय दमन कर सकते तो सूयमुखी विदेश म जाकर क्या मरती? मैंने सूयमुखी का वध किया। मुझसे अधिक पापी कौन है? क्या सूयमुखी केवल मेरी स्त्री नही थी? सूयमुखी मेरी सब कुछ थी। सम्बन्ध म स्त्री सौहार्द म भाई आदर म बहिन, सताप म कुटुम्बिनी, स्नेह म माता, भक्ति म कन्या प्रमोद म मित्र परामर्श मे शिक्षक क्या नही थी वह? मेरी सूयमुखी जैसी कौन थी? मेरी आखो की तारा, हृदय का रक्त शरीर का जीवन, सभी कुछ थी वह।

एकाएक उन्हे याद आया कि वह आराम से पालकी पर सवार होकर जा रहे थे और सूयमुखी पैदल चल चलकर बीमार हुई। नगेन्द्र उसी समय पालकी से उतरकर पैदल चलने लगे। कहार खाली पालकी लेकर पीछे-पीछे चले। वह सवेरे जिस नगर म पहुचे वहा पालकी को छोडकर कहारो को विदा कर दिया। बाकी रास्ता उन्होने पैदल ही समाप्त किया।

उन्होने मन म सोचा कि मैं अपने जीवन को सूयमुखी के वध प्राय

श्चित्त म उत्सग कर दूगा। कैसा प्रायश्चित्त ? सूयमुखी घर छोडकर जिन सुखा से वचित हुई मैं उन सबका त्याग करूगा। ऐश्वय, सम्पदा, नाग-दासी, बधु-बाधव से कोई मतलब न रखूगा। सूयमुखी ने गृह त्याग के समय मे जिन क्लशा को भोगा, मैं उन्ही क्लेशा को भोगूगा। जिस दिन गोविन्दपुर मे यात्रा करूगा उस दिन पैदल चलूगा। जहा जहा अनाथ स्त्रिया का दखूगा, उनका उपकार करूगा। जो रुपए मैंने अपन खच के लिए रखे है, उन रुपया स अपन प्राण मात्र को धारण कर बाद सिया की सेवा म खच करूगा। जिस सम्पत्ति को छोड त्यागकर सतीश का दगा, उसका भी आधा हिस्सा मर जीवन भर सतीश सहायताहीना स्त्रिया की सहायता के लिए खच करेगा यह भी दान-पत्र म लिख दूगा। प्रायश्चित्त ! इस पाप का यही प्रायश्चित्त है।

'सूयमुखी का कोई समाचार मिला ?'

'वह स्वग मे है ।'

शीशचन्द्र चुप रह । नगन्द्र भी चुपचाप सिर झुकाए रहे । फिर बोल 'तुम स्वग को नही मानत, मैं जानता हू ।'

श्रीशचन्द्र जानते थे कि पहिले नगन्द्र स्वग को नही मानते थे । वह समझ गए कि अब मानते है । वह बोल, 'मानते है । स्वग प्रम और वामना की सष्टि है, परन्तु सूयमुखी वहो नही है, यह वात सही नही लगती । सूयमुखी स्वग म हैं, इस विचार म भी सुख नही ।'

दोनो चुपचाप बैठे रहे । श्रीशचन्द्र जानते थे कि वह समय धैय-बधाने का नहीं था । पराई वात विप के समान जान पडेगी । यह समझ कर श्रीशचन्द्र ने नगेन्द्र के लिए शय्या आदि का प्रबन्ध किया । भोजन के लिए पूछने का साहस न हुआ । सोचा यह भार कमल पर रहगा ।

कमल ने सुना कि सूयमुखी नही रही तो वह जड हो गई । सतीश को अकेला छोड उस रात कमलमणि बाहर आ गई । कमलमणि का बाल खोले रोती हुई देख दासी ने सतीशचन्द्र को सभाल लिया ।

श्रीशचन्द्र लाचार होकर अपनी बुद्धि पर निभर कर कुछ खाना लेकर नगेन्द्र के सामने आए । नगेन्द्र बोले, 'इसकी आवश्यकता नहीं है । तुम बैठो । तुम्हारे लिए अनेक बातें हैं, वेही कहने यहा आया हू ।

नगेन्द्र न रामकृष्णवैद्य से जो-जो सुना था, वह सब श्रीशचन्द्र से कहा । फिर भविष्य क सम्बन्ध म जो जो कल्पना की थी, वह सब बतलाया ।

'ब्रह्मचारी के साथ राह मे तुम्हारी भेंट नहीं हुई, यह आश्चय है । वह कलकत्त से तुम्हारी खोज म मधुपुर गए हैं ।'

'तुमने ब्रह्मचारी का पता कैसे पाया ?'

'वह बहुत ही महान् पुरुष हैं । तुम्हारे पत्र का उत्तर न पाकर वह गोविन्दपुर गए । गोविन्दर मे तुम्हें नही पाया । उन्हें पता चला कि काशी म तुम्हारा पता मिलेगा । काशी जाकर उन्होंने सुना कि मेरे यहा तुम्हारा पता लगेगा । तब वह मेरे पास आए । वह परसो मेरे पास आए

थे। मैंने उन्हें तुम्हारा पत्र दिखाया तो वह मधुपुर गए हैं। कल रात रानीगज में तुमसे भेंट होने की सम्भावना थी।'

'मैं कल रानीगज मे नही था। उन्होने सूर्यमुखी की कोई बात तुमसे कही थी ?

'यह सब कल बताऊगा।'

'तुम समझते हो कि सुनने से मेरा क्लेश बढेगा। यह क्लेश अब बढने वाला नही है, तुम कहो।'

तब श्रीशचन्द्र ने ब्रह्मचारी के कहने के अनुसार उनसे सूर्यमुखी का रास्ते मे मिलना, बीमारी का हाल और चिकित्सा तथा अपेक्षाकृत निरोग होने का हाल कहा। बहुत कुछ छोडकर उन्होने यह भी बताया कि सूर्यमुखी ने कितना दुःख उठाया।

यह सुनकर नगेन्द्र घर से निकले। श्रीशचन्द्र साथ-साथ चले। श्रीशचन्द्र को साथ आते देख नगेन्द्र कुछ क्रुद्ध हुए और उन्हे मना किया। नगेन्द्र रात के दो प्रहर तक पागलो की तरह इधर-उधर घूमते रहे। इच्छा थी कि उस भीड़ मे अपने को भुला दें। तब फिर नगेन्द्र और श्रीशचन्द्र घर लौट आए। श्रीशचन्द्र फिर उनके पास बैठे। नगेन्द्र ने कहा, 'और भी बातें हैं। वह कहा गई थी और क्या था उसे ब्रह्मचारी ने अवश्य उनसे सुना होगा। ब्रह्मचारी ने तुमसे कुछ कहा क्या ?'

'क्या आज ही इन बातो की आवश्यकता है ? आज थके हो थोडा विश्राम करो।'

नगेन्द्र ने भौंहे चढाकर कर्कश स्वर मे कहा, 'कहो ?'

श्रीशचन्द्र ने देखा नगेन्द्र पागल जैसे हो गए थे। बिजली भरे मेघ की तरह उनका मुह काला हो रहा था। डरकर श्रीशचन्द्र ने कहा, 'कहता हू।' यह सुनकर नगेन्द्र का मुख प्रसन्न हुआ। श्रीशचन्द्र ने सक्षेप मे कहा 'गोविन्दपुर से सूर्यमुखी सडक-सडक चलकर उस ओर पैदल आई थी।'

'नित्य कितना रास्ता चलती थी ?'

'कोस, डेढ कोस।'

'वह तो एक पैसा भी मकान से लेकर नही गई थीं। उनके दिन

से बीत ?'

'किसी दिन उपवास म, किसी दिन भिक्षा म। तुम पागल हो गए ?'

यह कहकर श्रीशचन्द्र ने नगेन्द्र को डाटा। वह अपने हाथ से अपना ना रुद्ध कर रहे थे। श्रीशचन्द्र ने कहा, 'मरने से सूर्यमुखी को पा ाओगे' यह कहकर नगेन्द्र का हाथ अपने हाथ म ले लिया।

कहो।'

तुम स्थिर होकर सुनोगे तो मैं आगे कुछ न कहूगा।'

श्रीशचन्द्र की बात नगेन्द्र के कान तक न पहुची। उनकी चेतना लुप्त हो गई थी। नगेन्द्र आखे मूदकर सूर्यमुखी के रूप का ध्यान कर रहे थे। वह देख रहे थे कि सूर्यमुखी राजरानी होकर स्वर्ग म बैठी है। चारो ओर से शान्त सुगन्धिपूर्ण पवन उनकी अलको को हिलोरे दे रहा था।

प्रयत्न से श्रीशचन्द्र ने नगेन्द्र को सचेत किया। चेतना होने पर नगेन्द्र ऊचे स्वर म बोले सूर्यमुखी! प्राणाधिके! तुम कहा हो? चिल्लाहट सुनकर श्रीशचन्द्र स्तम्भित और भयभीत होकर चुपचाप बैठे रहे। धीरे-धीरे नगेन्द्र ने फिर अपनी स्वाभाविक दशा म आकर कहा कहो।'

श्रीशचन्द्र ने डरकर कहा, 'अब क्या कहू।'

कहो नही तो मैं अभी प्राण त्याग दूगा।

भयभीत होकर श्रीशचन्द्र कहने लगे सूर्यमुखी ने अधिक दिन तक कष्ट नही पाया। एक धनाढ्य ब्राह्मण सपरिवार काशी जा रहा था। एक दिन नदी किनारे सूर्यमुखी वृक्ष के नीचे सो रही थी। ब्राह्मण वही रसोई बनाने को ठहर गए। उनकी गृहिणी के साथ सूर्यमुखी की बाते हुई। सूर्यमुखी की अवस्था देखकर उनके चरित्र म प्रसन्न हो ब्राह्मण गृहिणी ने उन्हे नाव पर चढा लिया। सूर्यमुखी ने उनसे कहा था कि वह भी काशी जाएगी।

उस ब्राह्मण का नाम क्या था? उनका मकान कहा है?' नगेन्द्र ने कुछ प्रतिज्ञा करके फिर पूछा उनके साथ

ब्राह्मण के परिवार के ही साथ सूर्यमुखी वहां तक गईं। कलकत्ते तक नाव में, कलकत्ते से रानीगंज तक रेल में। रानीगंज से बुलन्दशहर ट्रेन से गई। यहां तक उन्हें चलने का कष्ट नहीं हुआ।'

'उसके बाद क्या ब्राह्मण ने उन्हें विदा कर दिया?'

'सूर्यमुखी ने स्वयं विदा ले ली। वह फिर काशी नहीं गईं। कितने दिन तुम्हें बिना देखे रहतीं? तुम्हें देखने की इच्छा से वह फिर पैदल लौटीं।'

बात कहते कहते श्रीशचन्द्र की आंखों में आंसू आ गए। उन्होंने नगेन्द्र के मुंह की ओर देखा। श्रीशचन्द्र की आंखों के आंसुओं से नगेन्द्र का विशेष उपकार हुआ। वह श्रीशचन्द्र को गले लगाकर उनके कंधे पर सिर रख खूब रोए। यहां आकर अब तक वह रोए नहीं थे। उनका रुका हुआ शोक बह गया। नगेन्द्र श्रीशचन्द्र के कंधे पर मुंह रखकर बालकों की भांति रोते रहे। उससे उनकी तकलीफ कुछ कम हो गई।

नगेन्द्र के कुछ शांत होने पर श्रीशचन्द्र ने कहा, 'इन सब बातों की आवश्यकता नहीं है।'

'और कहोगे भी क्या? बाकी जो हुआ वह मैं आंखों से देख आया हूं। वहीं से वह अकेली पैदल मधुपुर गईं। रास्ता चलने के श्रम, अनाहार, धूप वर्षा में निराश्रय और मन के अनेक क्लेशों से सूर्यमुखी रोगग्रस्त होकर मरने के लिए राह में पड़ी थीं।

श्रीशचन्द्र चुप रहे। फिर बोले 'भाई अब क्यों व्यर्थ इन सब बातों की चिन्ता कर रहे हो? तुम्हारा कोई दोष नहीं है। तुमने उनकी बिना राय अपने मन से कोई काम नहीं किया। जिसमें अपना दोष नहीं होता, उसके लिए बुद्धिमान अनुताप नहीं करते।'

नगेन्द्र समझे नहीं। वह जानते थे कि सब दोष उनका ही है। उन्होंने क्या विष-वृक्ष के बीज को अपने हृदय से उखाड़कर नहीं फेंका?

: १८ .

देवेन्द्र को चौकीदारों से भगवाकर हीरा मन-ही मन खूब हसी थी, परन्तु उसके बाद उसे बहुत पश्चात्ताप हुआ। हीरा मन म सोचने लगी 'मैंने उन्हें अपमानित कराके उचित नहीं किया। उन्होंने मुझ पर न जान कितना क्रोध किया होगा।'

देवेन्द्र भी हीरा को दण्ड देने का प्रपच रच रहे थे। उन्होने मालती द्वारा हीरा को बुलवाया। हीरा वहा चली गई। देवेन्द्र ने तनिक भी क्रोध प्रकट नहीं किया। बीती घटना का जिक्र भी न किया। उसके साथ मीठी मीठी बातें करते रहे। देवेन्द्र हीरा के लिए मकडी जसा जाला बुनने लगे। लेकिन हीरा सहज ही उस जाले म फस गई। वह देवेन्द्र पर मुग्ध हो उठी। उसने सोचा यही प्रणय है। हीरा की सारी चतुराई मिट्टी म मिल गई।

देवेन्द्र ने सब बातें छोडकर तानपूरा उठाया और गाना आरम्भ किया। देवेन्द्र ने ऐसी मधुमय तान छेडी कि हीरा मन्त्रमुग्ध होकर मोहित हो उठी। उसका हृदय और मन देवेन्द्र के प्रेम म डूब गए। उसकी दृष्टि मे देवेन्द्र ससार मे सबसे सुन्दर और आदरणीय जान पडे। हीरा की आखो से प्रेम के आसू निकल पडे।

देवेन्द्र ने तानपूरा एक ओर रख, बडे आदर से हीरा के आसू पोछ दिए। हीरा रोमाचित हो उठी। देवेन्द्र ने सरस बातचीत आरम्भ की। हीरा ने मन मे कहा, 'यही स्वग का सुख है।' हीरा ने पहिले कभी ऐसी बातें नही सुनी थी। यदि हीरा विशुद्ध हृदया होती, तो समझती कि यह नरक था, पाप था। देवेन्द्र प्रेम वणन म बहुत चतुर थे। उनके मुह से प्रेम की महिमा सुनकर हीरा उन्हें देवतुल्य समझ स्वय सिर से पैर तक प्रेम-रस मे डूब गई। देवेन्द्र ने फिर सगीत उठाया। हीरा भी उनके साथ अपनी कल-कण्ठ ध्वनि का मिलान लगी। देवेन्द्र ने हीरा से गाने को कहा। हीरा ने सगीत आरम्भ किया। हीरा के गले से ऊची आवाज निकली। हीरा ने मुग्ध होकर प्रेमराग गाया।

फिर दोनों ने पापाभिलाष के वशीभूत होकर एक दूसरे पर अपना

प्रेम प्रकट किया। हीरा देवेन्द्र की अक मे जाकर भी हसते-हसते, ... प्रेम की स्वीकृति देकर अनायास ही उनसे विमुख हो गई, परन्तु जब ... जान पडा कि देवेन्द्र प्रणयशील नही हैं, तो फिर उसकी प्रवृत्ति उधर ... हुई। इसी अप्रवृत्ति के कारण विष-वृक्ष मे उसके भोग का फल उत्प... हुआ।

हीरा अवसर पाकर वहा से भाग आई।

धम की बडे कष्ट से रक्षा की जाती है। वह तनिक-सा एक दि... की असावधानी से नष्ट हा जाता है। हीरा की भी ऐसा ही दशा हुई... जिस धन के लोभ म हीरा ने यह महारत्न बेचा, वह कानी कौडी थी... देवेन्द्र का प्रेम बाढ के पानी की तरह था। हीरा उसमे बह गई। जै... मनुष्य बहुत दिन के सचित धन को पुत्र के विवाह या अन्य उत्सव प... एक दिन के सुख के लिए नष्ट कर डालता है वसे ही हीरा इतने दिन ... बडे यत्न से धम की रक्षा कर एक दिन के सुख के लिए उसे नष्ट क... जीवन भर के पछतावे की राह पर जा खडी हुई। हीरा ने देवेन्द्र द्वा... परित्यक्त होने पर पहिले तो हृदय मे बहुत व्यथा पाई परन्तु केव... परित्यक्ता नही वह देवेन्द्र द्वारा ऐसी अपमानित की गई कि वह उस... लिए असहनीय हो उठा।

जब भेंट म अतिम दिन हीरा ने देवेन्द्र के पैरो पर लेटकर कह... 'दासी का परित्याग न करना।' तब देवेन्द्र ने उससे कहा, 'मैंने केव... कुन्दनदिनी के लोभ म तुम्हारा इतना सम्मान किया था। यदि कुन्द ... साथ मेरी भेंट करा सको तो तुमसे मेरी बात चीत रहेगी, वरना नही... तुम जैसी गर्विता हो वैसा ही मैंने तुम्हे प्रतिफल दिया। तुम इस कल... की टोकरी को सिर पर रखकर अपने घर जाओ।'

हीरा की आखो मे अधकार छा गया। जब उसका मस्तक ठी... हुआ तो वह देवेन्द्र के सामने खडी होकर भौंहे टेढी करके और आ... लाल कर सैंकडो मुह देवेन्द्र का तिरस्कार करने लगी। मुह की तेज... पापिष्ठा स्त्रिया जैसा करना जानती हैं वैसा ही उसने किया। देवेन्द्र क... भी धैर्य छूट गया। उन्होने हीरा को लात मारकर प्रमोद उद्यान ... बाहर निकाल दिया। हीरा पापिष्ठा थी और देवेन्द्र पापिष्ठ तथा पशु

इस प्रकार दानो का प्रेम पूण हुआ ।

हीरा लात खाकर घर नहीं गई । गोविन्दपुर म एक डाम चिकित्सा करता था । चिकित्सा या दवा वह कुछ नही जानता था, केवल विष की गोलियो की सहायता से लोगो का प्राण-सहार करता था । हीरा ने उस रात उसके घर जाकर उसे आवाज देकर चुपके से कहा एक सियार निम मरी रसोई मा जाता ह । मैं उसे बिना मारे नही रह सकती । साचा है भात म विष मिलाकर रख दू । वह आज रसोई खान आए तो विष खाकर मर जाए । तुम्हारे पास बहुत से विष है क्योकि मुझे ऐसा विष दा, जिमस वह तुरन्त मर जाए ।'

डाम न हीरा की बात पर विश्वास न किया । वह बोला, मरे पास सब कुछ है परन्तु मैं उसे बेच नही सकता क्याकि मुझ पुलिस पकड लगी ।

'तुम कोई चिन्ता न करो । यह कोई न जानन पाएगा । मैं इष्ट देव और गगा की शपथ खाकर कहती हू । मुझे ऐसा जहर दो जिनस सियार मर जाए । मैं तुम्ह पचास रुपए दूगी ।

चाण्डाल समझ गया कि वह किसी का प्राण लेगी परतु पचास रुपए का लोभ वह सवरण न कर सका । वह विष दन को तैयार हागया । हीरा ने घर स रुपए लाकर उसे दिए । उसन घातक हलाहल हीरा का द दिया । हीरा से उसने कहा 'देखना यह बात किसी से मत कहना । इसम हम दोना ही पकडे जाएग ।'

हीरा अपने घर चली गई ।

घर जाकर विष की पुडिया हाथ म लेकर पहिल वह बहुत रोई । फिर उसन आग मूदकर कहा, 'मैं किस दोष पर विष खाकर मरू ? जिसन मुझे मारा है उसे न मारकर मैं मरू ? यह जहर मैं न खाऊगी । जिसने मेरी यह दशा की है या तो वह इस खाएगा या उसकी प्रेमिका कुदनदिनी इस खाएगी । उनम से एक का मारकर बाद म मरना होगा तो मरूगी ।

हीरा को लगा विचित्र पगरा उसी ह । ।

गोविन्दपुर के दत्त घराने का छः मंजिला मकान नगेन्द्र और सूर्यमुखी के बिना अन्धकारपूर्ण हो गया था। कचहरी के घर में कारिंदा और अन्तःपुर में अकेली कुन्दनन्दिनी बैठती थी। कौन कोने में मकड़ियों के जाले पुर गए थे। हर कोठरी में धूल भरी थी। कार्निसों पर कबूतरों की बीट पड़ी थी। बाग में सूखे पत्तों के ढेर थे। पुष्करिणी में काई जम गई थी। सूर्यमुखी की पाली हुई चिड़ियों को प्रायः बिल्ली खा गई थी। बत्तखों को सियार खा गए थे। गौओं की हड्डियां निकल आई थीं। नगेन्द्र के कुत्ते दिन भर बंधे रहते थे।

बाग में माली के न रहने पर जो गुलाब की दशा होती है वैसी ही घर में कुन्दनन्दिनी की थी। जैसे और चार पांच आदमी खाते-पीते थे, वैसा ही कुन्द भी खाती थी। यदि कोई उसे गृहिणी समझकर कोई बात कहता, तो कुन्द कहती, 'उपवास न करो।' दीवानजी कोई बात पुछवा भेजते तो भय से कुन्द की छाती धड़कने लगती थी। कुन्द दीवानजी से बहुत डरती थी। उसका कारण यह था कि नगेन्द्र कुन्द को पत्र नहीं लिखते थे, इसलिए नगेन्द्र दीवानजी को जो पत्र लिखते थे कुन्द उन्हीं को मंगाकर पढ़ती थी और पढ़कर लौटा देती थी। यही पढ़ना उनके लिए पर्याप्त था। दीवानजी का नाम सुनकर वह भयभीत हो जाती थी। हीरा ने ये सब बातें जान ली थीं। वह पत्र वापस न मांगते थे। वह उनकी नकल करके पढ़ने को भेजते थे।

सूर्यमुखी ने यंत्रणा पाई, परन्तु क्या कुन्द यंत्रणा नहीं पा रही थी? सूर्यमुखी पति से प्रेम करती थी तो क्या कुन्द नहीं करती थी? उसके हृदय में अपरिमित प्रेम था। विवाह से पहिले भी कुन्द नगेन्द्र को चाहती थी। उसने किसी से कहा नहीं, कोई जान न पाया। उसने नगेन्द्र को पाने की कभी इच्छा नहीं की। उसे आशा भी नहीं थी। वह अपनी निराशा को स्वयं सहती रही। उसे बिना मांगे आकाश का चांद पकड़ा दिया गया। फिर किस दोष से नगेन्द्र ने उसे ठुकराया? कुन्द दिन-रात इस बात पर चिंता करती और रोती थी।

कितने कुसमय म नगन्द्र ने कुन्द से विवाह किया था ? जहरीले वृक्ष की छाया मे जो जा बैठता है, वही मरता है। इसी तरह विवाह की छाया न जिसे भी छू दिया वही मारा गया।

कुन्द सोच रही थी मेरे कारण सूर्यमुखी की यह दशा हुई। सूर्यमुखी न मेरी रक्षा की मुझे अपनी बहिन की तरह रखा। मैंने उसे राह की भिखारिन बना दिया। मेरे जसी अभागिन कौन है ? मैं क्यो न मरी ? अब भी क्यो नही मरती ?' फिर सोचती, अभी न मरूगी। वह आ जाए उन्ह और एक बार देखकर मरूगी ? क्या वह अब न आएगे ? कुन्द को सूर्यमुखी की मृत्यु का समाचार नही मिला था। इसलिए वह सोचती थी कि अभी मरकर क्या करूगी ? जब सूर्यमुखी लौट आएगी तब ही मरूगी। मैं उनकी राह का काटा न बनूगी।

उधर नगेन्द्र ने कलकत्ते का आवश्यक काय समाप्त किया। दान-पत्र लिखा गया। उस पर ब्रह्मचारी और अनात ब्राह्मण के पुरस्कार की विशेष विधि शेष रही। उसकी रजिस्ट्री गोविन्दपुर म होगी। वह दान-पत्र साथ लेकर नगेन्द्र ने गोविन्दपुर के लिए प्रस्थान किया। वह श्रीशचन्द्र को यथोचित सवारी पर चढ़न का आदेश दे गए। श्रीशचन्द्र न दान-पत्र की व्यवस्था और पदल चलने आदि को मना किया, परन्तु असमय रह। लाचार वह नदी की राह से उनक साथ चले। कमलमणि भी बिना पूछे ही सतीश को साथ लकर श्रीशचन्द्र की नाव पर सवार हो गई।

कमलमणि के गोविन्दपुर आन पर कुन्दनन्दिनी को लगा कि फिर आकाश म एक तारा निकल आया। जब से सूर्यमुखी गई थी, तब से कुन्दनन्दिनी क ऊपर कमलमणि को बहुत क्रोध था, परन्तु इस बार कुन्दनन्दिनी की दुबल मूर्ति देखकर कमलमणि को दुख हुआ। वह अब कुन्दनन्दिनी को प्रसन्न करने का प्रयत्न करने लगी। नगेन्द्र का समाचार प्राप्त कर कुन्द का चेहरा खिला। सूर्यमुखी की मृत्यु का समाचार उस देना पडा। वह सुनकर कुन्द बहुत रोई। कुन्द सौतिन के लिए भी रोई।

कमलमणि ने कुन्द को धय बधाया। कमलमणि स्वय भी शात हो गई। पहिले कमल बहुत रोई थी, परन्तु बाद मे सोचा कि रोने से क्या

लाभ ? मेरे रोने से श्रीशचन्द्र दुःखी होते है, सतीश रोता है, सूर्यमुखी मिलेगी नही, तब क्यो इन लोगो को रुलाऊ ? मैं सूर्यमुखी को कभी न मिलूगी परन्तु मेरे हसने से सतीश हसे तब क्या न हसू ? यह समझकर कमलमणि रोना छोडकर हसने लगी।

कमलमणि श्रीशचन्द्र से बोली, 'वैकुण्ठ की लक्ष्मी वैकुण्ठ को छोड गई। भया वैकुण्ठ म आकर क्या करेंगे ?'

श्रीशचन्द्र बोले, आओ हम लोग सब इस घर को साफ करा दें।'

श्रीशचन्द्र ने राज, मजदूर, माली जहा जिसका प्रयोजन था, वहा उसे लगा दिया। कमलमणि के उपद्रव से चमगादडो मे भगदड मच गई। दासिया हाथो म झाडू लेकर कोना-कोना साफ करने लगी। शीघ्र ही अट्टालिका फिर साफ-सुथरी हो गई।

नगेन्द्र भी आ पहुचे। सध्या हो रही थी। जसे नगेन्द्र का सम्पूर्ण शोक प्रवाह उस समय गम्भीर शाति के रूप मे परिणत हो गया था। दुःख कम नही हुआ, अधैय म कमी होती जा रही थी। उन्होने स्थिर भाव से पुरवासियो से बात चीत की। सबको बुलाकर कुशल पूछा। किसी के आगे उन्होने सूर्यमुखी की बात नही की, परन्तु सभी उनके दुःख से दुखी हुए। पुराने नौकर उन्हे प्रणाम करने जाकर आप ही-आप रो दिए। नगेन्द्र ने केवल एक व्यक्ति को पीडा दी। उन्होने कुन्दनन्दिनी से भेंट नहा की।

नगेन्द्र की आज्ञानुसार सूर्यमुखी के कमरे म उनका बिस्तर लगाया गया। यह सुनकर कमलमणि ने गदन झुका ली।

रात्रि के समय, घर के सब लोगो के सो जाने पर नगेन्द्र सूर्यमुखी के शयन-गृह मे गए। वह शयन करने नही, रोने के लिए गए थे। सूर्यमुखी का कमरा बहुत मनमोहक था। वह नगेन्द्र के सब सुखो का मदिर था। उन्होने उसे बडे यत्न से बनवाया था।

नगेन्द्र ने जब कमरे म प्रवेश किया तो आधी रात बीत रही थी। रात बहुत भयानक थी। हल्की वृष्टि हो रही थी और हवा चल रही थी। पानी बरस रहा था। वायु ने प्रचण्ड वेग धारण किया हुआ था। घर की खिडकिया खुली थी। वायु का शब्द हो रहा था। शीशे बज रहे

थे। नगेन्द्र ने शयन गृह में पलंग पर द्वार बन्द कर लिया। हवा का स्वर कम हुआ। चारपाई के पास एक ओर का द्वार खुला था। उधर से हवा नहीं आ रही थी। वह खुला ही रहा।

नगेन्द्र शयन-गृह में जाकर दीर्घ निश्वास छोड़कर बेंच पर बैठ गए। वह बहुत रोए, उसे कोई न जान पाया।

नगेन्द्र ने दृष्टि फेरकर सूर्यमुखी के प्रिय चित्र को देखा। घर में एक दीपक जल रहा था। उसकी रश्मियों से चित्र सजीव जान पड़ते थे। हर चित्र में नगेन्द्र सूर्यमुखी को देख रहे थे। उन्होंने देखा कि दीपक बुझने वाला था। नगेन्द्र निश्वास छोड़कर शय्या पर लेट गए। शय्या पर लेटते ही प्रबल आँधी चलने लगी। चारों ओर से दरवाजों की आवाज आने लगी। उसी समय दीपक बुझ गया। उन्हें एक विचित्र बात दिखाई दी। जो द्वार खुला था, उस ओर उनकी दृष्टि गई। उन्हें उस खुले द्वार की क्षीण रोशनी में एक छाया जैसी दिखाई दी। छाया स्त्री रूपिणी थी, परन्तु उसे देखकर उन्हें कंपकंपी आ गई। स्त्री सूर्यमुखी के आकार की जैसी थी। नगेन्द्र ने जब पहिचाना कि वह सूर्यमुखी थी, छाया अदृश्य हो गई। दीपक बुझ गया। नगेन्द्र जमीन पर गिरकर अचेत हो गए।

हो रहा था। बाहर प्रकाश फैल रहा था। घर में भी प्रकाश आ रहा था। नगेन्द्र ने देखा वह रमणी उठी और द्वार की ओर चली। नगेन्द्र ने देखा वह दुःस्वप्न नहीं थी। नगेन्द्र ने कुछ देर तक देखा। वह स्त्री उनके पैरों पर गिरकर कातर वाणी में बोली, 'देव! तुम्हारे पैर पड़ती हूं। मुझसे बात करो नहीं तो मैं मर जाऊंगी।'

वह उस स्त्री को छाती से लगाने चले और फिर पेड़ की कटी टहनी की तरह उसके पैरों पर गिर पड़े और कुछ न बोले।

रमणी फिर उनके सिर को जांघ पर रखकर बैठ गई और जब नगेन्द्र निद्रा से उठे तो दिन निकल आया था। घर में उजाला था। घर के बाग में वृक्षों पर पक्षी कलरव कर रहे थे। बाल सूर्य की किरणें घर में पड़ रही थीं। नगेन्द्र ने देखा कि किसकी जांघ पर उनका माथा था। उन्होंने आंसुओं से भीगा देखकर ही कहा, 'तुम कब आई? आज मैंने सारी रात सूर्यमुखी का स्वप्न देखा है? स्वप्न में देखा कि मैं सूर्यमुखी की गोद में माथा रखे पड़ा हुआ हूं। यदि तुम सूर्यमुखी हो सकती तो मुझे कितना सुख मिलता?'

'यदि उसे देखने से तुम सुखी होगे प्राणेश्वर! तो मैं वही अभागिन सूर्यमुखी हूं।'

नगेन्द्र चौंककर उठ बैठे। उन्होंने आंखें मूंद ली। फिर देखा तो सिर पकड़कर बैठ गए। फिर आंखें खोलकर देखा और सिर झुकाकर आप ही आप बोले, 'मैं पागल हो गया हूं या सूर्यमुखी जीवित है। अन्त में यही भाग्य में लिखा था? क्या पागल हो गया हूं मैं?' यह कहकर नगेन्द्र भूमि पर गिरकर रोने लगे।

रमणी ने उनके पैर पकड़ और कहा, 'उठो, मेरे जीवनसर्वस्व! मैंने जितने दुःख सहे हैं आज वे सब समाप्त हो गए हैं। उठो, मैं मरी नहीं हूं। मैं तुम्हारी चरणसेवा के लिए बच गई हूं।'

क्या तब भी भ्रम रह सकता था? नगेन्द्र ने सूर्यमुखी का आलिंगन किया। उसकी गोद में सिर रखकर बात नहीं कर सके। दोनों एक दूसरे के कन्धे पर सिर रखकर रोते रहे? किसी ने कोई बात न कही।

सूर्यमुखी ने नगेन्द्र को बताया, मैं मरी नही थी। कविराज ने मेरे मरने की बात गलत कही। मैं जब सचेत हुई तो तुम्हें देखने के लिए मैं आतुर हो उठी थी। मैं ब्रह्मचारी को साथ लेकर गोविन्दपुर आई। यहा आकर सुना कि तुम यहा नही थे। ब्रह्मचारी ने मुझे यहा से तीन कोस दूर एक ब्राह्मण के घर अपनी कन्या बनाकर रखा। फिर वह तुम्हारी खोज मे गए। उन्होंने पहिले कलकत्ते जाकर श्रीशचन्द्र से भेंट की। श्रीशचन्द्र ने बताया कि तुम मधुपुर गए हो। वह फिर मधुपुर गए। मधुपुर मे ज्ञात हुआ कि जिस दिन हम हरिमणि के घर से आए उसी दिन उसकी झोपडी मे आग लग गई। हरिमणि घर मे जल मरी। सवेरे लोग जली हुई स्त्री को पहिचान न सके। उन लोगो ने समझा कि घर की दो स्त्रिया मे से एक भागकर बच गई और एक जल गई। जो भागी वह स्वस्थ थी और जो रोगिणी थी वह भाग न सकी। इस प्रकार उन लोगो ने निश्चय किया कि हरिमणि भाग गई और मैं मर गई। अफवाह गाव भर मे फैल गई। रामकृष्ण ने वही सुनकर तुमसे कहा। ब्रह्मचारी ने सुना कि तुम मधुपुर मे गए थे और मेरी मृत्यु का समाचार सुन आए थे। वह उसी समय घबराहट के साथ तुम्हारी खोज मे चले। कल शाम वह प्रतापपुर पहुचे। उन्होने बताया कि तुम दो एक दिन मे यहा आओगे। उसी आसरे से मैं परसा यहा आई थी। अब तीन कोस चलने मे कष्ट नही होता। मैं राह चलना सीख गई हू। परसा आने की आशा न पाकर लौट गई।

आज जब यहा पहुची, तो एक पहर रात थी। देखा कि खिडकी दरवाजे खुले थे। मैंने घर मे प्रवेश किया। किसी न मुझे देखा नही। मैं सीढी के नीचे छिपकर खडी हो गई। फिर सबके सो जाने पर सीढी के ऊपर आई। मन म सोचा कि तुम अवश्य इसी कमरे मे सोए होगे। मैंने देखा, यह दरवाजा खुला था। मैंने दरवाजे से झाककर देखा तो तुम सिर पर हाथ रखे बैठे थे। सोचा तुम्हारे पैरो पड़ू। परन्तु कुछ भय जान पडा तुम्हारे सामने। मैंने जो अपराध किया है, क्या उसे क्षमा

न कराेगे ? मैं ता केवल तुम्हे देखकर ही तप्त हू। मैं मिलने आ रही थी, परन्तु मुझे देखकर तुम बेहोश हो गए। तबसे मैं तुम्हे गोद मे लिए बैठी हू। मैं नही जानती थी कि मेरे भाग्य मे यह भी सुख होगा। मैंने सोचा, तुम मुझसे प्रेम नही करते। तुम मेरे बदन पर हाथ रखकर भी मुझे पहिचान नही पाए। मैं तुम्हारी हवा को भी पहिचान सकती हू।'

जिस समय नगेन्द्र और सूयमुखी इस प्रकार प्रेमपूण बातचीत कर रहे थ उस समय उस कोठी के दूसरे भाग म प्राण-सहारक बातें चल रही थी।

घर आने पर नगेन्द्र ने कुन्द से भेंट नही की थी। कुन्द अपने शयनागार म सारी रात रोती रही थी। कुन्द पछतावा करने लगी कि क्यो मैंने स्वामी के दशन की लालसा की ? सोचा, 'अब किस सुख की आशा से प्राण रखू ?'

सारी रात जगने और रोने के पश्चात सवेरे कुन्द को नीद आ गई। कुन्द ने निद्रा मे भयानक स्वप्न देखा। चार वष पूव पिता के मरन के समय, जिस ज्योतिमयी मूर्ति को अपनी माता का रूप धारण किए देखा था, वही उस समय उसके निकट खडी थी। उस समय वह चन्द्र-मण्डल-मध्य वर्तिनी नही थी, बल्कि बादल से धीरे-धीरे नीचे उतर रही थी। उसके चारो ओर अन्धकार था। अन्धकार मे एक मनुष्य मूर्ति थी। उसके दात बिजली जैसे चमक रहे थे। कुन्द ने भयभीत होकर देखा कि वह हसता हुआ चेहरा हीरा का था और माता की काति गम्भीर थी। माता ने कहा, 'कुन्द! उस समय तूने मेरी बात नही सुनी। मेरे साथ नहीं चली। अब तू बहुत दुख भोग चुकी है ?'

कुन्द रोने लगी। उसके नेत्रो से आसू बहने लगे।

माता बोली मैंने तुझसे कहा था कि मैं एक बार फिर आऊगी। इसीलिए आज आई हू। यदि तेरी सुख से तृप्ति हो गई हो तो तू मेरे साथ चल।'

कुन्द रोकर बोली, 'मा मुझे साथ ले चलो। मैं अब यहा नहीं रह सकती। मैं यहा नहीं रहना चाहती।'

माता प्रसन्न होकर बोली, 'तब चलो। मैं तुम्हे लेने के लिए ही

आई हू इस समय ।'

यह कहकर तेजोमयी लुप्त हो गई । जाग्रत होने पर कुद न प्रभु से भिक्षा मागी 'प्रभु मेरा स्वप्न सफल हो ।

प्रात काल हीरा कुद के पास आई । उसने देखा वह र. रही थी ।

कमलमणि के आने पर हीरा कुद के सामने विनीत हो गई । नगेन्द्र के आने का समाचार पाकर हीरा कुन्द की बहुत अधिक आनन्दकारिणी बन गई थी । कुद हीरा के कपट को न समझ सकी । कुद ने हीरा को पहिले ही जैसी विश्वासिनी समझा ।

हीरा ने पूछा, तुम रोती क्या हो ?

कुद कुछ बोली नही । वह हीरा की ओर दखती भर रही । कुद की आखें सूजी हुई थी ।

'यह क्या ? क्या सारी रात रोती रही हो ? क्या बाबू यहा नही आए ?'

वह फिर भी मौन रही । फिर बड वग स रोन लगी । हीरा न मुह मलिन कर उससे पूछा, तुमस क्या बातचीत की ? तुम्हे मुझस स्पष्ट बताना चाहिए ।

कोई बात नही की । कुन्द न उत्तर दिया ।

हीरा विस्मय से बोली 'यह कैसी बात ? इतन दिन बाद भेंट हुई और फिर भी नही बाते !'

मुझसे भेंट ही नही हुई ।' यह कहकर कुद फिर रो पडी ।

हीरा बहुत प्रसन्न हुई । वह हसकर बोली, इस पर रोना क्या ? जरा भेट होन म दर होन से तुम इतनी क्यो रोती हो ?'

बडा दु ख है । और दु ख वह कह न सकी ।

हीरा बोली 'मेरी तरह यदि तुम्हे सहना पडे तो तुम आत्महत्या कर लो ।

'आत्महत्या ! इस शब्द ने कुन्दनन्दिनी के कानो पर गहरी चोट की । वह कापकर उठ बैठी । रात म उसन कई बार आत्महत्या की बात अपन मन म सोची थी ।

हीरा बोली, तुमस अपन दु ख की बात कहती हू, सुनो । मैं भी

एक आदमी का प्राणो से अधिक चाहती थी। वह मेरा पति नही, मैंने पाप किया था।'

ये बातें कुन्द ने नही सुनीं। उसके कानो मे एक ही शब्द गूजता रहा था। कोई उसके कानो म कह रहा था, 'क्या तू आत्मघातिनी हो सकेगी? यह कष्ट सहन करना अच्छा ह या मरना?'

हीरा बोली, 'वह मेरा पति नही, परन्तु मैं उसे लाख पतियो से भी अधिक प्रेम करती थी। मैं जानती थी कि वह मुझसे प्रेम नही करता और एक पापिष्ठा से प्रेम करता है। यह कहकर हीरा ने नीची दृष्टि से कुन्द की ओर देखा। फिर बोली 'मैं यह जानकर उसकी ओर बढा, परतु एक दिन हम दोनो दुर्बुद्धि हुए। इस प्रकार हीरा ने सक्षेप म कुन्द के सामने अपनी व्यथा स्पष्ट की। उसने किसी का नाम नही, बताया। अन्त म बोली, 'फिर पूछो मैंने क्या किया?'

कुन्द ने पूछा, 'क्या किया?'

'मैं चाण्डाल कविराज के यहा गई। उसके पास ऐसे विष है, जिनके खाते ही आदमी मर जाता है।'

'फिर?'

'मैंने मरने के लिए विष खरीदा परन्तु मै किसी के लिए प्राण क्या दू? मैंने विष को डिबिया म बन्द करके रख लिया।'

यह कहकर हीरा ने वह डिबिया कुन्द के सामने रखकर कहा, 'यही है वह डिबिया।'

कुन्द डिबिया को देखने लगी। नगेन्द्र के महल मे मगलजनक शख की ध्वनि हुई। कुन्दनन्दिनी ने उसी समय डिबिया से विष की पुडिया निकाली।

हीरा ने जाकर शख ध्वनि का कारण देखा। एक बडे कमरे के अन्दर घर की सभी स्त्रिया थी। वे किसी को घेरे हुए थी।

हीरा ने स्त्रियो के बीच उचक कर देखा। देखकर वह विस्मय से पागल हो उठी। उसने देखा कि सूर्यमुखी फर्श पर बैठी थी। कौशल्यादि उनके बालो को सवार रही थीं। उनका शरीर पोंछ रही थी। कोई उन्हें जेवर पहिना रही थी। सूर्यमुखी सबसे मीठी-मीठी बातें कर रही

थी। उनके गालों पर से स्नेह के आसू ढुलक रहे थे।

सूयमुखी तो मर गई थी। वह फिर घर म कैसे आ गई ? यह देख कर विश्वास नही हुआ। हीरा ने अस्फुट स्वर म कहा, 'यह कौन है ?'

आवाज कौशल्या के कानो मे पहुची। कौशल्या बोली, 'क्या पहिचानती भी नही ? मेरे घर की लक्ष्मी और तुम्हारी यम।' अब तक वह हीरा के डर से चोर की तरह रहती थी।

सिर आदि गुथ जाने पर सूयमुखी ने कमल के कान मे कहा, 'चलो अब कुन्द को देख आए। उसने मेरा कोई दोष नही किया है और उस पर मेरा क्रोध भी नही है। वह अब मेरी छोटी बहिन है।'

कमल और सूयमुखी कुद से मिलने गई। उन्ह बहुत देर लगी। अन्त म कमलमणि भयभीत कुद की कोठरी से निकली और उसने घबराहट से नगेन्द्र को बुलाया। नगेन्द्र को वह कुन्द की कोठरी म ले गई ? नगेन्द्र की द्वार पर सूयमुखी से भेंट हुई। सूयमुखी रो रही थी। नगेन्द्र ने पूछा, 'क्या हुआ ?'

'सवनाश ! मैंने अब जाना कि मेरे भाग्य म सुख नही है। सुख होता तो यह सवनाश क्यो होता ?

क्या हुआ ?'

'कुन्द को मैंने सयानी किया, वह मेरी छोटी बहिन थी। मैं आई कि बहिन के समान उसे प्यार करूगी, परन्तु सब पर धूल पड गई। कुन्द ने जहर खा लिया।'

'वह कसे ?'

'तुम उसके पास रहो, मैं डाक्टर को बुलाती हू।

यह कहकर सूयमुखी बाहर निकली और नगेन्द्र अकेले कुन्दनन्दिनी के पास गए।

उन्होंने देखा कुन्दनन्दिनी के चेहरे पर कालिमा छा गई थी। उसका बदन शिथिल पड गया था।

नगेन्द्र को समीप खडे देखकर कुन्द टूटी लता के समान उनके परो पर गिर पडी। नगेन्द्र गद्‌गद्‌ स्वर म बोले, 'यह क्या कुन्द ! तुम किस दोष से मुझे छोडकर जा रही हो ?' कुन्द नगेन्द्र के सामने नही बोलती

थी। आज उसने कहा 'तुमने किस दोष से मेरा त्याग किया था ?'

नगेन्द्र के पास कोई उत्तर नहीं था। वह सिर झुकाए खड़े रहे।

कुन्दनन्दिनी पास बैठकर फिर बोली, 'कल यदि तुम इसी प्रकार कुंद कहकर बुलाते, यदि एक बार भी मेरे पास आते, तो मैं न मरती। क्या मैं मरना चाहती थी ?'

नगेन्द्र अपने घुटने पर सिर रखकर मौन बैठे रहे।

कुंद फिर बोली, 'तुम इस तरह चुप न हो। यदि मैं तुम्हारे हंसते हुए चेहरे को देखकर न मर सकी, तो मेरे मन में सुख न होगा।

नगेन्द्र कातर वाणी में बोले, 'तुमने ऐसा काम क्यों किया ? तुमने एक बार मुझे बुलवाया क्यों नहीं ?'

कुंद दिव्य हंसी हंसकर बोली, 'ऐसा न सोचना। मैंने जो कुछ कहा, वह मन के आवेग में कहा है। तुम्हारे आने के पूर्व ही मैंने स्थिर कर लिया था कि तुम्हें देखकर मरूंगी। यदि दीदी कभी लौटकर आईं, तो मैं तुम्हें उनको सौंपकर मरूंगी। अब उनके सुख की राह में कांटा बनकर न रहूंगी। मैंने मरने का ही निश्चय किया था, फिर भी तुम्हें देखकर मेरी मरने की इच्छा नहीं होती।

नगेन्द्र कोई उत्तर न दे सके। आज वह कुंद के सामने निरुत्तर थे।

कुंद एक क्षण चुप रही। उसकी बात करने की शक्ति लुप्त हो रही थी। मृत्यु ने उस पर अधिकार कर लिया था।

नगेन्द्र कुंद के चेहरे पर स्नेह की प्रसन्नता देख रहे थे। उसके मुंह पर जो हंसी उस समय दिखाई दे रही थी वह नगेन्द्र के हृदय में समा रही थी।

कुंद कुछ देर बाद बोली, मैं तुम्हें देवता समझती थी। साहस के साथ कभी मुंह खोलकर मैंने बातें नहीं की। मेरा शौक नहीं मिटा, मेरा मुंह सूख रहा है जुबान ऐंठ रही है।' यह कहकर कुंद नगेन्द्र की जांघ पर सिर रखकर आंखें मूंदकर चुप हो गई।

डाक्टर आया। देखकर दवा नहीं दी। अब भरोसा नहीं कहकर मुंह लटका लिया।

कुंद ने सूर्यमुखी और कमलमणि को देखना चाहा। कुंद ने दोनों

न देरा की धूलि ली । वे दाना उच्च स्वर म रो पड़ी ।

न्दनन्दिनी न स्वामी के पर, म मुह छिपा लिया । उसे चुप देख दानों फिर रो उठी । कुन्द फिर कुछ न बोली । कुसुम मुर्झा गया ।

मयमुखी सौत की ओर देखकर बोली, 'भाग्यवती ! तुम्हार जैसा भाग्य मरा भी हा । मैं भी इसी प्रकार स्वामी क चरणा म माथा रख कर प्राण-त्यागू ।

यह कह सूयमुखी रोते हुए पति का हाथ पकडकर दूसरी जगह ले गई । बाद प कुन्द का नदी म विसजन किया ।

× × ×

कुन्दनन्दिनी की मृत्यु के बाद सभी न जानना चाहा कि कुन्दनन्दिनी ने जहर कहा पाया ? सबका सन्देह हीरा पर हुआ । हीरा को वहा न देख नगेन्द्र ने उसे बुलवाया, परन्तु हीरा से भेंट नही हुई । कुन्दनन्दिनी की मृत्यु के समय ही हीरा लापता हो गई थी ।

हीरा को फिर किसी ने वहा नही देखा । गोविन्दपुर से हीरा का नाम लुप्त हो गया । एक वष पश्चात वह एक बार देवेन्द्र को मिली थी ।

देवेन्द्र का बोया विष-वक्ष फला । वह बहुत बुरे रोग से ग्रस्त हुए । शराब न छोडने के कारण रोग असाध्य हो गया । देवेन्द्र मृत्यु शय्या पर पडे थे । कुन्दनन्दिनी की मत्यु के एक वष पश्चात देवेन्द्र का मत्यु काल आ गया । मरने से दो चार दिन पूव उनके द्वार पर बडा शोर हुआ । देवन्द्र न पूछा, 'यह सब क्या है ?'

नौकर बोला 'एक पगली आपको देखा चाहती है ।

देवन्द्र बोले उसे आने दो ।

पगली घर म आई । देवेन्द्र न देखा, वह बहुत ही दीन स्त्री था । उसके उन्माद का लक्षण समझ म न आया । वह गरीब भिखारणी थी । आयु अधिक नही थी उसकी, परन्तु बहुत बुरी दशा थी ।

भिखारिणी देवेन्द्र को तीव्र दृष्टि से देखने लगी । देवेन्द्र समझ कि वह कोई पगली थी ।

पगली बोली, मुझे पहिचानते नही ? मैं हीरा हू ।

देवेन्द्र ने पहिचाना। वह चौंक कर बोले, तुम्हारी यह दशा किसने की हीरा ?'

हीरा आठ काटती हुई देवेन्द्र को मारने दौड़ी, परन्तु फिर स्थिर होकर बोली 'मुझसे पूछते हो कि किसने मेरी यह दुर्दशा की ? मेरी यह दुर्दशा तुमने की। अब पहिचानते भी नहीं। एक दिन, इसी घर में मेरे पैर पकड़कर तुमने कुछ कहा था।

फिर तुमने मुझे लात मारकर यहां से निकाल दिया था। मैं उसी दिन पागल हो गई थी। मैं विष खाने चली थी परन्तु सोचा कि वह विष तुम्हें या तुम्हारी कुन्द को खिलाऊंगी। अन्त में तुम्हारी कुन्द को विष खिलाकर मैंने अपने मन को शान्त किया। उसकी मृत्यु देखकर मेरा रोग बढ़ गया। मैं देश छोड़ गई। तब से भीख मांगकर खाती हूं। जब अच्छी रहती हूं तो भीख मांगती हूं, जब रोग बढ़ता है तब पेड़ के नीचे पड़ी रहती हूं। इस समय तुम्हारी मृत्यु समीप देखकर प्रसन्न होकर, तुम्हें देखने आई हूं। मैं तुम्हें आशीर्वाद देती हूं कि नरक में भी तुम्हें स्थान न मिले।

यह कहकर वह बहुत जोर से हंसी। देवेन्द्र डरकर शय्या पर दूसरी ओर को फिर गए। वह नाचती हुई घर से बाहर निकल गई।

हीरा कुछ देर बाग में नाचती रही। वह फिर लौटकर देवेन्द्र के पास आई।

देवेन्द्र रो रहे थे। हीरा उनकी गत देखकर हंस पड़ी। वह बोली, 'पगले ! अब क्यों रोता है ? मेरी तरह हंस तू भी। जैसे मैं अपना सर्वनाश करके हंस रही हूं, वैसे ही तू अपनी प्रेमिका कुन्दनन्दिनी का सर्वनाश कराकर हंस।

देवेन्द्र ने क्रोध नहीं किया। वह क्षीण वाणी में बोले, 'हीरा ! कुन्द ने प्राण तूने नहीं नगेन्द्र के लिए। फिर भी कुन्द ने नगेन्द्र की जंघा पर सिर रखकर प्राण-त्याग किया।'

हीरा बड़े ध्यान से सुन रही थी।

देवेन्द्र फिर बोले, 'हीरा ! मैं मर रहा हूं, यह सच है परन्तु मेरे भी मरने का कारण तू नहीं है। मैं उसी विष-वृक्ष का फल खाकर मर

रहा हूं जिसे मैंने स्वयं बोया था, परन्तु तेरी यह दशा मेरे कारण हुई। मैंने तेरे प्राण लिए हैं। मैं उतना ही बड़ा पापी हूं जितना नगेन्द्र।

यदि तू सचमुच मुझे प्रेम करती है तो क्या तू मुझे अपनी जांघ पर सिर रखकर मरने देगी ?'

हीरा चुपचाप देवेन्द्र के पलग पर जा बैठी। उसने देवेन्द्र का सिर अपनी जांघ पर रखकर उसके नेत्रों में झांका।

देवेन्द्र का हृदय अह्लाद से भर उठा, परन्तु उसे संभालने की शक्ति अब उसमें नहीं रही थी। उसका श्वास उखड़ गया और प्राणान्त हो गया।

हीरा एक क्षण देवेन्द्र के शव को अपनी जांघ पर टिकाए बैठी मुस्कराती रही। फिर उसने अपने फटे चिथड़े की एक गांठ खोली और उसमें से कुछ निकालकर अपने मुंह में रख लिया।

कुछ देर पश्चात देवेन्द्र के नौकरों ने अन्दर जाकर देखा तो पलंग पर दो शव पड़े थे, एक देवेन्द्र का और दूसरा हीरा का।

●●●